उपासना विशेषांक
अजय कुमार उत्तम
अजय कुमार उत्तम
जनवरी १९९१
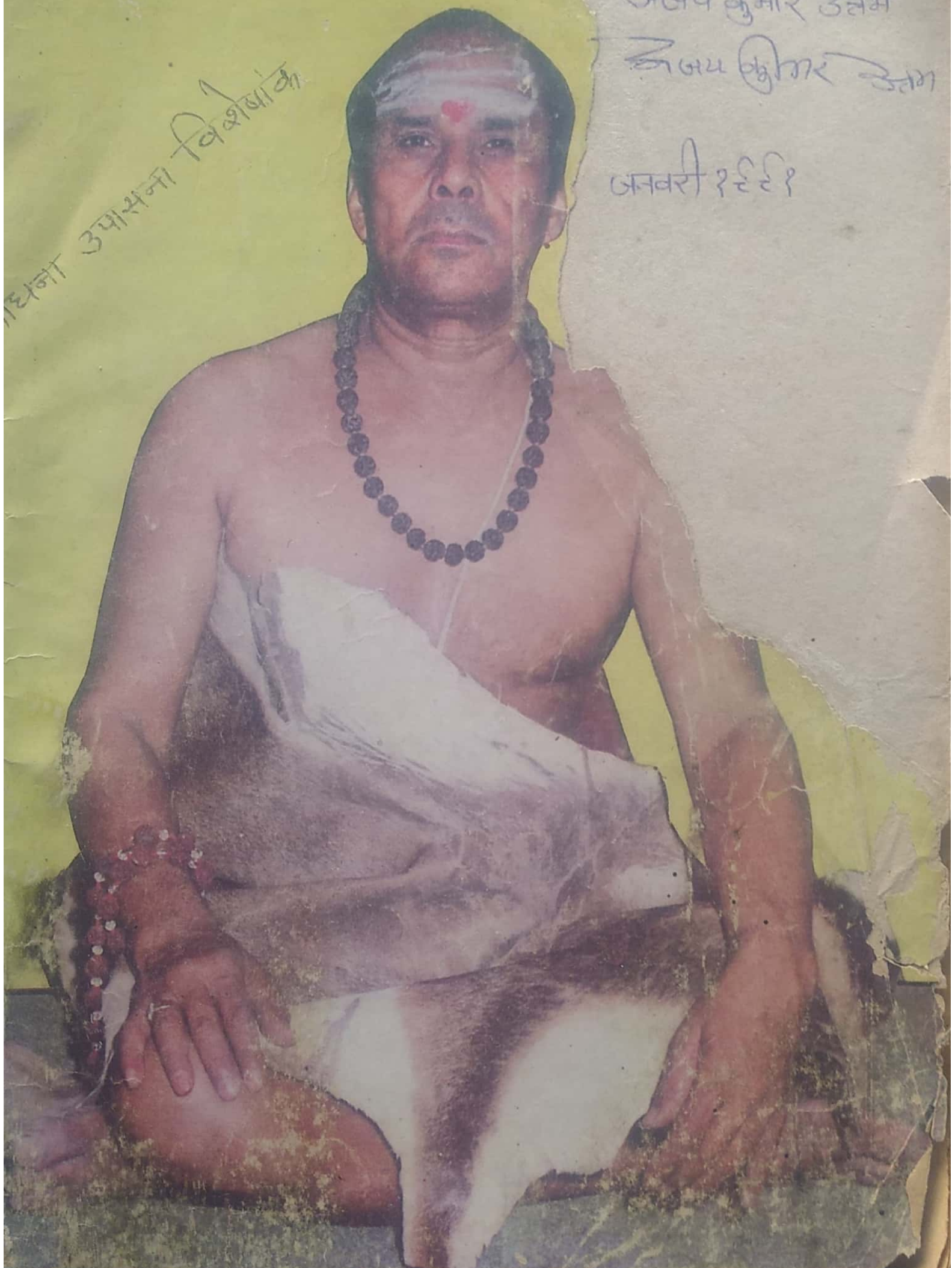
छूती और अचरज भरी
में डुबकियां लगाती हुई

न दुर्लभ कैसेट

घर द्वार का महोत्सव हैं

बिजली सी दौड़ जाती है और जीवन हो जाता है रंगीन,
सुहागिन। मन, प्राण और जीवन में अन्दर उतरने की दुर्लभ

तुम भी खो जाओ

में ही काबा है, काशी है और हजार-हजार तीर्थ है, जिसमें डुबकी लगा कर
पर सभी साधनाएं स्वतः हाथ जोड़े खड़ी रहती हैं। एक आश्चर्यजनक कैसेट।

ह विधि करूं उपासना

समझाया है गुरुदेव ने, हम नित्य थोड़े बहुत रूप से पूजा पाठ तो करते हैं, माला फेरते हैं या कुछ न कुछ करते हैं, पर उसका सिस्टम, उसका सही तरीका हमें ज्ञात नहीं है, और यदि यह कुंजी मिल जाती है, तो हमें मिल जाता है सफलता का रहस्य.......... और यही रहस्य इस कैसेट में सजोया है आपके लिए गुरुदेव ने।

(होली के अवसर पर छूट के साथ)

प्रत्येक कैसेट का मूल्य मात्र - २१)रु०

नोट—अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, केवल हमें कैसेट का नाम लिख कर भेज दें।

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)

वर्ष–११

अंक–१

जनवरी-१९९१

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ नवे नवे भवतु जायमानः वर्षतु श्रियै सुख त्व पूर्ण त्वं दीर्घत्व एहि त्वे श्व प्रियः ॥

नया वर्ष हम सब के लिए मंगलमय हो. श्रेय और प्रेय से युक्त हो, इस वर्ष हमारी सारी योजनाएं सिद्ध और सफल हों, घर में सुख शान्ति हो, पूर्णता हो, परिवार के सभी सदस्य दीर्घायु हों, और ज्ञान भक्ति और श्रद्धा के प्रति प्रगाढ़ विश्वास जाग्रत हो।

आशीर्वचन

जीवन का मूल उत्स, लक्ष्य और धैर्य
जीवित रहने में ही नहीं है,
अपितु पूर्व जीवन की टूटी हुई कड़ी से अपने आप को जोड़ते हुए
इस मल-मूत्र भरी जिन्दगी से परे हट कर
कुण्डलिनी जागरण, ध्यान, धारणा और समाधि
को अपने साथ लेते हुए
जीवन को पूर्णता प्रदान करना ही जीवन का मर्म है
और इस लक्ष्य की प्राप्ति में
केवल मात्र गुरुदेव ही सहायक होते हैं
दोनों बाहें फैलाये १९९१ वर्ष के इस भोर में
मैं आपको अपने हृदय से लगाने के लिए तैयार हूं
और **"सिद्धाश्रम साधक परिवार"** के राजपथ पर तुम्हारे कदम बढ़ाते हुए
सिद्धाश्रम तक पहुंचाने के लिए वचनबद्ध हूं
और तुम्हें इस वर्ष **"शरीरं साधयति वा पातयति"**
का निश्चय करते हुए मेरे साथ हर क्षण निरन्तर आगे बढ़ना है
और मैं ऐसा ही आशीर्वाद आप सब आत्मीय पुत्र-पुत्रियों को
दे रहा हूं।

—**गुरुदेव**

नववर्ष–सौगात

लगभग तीन हजार वर्ष पुरानी हस्त लिखित पुस्तक नेपाल के संग्रहालय से हमें प्राप्त हुई है जो कि अपने आप में अद्वितीय है और इसमें छोटे-छोटे नुस्खे और प्रयोग ऐसे दिये हुए हैं जो कम मूल्य के हैं, मगर आज के वैज्ञानिक युग में भी अचूक फलदायक हैं, पुस्तक का नाम **'हरी किताब'** है, और इसके लेखक हैं, **'शमशेर बहादुर राणा'**, जो नेपाल के अद्वितीय तांत्रिक, योगी, सन्यासी और सिद्ध पुरुष थे ।

समय-समय पर हम इस पुस्तक में से कुछ नुस्खे छांट कर पत्रिका पाठकों को अनमोल मोतियों की तरह भेंट करेंगे, इस वैज्ञानिक युग में भी ये सामान्य और साधारण से दिखने वाले प्रयोग कितने अचूक और अद्वितीय हैं, आप स्वयं प्रयोग करके देख लीजिए ।

१- कार्य में निश्चित सफलता

यदि आप किसी से मिलने, किसी कार्य की सफलता के लिए, यात्रा के लिए, या जरूरी काम के लिए घर से बाहर जा रहे हैं, तो बाहर जाने से पहले एक **'सिद्धिफल'** घर के बाहर डाल कर उस पर पांव रख कर बाहर निकल जाएं, तो निश्चय ही जिस कार्य के लिए आप जा रहे हैं, वह सफल होगा ही ।

२- बीमारी मिटाने का प्रयोग

यदि घर में बीमारी हो या घर का कोई सदस्य बीमार हो और बीमारी जा ही नहीं रही हो तो मंगलवार के दिन सुबह सूर्योदय के समय पांच **'चिरमी के दाने'** उस रोगी पर घुमा कर घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें तो उसी क्षण से रोगी ठीक होने लग जाता है ।

३- व्यापार बढ़ोत्तरी का प्रयोग

यदि दुकान नहीं चल रही हो या व्यापार में घाटा हो रहा हो अथवा व्यापार में बाधाएं आ रही हों तो दो **'गोमती चक्र'** लाल कपड़े में बांध कर दुकान की चौखट पर लटका दिये जांय, तो उसी दिन से व्यापार में वृद्धि होने लगती है और आश्चर्यजनक सफलता मिलने लगती है ।

४- धन लाभ

इस पुस्तक में आर्थिक धन लाभ प्राप्त करने, आर्थिक उन्नति, अथवा आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयोग दिया है, यदि शनिवार के दिन एक **'बिल्ली की नाल'** ले कर मन में लक्ष्मी के आगमन की प्रार्थना करते हुए उसे आग में डाल दिया जाय तो निश्चय ही धन प्राप्ति के अवसर बढ़ जाते हैं और आकस्मिक धन प्राप्ति की संभावनाएं बहुत अधिक हो जाती हैं ।

५- विवाह प्रयोग

यदि लड़के का या लड़की का विवाह नहीं हो रहा हो अथवा विवाह में बाधाएं आ रही हों तो गुरुवार के दिन पांच **'वीर बहूटी'** ले कर अपने विवाह की प्रार्थना

करते हुए उसे ठीक दोपहर को उत्तर दिशा की ओर फेंक दें तो जल्दी ही विवाह कार्य सम्पन्न हो जाता है और मनोनुकूल स्थान पर लड़के या लड़की का विवाह हो जाता है।

६- घर की कलह मिटाने का प्रयोग

यदि घर में कलह हो, पति-पत्नी में मतभेद हो, या घर में सुख शान्ति नहीं हो, तो एक **'सीपी'** ले कर रविवार के दिन उसे पानी में फेंक दें या नदी अथवा तालाब में यह कहते हुए बहा दें कि मेरे घर में सुख शान्ति बनी रहे, तो उसी दिन से घर की कलह मिट जाती है और सुख शान्ति बढ़ जाती है।

७- शत्रु पर विजय प्राप्त करने का प्रयोग

यदि शत्रु बढ़ गये हों और शत्रु परेशान कर रहे हों, या उनके द्वारा आक्रमण का खतरा हो, अथवा शत्रुओं से भयभीत हों तो एक **'तांत्रोक्त फल'** ले कर रविवार की रात को शत्रुओं का नाम ले कर, आग में जला दें तो उसी दिन से शत्रु शान्त हो जाते हैं और किसी प्रकार की शत्रु बाधा नहीं रहती।

८- बच्चों के जीवन में दुर्घटना, एक्सीडेन्ट टालने का प्रयोग

न मालूम कब किस समय बच्चे के साथ दुर्घटना हो जाय, एक्सीडेन्ट हो जाय, बीमार हो जाय या परेशानी पैदा हो जाय इसके लिए पहले से ही इसका उपाय कर देना उचित रहता है, **'मधुरूपेण एकमुखी रुद्राक्ष'** ले कर उसे शिवलिंग पर रख कर अपने पुत्र-पुत्री या संबंधित बालक का नाम ले कर उसके जीवन के लिए शुभकामनाएं और दीर्घायु की प्रार्थना करते हुए काले धागे में वह रुद्राक्ष पिरो कर बालक के गले में या कमर में बांध दिया जाय तो इस प्रकार के सारे खतरे टल जाते हैं और इससे संबंधित किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहती।

९- भाग्योदय प्रयोग

यदि हर कार्य में बाधाएं आ रही हों किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिल रही हो, और पग-पग पर अड़चनें आ रही हों तो **'बजरंग विग्रह'** ले कर मंगलवार के दिन अपने ऊपर घुमा कर किसी दान लेने वाले व्यक्ति को कुछ धनराशि के साथ वह बजरंग विग्रह उसे दे दिया जाय तो खुद से संबंधित दुर्भाग्य हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है।

१०- स्वप्न में किसी प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयोग

मन में किसी प्रकार का प्रश्न हो और उसका उत्तर या हल नहीं मिल रहा हो तो वह प्रश्न कागज पर लिख कर उसके साथ एक **'हकीक पत्थर'** रख कर पुड़िया बना दें और रात को सोते समय अपने सिरहाने रख दें तो स्वप्न में उस प्रश्न का प्रामाणिक उत्तर मिल जाता है। ★

सुमंगलकारक, सर्वकामफलप्रद, सर्वविघ्नहर्ता

महागणपति साधना

* गणपति विघ्नहर्ता व ऋद्धि सिद्धि प्रदाता हैं
* गणपति सभी देवों में प्रथम पूज्य हैं
* सब प्रकार के मंगल कार्यों में गणपति पूजन आवश्यक है
* शिव और शक्ति की साधना गणेश साधना है
* सरस्वती और लक्ष्मी दोनों की सिद्धि गणपति साधना से ही संभव है

आइये, सभी साधक गणपति का वंदन कर इस साधना को नित्य पूजा का अंग बनाएं

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम् ।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे ।।
ओंकारमाद्यं प्रवदन्तिसंतो वाचः श्रुतीनामपि यं गृणन्ति ।
गजाननं देवगणानताङ्घ्रिं भजेऽहमर्धेन्दुकृतावतंसम् ।।

"जो ज्ञान तथा आनन्द के स्वरूप हैं, निर्मल स्फटिक तुल्य जिनकी आकृति है, जो समस्त विद्याओं के परम आधार हैं, उन हयग्रीव गणेश की मैं उपासना करता हूं, जो आदि ओंकार हैं, वेद की ऋचाएं भी जिनकी स्तुति करती हैं, जिनके सिर पर अर्द्ध चन्द्र शोभायमान है, समस्त देवता जिनके चरणों पर नतमस्तक हैं, उन श्री गणेश की मैं वन्दना करता हूं ।"

श्री गणेश आदि स्वरूप, पूर्ण कल्याणकारी, देवताओं के भी देवता माने गये हैं, जिनकी उपासना-पूजा का उल्लेख वेदों में भी प्राप्त होता है, सभी प्रकार के पूजनों में प्रथम पूजन का अधिकार गणपति का ही माना गया है, इसके पीछे ठोस शास्त्रीय आधार है, किसी भी कार्य को पूर्ण रूप से सिद्ध करने के लिए समुचित प्रयत्न करना पड़ता है, लेकिन कई बार सभी प्रकार के प्रयत्नों को

पराकाष्ठा होने पर भी ऐन मौके पर कोई न कोई बाधा आ जाती है, इस प्रकार की बाधा को हटाने के लिए, जिससे कार्य निर्विघ्न रूप से पूर्ण हो जाय, और जैसे-तैसे पूरा न हो कर जिस सफलता के साथ कार्य पूरा करने की इच्छा है उसी रूप में कार्य पूरा हो, इसके लिए ही गणपति पूजन विधान निर्धारित किया गया है।

गणेश पूजा ही क्यों ?

प्रतिभा और ज्ञान की भी एक सीमा अवश्य होती है, व्यक्ति अपने प्रयत्नों से किसी भी कार्य को श्रेष्ठतम रूप से पूर्ण करते हुए उज्ज्वल पक्ष की ओर विचार करता है, लेकिन उसकी बुद्धि एक सीमा के आगे नहीं दौड़ पाती है, बाधाएं उसकी बुद्धि एवं कार्य के विकास को रोक देती है, और यही मूल कारण है कि हमारे शास्त्रों में पूजा, साधना उपासना को विशेष महत्व दिया गया।

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और पूर्णता ब्रह्मा, विष्णु और महेश द्वारा सम्पादित की जाती है, लेकिन सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही यह व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहे, और विघ्न न आएं–यह भी गणेश के ही जिम्मे है, विघ्न-कर्ता और विघ्नहर्ता दोनों ही गणेश ही हैं, आसुरी प्रकृति के अभक्तों के लिए गणेश विघ्नकर्ता हैं, तो उनकी पूजा-उपासना करने वाले भक्तों के लिए विघ्नहर्ता और ऋद्धि-सिद्धि के प्रदाता हैं, इसी लिए श्री गणेश को "सर्व-विघ्नैकहरण, सर्वकामफलप्रद, अनन्तानन्तसुखद और सुमंगलमंगल" **कहा गया है।**

सभी प्रकार के देवता विभिन्न शक्तियों से सम्पन्न हैं, लेकिन विशिष्ट कार्य के लिए विशिष्ट शक्ति-सम्पन्न

विनायकः कर्मविघ्नसिद्ध्यर्थं विनियोजितः।
गणानामाधिपत्ये च रुद्रेण ब्रह्मणा तथा॥

अर्थात् विनायक (गणेश) को विघ्नकारक कहा गया है, तब यदि उन गणेश की पूजा-साधना न की जाय तो विघ्न कैसे हट सकते हैं ?

देवताओं का स्मरण, पूजन, साधना सम्पन्न करनी पड़ती है, इसीलिए सभी पूजनों में किसी भी कार्य को निर्विघ्न, पूर्ण फलयुक्त, मंगलमय रूप से पूर्ण करने हेतु श्री गणपति का पूजन किया जाता है।

॥ गं बीजं शक्तिरोंकारः सर्वकामार्थसिद्धये ॥

गणपति का बीज मन्त्र "गं" शक्ति का ओंकार शब्द है, और यह सब कामों को सिद्ध करने में समर्थ है।

गणेश का स्वरूप शक्ति और शिवतत्व का साकार स्वरूप है, और इन दोनों तत्वों का सुखद स्वरूप ही किसी कार्य में पूर्णता ला सकता है, गणेश शब्द की व्याख्या अत्यन्त महत्वपूर्ण है, गणेश का "ग" मन के द्वारा, बुद्धि के द्वारा ग्रहण करने योग्य, वर्णन करने योग्य, सम्पूर्ण भौतिक जगत को स्पष्ट करता है, और "ण" मन, बुद्धि और वाणी से परे, ब्रह्म विद्या स्वरूप-परमात्मा को स्पष्ट करता है, और इन दोनों के "ईश" अर्थात् स्वामी गणेश कहे गये हैं।

श्री गणेश के द्वादश नाम

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

यह श्लोक गणेश-पूजन और उनकी साधना-उपासना के महत्व को विशेष रूप से स्पष्ट करता है, इसका तात्पर्य यह है, कि जो व्यक्ति विद्या प्रारम्भ करते समय, विवाह के समय, नगर में अथवा नये भवन में प्रवेश करते समय, यात्रा में कहीं बाहर जाते समय, संग्राम अर्थात् शत्रु और

विपत्ति के समय, यदि श्री गणेश जी के इन बारह नामों का स्मरण करता है, तो उसकी उद्देश्य की पूर्ति में अथवा कार्य की पूर्णता में किसी प्रकार का विघ्न नहीं आता, गणेश जी के ये बारह नाम—१-सुमुख, २-एकदन्त, ३-कपिल, ४-गजकर्ण, ५-लम्बोदर, ६-विकट, ७-विघ्ननाशक, ८-विनायक, ९-धूम्रकेतु, १०-गणाध्यक्ष, ११-भालचन्द्र, और १२-गजानन हैं।

इनमें से प्रत्येक नाम का एक विशेष अर्थ है और विशेष भाव है, संक्षिप्त में यही कहना उचित है, कि साधक को अपने पूजा कार्य में गणेश की पूजा एवं इन नामों के जप को एक निश्चित स्थान अवश्य देना चाहिए।

मन्त्र-साधना और तन्त्र-साधना का मार्ग गुरु गम्य माना गया है, जो साधक गुरु-परम्परा से गणपति सपर्या की विद्या प्राप्त करते हैं, उन्हें ही उपासना में प्रवेश का अधिकार है।

तन्त्र शास्त्र के सबसे महान रचयिता भगवान परशुराम माने गये हैं और **"परशुराम कल्पसूत्र"** में जो कि तन्त्र शास्त्र का सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रन्थ है, लिखा है—

देवं सिद्धलक्ष्मी समाश्लिपृष्पार्श्वम्, अर्धेन्दुशेखर-मारक्तवर्णमातुलुगंगदापुण्ड्रेक्षुकार्मु कशूलसुदर्शनशंखं-पाशोत्पलधान्यमंजरी निजदन्तांचलरत्नकलशपरिष्कृतपाण्येकादशकं प्रभिन्नकटमानन्दपूर्णमशेषविघ्न-ध्वंसिनं विघ्नेश्वरं ध्यात्वा।

अर्थात्, महागणपति के बाएं भाग में सिद्ध लक्ष्मी, मणिमय रत्न सिंहासन पर विराजमान हैं, और गणपति का शरीर करोड़ों सूर्यों के समान चमकीला रक्तवर्णीय है, मस्तक पर अर्द्धचन्द्र है, ग्यारह भुजाओं में मातुलुंग, गदा, इक्षु, सुदर्शन, शूल, शंख, पाश, कमल, धान्य, मंजरी, भग्नदन्त, तथा रत्न कलश हैं, ऐसे परमानन्द, पूर्ण, सर्व विघ्न-विध्वंसक महागणपति का ध्यान करना चाहिए।

परशुराम तन्त्र में और अन्य ग्रन्थों में गणपति पूजन का जो विवरण दिया गया है, उसकी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग व्याख्या कर, बाद में रचनाकारों ने महागणपति पूजा के विभिन्न भेद कर दिये, आगे पत्रिका पाठकों हेतु महागणपति पूजन का प्रामाणिक विधान स्पष्ट किया जायेगा।

लोक जीवन में गणपति का स्थान

महागणपति का लोक जीवन में, लोक कथाओं में जो विवरण एवं स्थान है, उतना विवरण किसी अन्य देव शक्ति का नहीं होता, सामान्य बातचीत में किसी कार्य का शुभारम्भ करने को, कार्य का श्री गणेश कहा जाता है,

गणपति को ब्रह्मणस्पति कहा गया है, ब्रह्मण शब्द का अर्थ है– वाक् और वाणी, अतः ब्रह्मणस्पति का तात्पर्य वाक्पति, वाचस्पति, अथवा वाणी का स्वामी, अतः गणपति साधना करने से वाणी एवं विद्या सिद्धि प्राप्त होती है।

तन्त्र ग्रन्थों में भी लिखा है कि सभी मंगल कार्यों में प्रारम्भ में गणेश पूजन किया जाना आवश्यक है, क्योंकि गणेश पूजा से ही विघ्नों की शान्ति एवं सिद्धि प्राप्त होती है।

किसी भी प्रकार के पूजन में यदि गणेश जी की मूर्ति नहीं होती है तो पंडित लोग सुपारी पर मौली बांध कर गणेश की स्थापना करते हैं, दीपावली पर्व हो तो लक्ष्मी के साथ गणेश जी की प्रतिष्ठा निश्चित है, उत्तर-प्रदेश में तो किसी भोज के समय एक मंगल-घट चूल्हे के पास रख दिया जाता है, और कड़ाही का प्रारम्भ गणेश गांठ से किया जाता है, जल से भरे घड़े अथवा मंगल कलश में गणेश की प्रतिष्ठा सभी शुभ कार्यों में सम्पन्न की जाती है, बंगाल में वसन्त पंचमी महोत्सव तथा शिक्षा संस्कार समारोह में "सरस्वती गणेश" की पूजा की जाती है, गणेश चतुर्थी को उत्तर-प्रदेश के अवध क्षेत्र में "बहुला-चौथ" के रूप में सम्पन्न किया जाता है–जिसमें माताएं विधि-विधान सहित गणेश की पूजा करती हैं, महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत में भाद्रपद सुदी चतुर्थी को स्थान-स्थान पर गणेश की प्रतिमा समारोह के साथ प्रतिष्ठित की जाती है और अनन्त चतुर्दशी को गणेश विसर्जन सम्पन्न किया जाता है।

पंजाब अथवा बंगाल, महाराष्ट्र अथवा मध्य-प्रदेश तमिलनाडु अथवा राजस्थान–प्रत्येक प्रदेश के साहित्य में जन जीवन में गणेश के पूजन का विधान है, और यह पूजन का एक अंग ही बन गया है।

शास्त्रोक्त गणपति पूजा विधान

यदि मन में आस्था है, तो कृपा किसी न किसी रूप में हो ही जाती है, लेकिन प्रत्येक पूजा-साधना के कुछ विशेष नियम होते हैं, उनका पालन करने से विशेष फल अवश्य ही प्राप्त होता है।

गणपति के पूजा-विधान में विशेष बात यह है, कि चतुर्थी गणपति का प्रकट दिवस है, इसी कारण प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को **"गणेश-चतुर्थी"** और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को **"विनायक-चतुर्थी"** कहा जाता है।

गणपति मूल रूप से जल तत्व प्रधान देवता हैं, और जल ही जीवन है, इसीलिए अपने जीवन में जल तत्व को

> आठ मूल दोष– आलस्य, कृपणता, दीनता, निद्रा, शिथिलता, अचैतन्यता, पुरुषार्थहीनता और विस्मृति—इन सभी दोषों का निराकरण गणपति पूजा साधना से ही सम्भव है।

तीव्र करने हेतु, पूर्णता प्राप्त करने हेतु गणपति का पूजन विशेष रूप से प्रभावकारी है।

गणपति पूजन में विशेष बात यह है, कि घर में तीन गणपति प्रतिमाएं नहीं होनी चाहिए, और मंगलवार के अतिरिक्त किसी भी अन्य वार को गणपति की स्थापना की जाती है, गृहस्थ व्यक्तियों को आसन पर बैठे हुए गणपति की स्थापना करनी चाहिए, और तन्त्र साधना करने वाले सन्यासियों को, खड़े गणपति की पूजा-साधना करनी चाहिए।

गणपति साधना में, पूजन में, **"गणपति प्रतिमा"**, **"गणपति यन्त्र"**, ताम्र पात्र, मौली, पुष्प, अबीर, गुलाल, नैवेद्य, जल तथा दूर्वा अर्थात् दूब और अक्षत विशेष रूप से आवश्यक हैं, इसके अतिरिक्त सुपारी को भी आवश्यक माना गया है।

पूजा क्रम

सर्वप्रथम साधक अपने स्थान पर स्वच्छ आसन पर बैठ कर आसन की पूजा करें, और सामने गणपति प्रतिमा तथा यन्त्र के लिए साफ लाल आसन बिछाएं, और उस पर गणपति यन्त्र तथा प्रतिमा स्थापित करें, अपने दाएं हाथ में ताम्र पात्र से जल लेकर पूजन का संकल्प करें और जल को भूमि पर छोड़ दें, इसके पश्चात् पात्र से जल लेकर चारों ओर छिड़कें, यन्त्र और प्रतिमा को धोकर आसन पर स्थापित करें, और हाथ में दीपक लेकर यह प्रार्थना करें कि,—"हे देव! आप समस्त विघ्न रूपी वनों का दहन करने में प्रबल हैं, विपत्ति एवं विघ्न के समय विघ्न विजयी रूपी सूर्य के प्रकाश से दसों दिशाएं प्रकाशित कर देते हैं, और समस्त विद्याओं, वैभव के

अधीश्वर हैं, आप स्थान ग्रहण करें ।"

इसके पश्चात् साधक पुष्प, अबीर-गुलाल, अक्षत इत्यादि अर्पित करें और मौली, वस्त्र-स्वरूप चढ़ाएं ।

गणपति पूजन में तुलसी का प्रयोग सर्वथा वर्जित है, दूर्वा अर्थात् दूब विशेष फलप्रदायक मानी गयी है ।

इसके पश्चात् एक कोने में चार सुपारी चावलों की ढेरी पर स्थापित करें, और उनके सामने गणपति को चढ़ाया गया नैवेद्य रखें, ये चार सुपारियां गणपति के चार सेवकों–गणप, गालव, मुद्गल और सुधाकर की प्रतीक हैं, इन्हें गणपति का चढ़ाया हुआ प्रसाद ही चढ़ाएं, अब प्रतिमा के सामने बारह चावल की ढेरियां बनाकर प्रत्येक पर गणपति के बारह स्वरूपों — सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र, गजानन, का ध्यान करते हुए प्रत्येक का पूजन करें ।

गणपति पूजन में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त "गणपति यन्त्र" विशेष आवश्यक है, क्योंकि यह गणपति की शक्तियों का साकार स्वरूप है, इसके पश्चात् नारियल तथा ऋतु फल अर्पित करें, और अपने स्थान खड़े हो कर दोनों हाथों से ताम्र पात्र से जल अर्पित करें, गणपति के बीज मंत्र के संबंध में बहुत अधिक मत-मतांतर हैं, इस संबंध में मूल बीज मंत्र तो केवल "गं" ही है, अतः साधक को "ॐ गं गणपतये नमः" बीज मंत्र की पांच माला का जप उसी स्थान पर बैठकर करना चाहिए ।

इसके पश्चात् प्रदक्षिणा सम्पन्न कर आरती सम्पन्न की जानी चाहिए, गणपति की प्रतिमा का एक बार ही प्रदक्षिणा का शास्त्रोक्त नियम है ।

गणपति की पूजा उपासना चाहे किसी भी विपरीत स्थिति में विधि-विधान सहित सम्पन्न की जाय, तो साधक की कामना-पूर्ति, यश-लाभ, विघ्नों से शान्ति, कष्टों का नाश, अवश्य ही प्राप्त होता है ।

कुण्डलिनी जागरण में भी प्रथम चक्र अर्थात् मूलाधार चक्र को गणेश स्थान कहा गया है, अतः योग और तंत्र में भी सिद्धि तभी प्राप्त हो सकती है, जब गणपति की साधना में सिद्धि प्राप्त हो ।

(पृष्ठ संख्या १० का शेष भाग)

चतुर्थ चरण

तत्काल सब आवाजें, सब क्रियाएं और गति बन्द कर दें, उसी स्थान पर शान्त, निश्चेष्ट होकर स्थिर कर लें, मानों शरीर में कुछ है ही नहीं, अपने आपको व्यवस्थित करने का प्रयास न करें एक शून्यता, शान्ति जो भीतर समा रही है उसे अनुभव करते रहें, सोचना-विचारना बन्द कर दें, शून्य ही तो शक्ति का स्रोत बिन्दु है ।

पंचम चरण

अब अपने भीतर जो शान्ति, मौन, आनन्द प्राप्त हुआ है, उसे प्रकट करने के लिए नाचें-गाएं उत्सव का अनुभव करें, रोम-रोम में आनन्द को बहने दें, अपने आप को नियन्त्रित न करें, बिल्कुल खुला छोड़ दें ।

यदि कहीं पर द्वितीय चरण और तृतीय चरण की सुविधा न हो, तो इसे भातर ही भीतर करते रहें, लेकिन क्रिया यही रखें, यह अभ्यास प्रारम्भ में हो सकता है पीड़ा दे, क्योंकि बन्धन और रुकावट–जो भीतर की शक्ति को रोके हुए हैं, वह जड़ समान हैं, इन बन्धनों ने आपके शरीर को और मन को भी मशीन बना दिया है, लेकिन करते रहें, करते रहें ।

जब ऊर्जा का भीतर प्रवाह जागृत हो जाता है तो नया जन्म होता है, यह ऊर्जा जो नीचे की ओर बह रही है, ऊपर की ओर बहना प्रारम्भ करती है, इसके साथ ही गति अनुभव होती है, और जब यह ऊर्जा ब्रह्मरन्ध्र तक पहुंचती है, तो कुण्डलिनी जागृत होती है, यही तो तुम्हारी शक्ति है, तभी तुम अपने जीवन को गति दे सकते हो ।

दीर्घायु

एवं मानसिक तनावों से पूर्ण मुक्ति हेतु

सक्रिय–ध्यान

ध्यान ही आन्तरिक शक्ति को जगाने की प्रक्रिया है, इस शक्ति को छोड़ कर अन्य शक्ति की तलाश करना व्यर्थ है, जब तक यह शक्ति जागृत नहीं होगी, तब तक व्यक्ति का आत्मविश्वास निर्बल ही रहेगा, इस शक्ति को जागृत कर ही व्यक्ति अपने जीवन के अर्थ को समझ सकता है, अपनी ऊर्जा का, चेतना का विकास कर सकता है।

यदि झरने के वेग को, नदी के प्रवाह को रोक दिया जाय, तो वह किनारे तोड़ देता है, रुका हुआ पानी सड़ जाता है, उसका मूल तत्व ही समाप्त हो जाता है, अपने भीतर की शक्ति का भी रूप ऐसा ही है, यदि शक्ति को जागृत नहीं किया, तो यह आन्तरिक शक्ति पूरे शरीर में जहर बन कर मानसिक विकास में व्याधियां उत्पन्न कर देगी, इसीलिए तो ध्यान आवश्यक है, ऊर्जा के स्रोत का झरना खोल दो, बहती शक्ति के आनन्द से अपने आपको परिपूर्ण बनाओ।

ध्यान के लिए न तो जंगलों में जाने की जरूरत है, न ही तपस्या करने की आवश्यकता है, क्योंकि बन्द किवाड़ तो भीतर के खोलने हैं, यह ध्यान की प्रक्रिया–मन के तनाव, तन के रोग को बाहर करने की, अपने आपको भीतर और बाहर से शुद्ध करने की, कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया है और निश्चय ही यह अत्यन्त सरल है।

इस ध्यान योग के पांच चरण हैं और प्रत्येक चरण केवल दस-दस मिनट का है इस प्रकार केवल एक घण्टा प्रतिदिन व्यतीत कर आप अपने जीवन में चेतना का नया अध्याय खोल देते हैं, एक ऐसे मार्ग की ओर बढ़ते हैं–जिसमें आनन्द है, तेज है, शक्ति है, स्वस्थता है, एकाग्रता है, शान्ति है, सोचने की नई दृष्टि है, तुष्टि है।

यह ध्यान योग प्रातः स्नान कर, ढीले तथा कम वस्त्र पहिन कर करना चाहिए, मन में पूर्ण भावना एकाग्रता तो होनी ही चाहिए, काम चाहे जो भी हो पूरी समग्रता के साथ ही करना चाहिए।

प्रथम चरण

इसमें आंखें बन्द कर अथवा आंखों पर पट्टी बांध कर पूरी शक्ति से तेज गहरे श्वास लेना प्रारम्भ करें, श्वास लेते रहें और छोड़ते रहें, इसमें किसी प्रकार की रुकावट न हो, नाक से श्वास लें, जितनी तेजी से श्वास छोड़ेंगे, उतनी ही तेजी से श्वास भीतर आयेगा और पूरी शक्ति लगाएं केवल श्वास का आना और जाना ही रहे, बाकी सब भूल जांय, धीरे-धीरे एक सहज गति बन जायेगी।

द्वितीय चरण

मन में बन्धन हैं, और आप अपने मन के भावों को रोकते हैं, इसे विमुक्त कर दें, दस मिनट तक रोना, हंसना, चीखना-चिल्लाना प्रारम्भ कर दें, किसी एक को ले कर यह चरण दस मिनट करें, शरीर और मन को इस कार्य में बाधक न बनाएं, आन्तरिक भाव दुःख, आवेग, जिस रूप से भी प्रगट होना चाहते हैं, होने दें, श्वास की प्रक्रिया भी चालू रखें।

तृतीय चरण

इसमें अपने दोनों बाजू ऊपर उठा कर पंजों के बल पर खड़े हो जांय, और उसी स्थान पर एकाग्रता से कूदते हुए, उछलते हुए "हुं" "हुं" "हुं" अन्तर मन से करें, शक्ति का प्रवाह प्रारम्भ होगा, तथा इसको और अधिक तीव्रता से, और अधिक तेजी से करते रहें, शरीर पसीने से लथ-पथ हो जाय तो भी चिन्ता नहीं करनी है, शक्ति का जागरण, स्फुरण हो रहा है, इस कार्य में आनन्द का अनुभव करें।

(शेष पृष्ठ संख्या ९ पर देखें)

साधना

विज्ञान की एक सतत् प्रक्रिया है

जो नये मनुष्य के निर्माण के लिए आवश्यक है

मनुष्य का शरीर केवल मांस-हड्डियों-रक्त से बना हुआ पिण्ड ही नहीं है, उसमें मस्तिष्क तथा इन्द्रियों का जो समावेश है, उसके कारण उसमें सोचने की, अपने जीवन में कुछ प्राप्त करने की, इच्छाएं बनती रहती हैं।

वर्तमान समय में जीवन की जैसी गति है, उसके फलस्वरूप मनुष्य के मन में, शान्ति और स्थिरता समाप्त सी हो गई है, इस कारण हर समय मन में अस्थिरता बनी रहती है और उसकी विचार-शक्ति कई दिशाओं में, कई धाराओं में भटकती रहती है, जीवन में जो सहज, नदी समान प्रवाह होना चाहिए वह नहीं हो पाता, क्योंकि इस शरीर के दो प्रधान भाग –बाह्य भाग और अन्तः-करण में जो तारतम्य होना चाहिए, वह नहीं बनता है, बाह्य शरीर के अर्थात् इन्द्रियों के विपरीत विचारों के कारण अन्तःकरण खण्डित हो जाता है और मनुष्य रोग, शोक, दुःख आदि प्रभावों से घिर जाता है।

मन के दो ही स्वरूप—चेतन मन (कान्शंस) और अन्तर मन (ईनर कान्शंस) ही माने गये हैं, वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने चेतन मन से कार्य करता है, जो दिखता है उसे ही सत्य मानता है और प्रत्येक बात पर विचार कर उसे तर्क की कसौटी पर कसता है, जब तर्क विचार और संशय, जागृत अर्थात् चेतन मन को पूर्ण रूप से प्रभावित कर अपने प्रभाव में ले लेते हैं, तो आन्तरिक मन अर्थात् अचेतन मन निर्मल हो जाता है, जीवन में एकाएक किसी भी प्रकार का संकट आने पर उसका स्नायु तंत्र शरीर का साथ नहीं देता है, क्योंकि उसके चेतन मन को अन्तर मन की प्रधान शक्तियां प्रेम-शक्ति, आत्म-विश्वास प्राप्त नहीं रहता, और यही कारण है, कि आज कल नर्वस ब्रेक डाउन अर्थात् स्नायविक दुर्बलता बार-बार

देखने को मिलती है, स्नायु तंत्र चेतन मन के पूर्ण प्रभाव के कारण इतना अधिक कमजोर हो जाता है, कि मनुष्य हर समय भय ग्रस्त, चिन्ता ग्रस्त एवं परेशान रहता है, उसके सामने बहुत कुछ होते हुए भी उसे प्राप्त नहीं कर पाता, यह सब अस्थिरता के ही तो लक्षण हैं।

अन्तर मन

इसी प्रकार कई जिद्दी लोग अपने अन्तर मन को प्रबल करने के लिए चैतन्य मन को छोड़ देते हैं, अन्तर मन की कामनाओं की पूर्ति के लिए हर समय साधना-उपासना में संलग्न हो जाते हैं और अपने कार्य में विचार-शीलता का तत्व भूल जाते हैं, और जब साधक इस अन्तर मन के विशेष प्रभाव से बाह्य जगत की ओर आते हैं—तो अपने कार्यों को योग, प्राणायाम, देवी-साधना से पूरा होते न देख कर एक उन्मादित स्थिति में आ जाते हैं और यह बड़ा ही कष्टकारक होता है।

ऐसी स्थितियों से बचने के लिए और अपने जीवन को साधना के द्वारा सहज, सरल, उन्नतिकारक स्वरूप देने के लिए यह आवश्यक है, कि साधक के चैतन्य मन और अन्तर मन में एक विशेष सामंजस्य बना रहे, इस हेतु साधक का मानसिक बल अर्थात् संकल्प प्रबल होना अनिवार्य है, चेतन मन और अन्तर मन दोनों ही तीव्र गति वाले तत्व हैं, साधना के द्वारा ही इनकी गति को नियन्त्रित कर एक सहज रूप दिया जा सकता है, जिससे कि साधक अपने निर्णय स्वयं कर सकता है, अपने मार्ग से ज्ञात रहता है, मानसिक दृष्टि से दुर्बलता न रहने से स्थिर चित्त से वह अपनी सभी शक्तियों का उपयोग कर सकता है, प्रत्येक साधक अपने आपमें एक शक्ति पुंज होता है, साधना तो इस शक्ति पुंज में छिपी हुई शक्तियों को ज्वालामान कर इन शक्तियों की दिशा एवं गति को नियन्त्रण करने का कार्य है।

इस विशेष साधना तत्व के चार प्रमुख भाग हैं, और इनमें से प्रत्येक तत्व पर विशेष विचार करना आवश्यक है।

एकाग्रता

साधक के लिए यह आवश्यक है, कि उसके शरीर के सभी अंगों का संचालन उसके वश में रहे, शक्ति-सम्पन्न बनने के लिए यह आवश्यक है कि सबसे पहले सीखें, कि किस प्रकार बिना किसी प्रयोजन के अपने शरीर का अंग संचालन न होने दें, हाथ-पैर हिलाना, उंगलियां चटकाना, सिर खुजलाना, पड़ी हुई चीजों को उठा कर खेलना, कागज पर बिना बात कलम से लाइनें खींचना, ये सब व्यर्थ की क्रियाएं हैं, जिनसे प्राण-शक्ति निर्बल ही होती है, अतः मन को एकाग्र करना सीखना, साधना का प्रथम तत्व है।

विचार, जो मन में बनता है, उसी विचार पर एकाग्र कर देना, अथवा जो कार्य कर रहे हैं, उसी पर अपनी समस्त शक्तियों को केन्द्रित कर लेना ही एकाग्रता की कुंजी है, जो चीज सामने है, उस पर यदि एकाग्र हो सकते हैं, तो जो चीज दूर है, उस पर भी एकाग्रता लाई जा सकती है, इस हेतु कोई भी कार्य करते समय मन में व्यर्थ उठने वाले भावों, विचारों को रोकना आवश्यक है।

साधक का मन घड़ी के पेण्डुलम की तरह हिलता रहता है, इस मन को, अपने विचार और भावनाओं द्वारा नियन्त्रित कर एकाग्रता लानी आवश्यक है, संयत, एकाग्र मन से ही साधक अपना लक्ष्य तथा साधना में पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

इच्छा-शक्ति

प्रत्येक भावना, विचार—साधक के मन, शरीर, कार्य पर अवश्य ही प्रभाव डालते हैं और इन भावनाओं को इच्छा-शक्ति के द्वारा नियन्त्रित किया जा सकता है, जिसकी जैसी भावना होती है, उसे वैसी ही सिद्धि प्राप्त होती है और वह वैसा ही बन जाता है, क्योंकि वह भावना—चाहे अच्छी हो बुरी, अपने आपको बार-बार दोहराते हुए विश्वास के रूप में बदल जाती है और शरीर तथा कार्यों की गति वैसी ही हो जाती है।

जब भावना का इतना अधिक प्रभाव होता है, तो इन भावनाओं में क्यों नहीं अच्छे विचार-तत्व, शक्ति-तत्व भरे जांय, यदि प्रतिदिन, प्रति समय साधक का यही चिन्तन रहे कि मेरी इच्छा-शक्ति श्रेष्ठ है, मैं जो कार्य करना चाहता हूं उसे अवश्य ही सम्पन्न करूंगा, मेरे शरीर और मन पर मेरा पूरा अधिकार है, मेरे स्वभाव में स्थिरता ही रहेगी, ऐसी भावनाएं प्रतिदिन प्रातः और रात्रि को सोते समय साधक को अवश्य ही करनी चाहिए, इस प्रकार बार-बार दोहराने से जो नियन्त्रण प्राप्त होता है, वह इच्छा-शक्ति का प्रबल स्रोत बन जाता है यह साधना का दूसरा चरण है, अपने अन्तर मन में आनन्द, सुख, आरोग्य, उत्साह, श्रद्धा, भक्ति, सामर्थ्य की भावना ही निरन्तर भरनी चाहिए।

कल्पना

कल्पना के बिना जीवन का कोई आधार ही नहीं है, कल्पना ही आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देती है, और जब इस कल्पना-शक्ति को मानसिक परिकल्पना के साथ जोड़ दिया जाता है तो उसका प्रभाव तुरन्त देखने को मिलता है।

अपने कमजोर शरीर को प्रबल बनाने के लिए, उसे श्रेष्ठ बनाने के लिए, यदि प्रतिदिन एकान्त में श्रेष्ठ शरीर, रोग रहित शरीर की कल्पना की जाय, और यह विचार निरन्तर किया जाय, कि मेरा यह रोग दूर हो रहा है, और मैं जिस प्रकार के श्रेष्ठ शरीर की कल्पना कर रहा हूं, वैसा शरीर मुझे प्राप्त होगा, तो निश्चय ही धीरे-धीरे असाध्य से असाध्य रोग भी दूर होने लगता है।

इस मानसिक कल्पना में अपने मन को आत्मिक उन्नति की कल्पनाओं से भरते रहना चाहिए, और जिस प्रकार की कल्पना करते हैं, उसके प्रत्येक तत्व पर बारीकी से एकाग्रता पर विचार अवश्य करें, यदि प्रातः किसी चित्र के सामने जो कि किसी इष्ट का हो सकता है, उस पर अपना ध्यान केन्द्रित करें तो यह मनःशक्ति संजीवन हो कर साधक के स्मरण शक्ति को प्रबल बना देती है और जब उसे इच्छाशक्ति और एकाग्रता का सहयोग मिलता है, तो साधक, साधना सम्पन्न कर पाने में अवश्य समर्थ रहता है।

साधना नियन्त्रण

साधना के ऊपर लिखे तीन चरणों को श्रेष्ठ बनाने हेतु कुछ विशेष समय का महत्व अवश्य है, और ये तीन समय प्रातःकाल की संधि, मध्याह्न काल की संधि और सायंकाल की संधि, विशेष प्रभावशाली हैं, जब रात्रि को सो कर उठने के बाद शौच एवं स्नान के पश्चात् मस्तिष्क के सभी तन्तु, सभी नाड़ी केन्द्र अत्यन्त ग्रहणशील अवस्था में होते हैं और उस समय जिस प्रकार के विचारों को अपने अन्दर प्रवाहित किया जाय, वे विचार प्रबल होकर जीवन को जाग्रत कर देते हैं, इसीलिए इन संधि-कालों का विशेष महत्व है, इस संधि काल में एक विशेष लयबद्ध राग वायुमण्डल में व्याप्त रहता है, इसी कारण साधना के अभ्यास के समय शान्त मन से अपने प्रत्येक स्नायु को निर्बल करते हुए, सभी चिन्ताएं छोड़ते हुए, साधना के विचारों को अपने भीतर प्रवाहित करते हुए, कि मैं इस विशेष प्रवाह को ग्रहण कर रहा हूं, मैं स्वयं जीवन-तत्व से परिपूर्ण, चैतन्य स्वरूप हूं तथा मेरा अणु-अणु चैतन्य-मान हो रहा है—तभी साधना में सिद्धि प्राप्त होती है।

इसी प्रकार के विचार रात्रि को सोते समय करने से ही साधक मन, विचार इत्यादि से दृढ़ हो कर अपने जीवन को स्वयं ऐसा मार्गदर्शन दे सकता है, कि शक्ति उसमें पूर्ण रूप से समाहित हो जाती है।

क्या साधना हेतु दीक्षा आवश्यक है ?

दीक्षा का तात्पर्य, मूल स्वरूप क्या है, शिष्य को कब गुरु से दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए, किन नियमों का पालन होना विशेष आवश्यक है, दीक्षा के क्या भेद हैं,—ये प्रश्न निश्चय ही हर साधक के मन में बार-बार मंथन करते हैं, इन्हीं प्रश्नों का पूर्ण विवेचन पूज्य गुरुदेव से प्राप्त अमृत वचनों के आधार पर—

साधक और शिष्य का भेद निश्चय ही गहरा है, साधक के लिए कोई बन्धन नहीं है, वह जो कार्य करता है, एक प्रकार से अंधेरे में हाथ-पांव मारने के समान ही है, क्योंकि उसके पास कोई प्रकाश स्रोत नहीं है, इसलिए शिष्य वही है जो सदाचारी हो, कर्म, मन, वाणी और धन से गुरु-सेवा करने के लिए इच्छुक हो, गुरु की आज्ञा का पालन करने वाला हो, गुरु के सामने अपने धन, विद्या, जाति का अभिमान न करने वाला हो, गुरु-भक्ति में और गुरु-आज्ञा में अपना सब कुछ सौंप देने को हर समय तत्पर रहता हो, वही तो शिष्य है।

दीक्षा क्या है ?

दीक्षा गुरु की कृपा और शिष्य की श्रद्धा का संगम है, गुरु का आत्मदान और शिष्य का आत्म समर्पण ही दीक्षा है, दीक्षा का तात्पर्य गुरु द्वारा ज्ञान, शक्ति और सिद्धि का दान, और शिष्य द्वारा अज्ञान, पाप और दरिद्रता का नाश है, शरीर कितना ही शुद्ध हो, यह आवश्यक नहीं कि मन भी उसी अनुपात में जागृत हो, दीक्षा का तात्पर्य मन की जागृति है।

दीक्षा गुरु की ओर से आत्मदान, शक्तिपात है, जो शिष्य के भीतर सुप्त शक्तियों को जागृत करने की प्रक्रिया है, साधना और सिद्धियां दीक्षा के माध्यम से ही शिष्य के भीतर चेतना की मूल शक्ति जागृत करती हैं, इसी कारण शिष्य वह स्थान प्राप्त कर सकता है, जो उसे साधना के द्वारा प्राप्त होना चाहिए।

दीक्षा द्वारा गुरु शिष्य को अपने संरक्षण में लेकर उसके लिए क्या उचित है, इसका निर्णय करता है,

उसके पूर्व जन्म की साधनाएं, संस्कार, दोष, तथा वर्तमान जीवन के दोष, बाधाएं जानकर उसके लिए उचित मार्ग स्पष्ट करता है।

दीक्षा के भेद

दीक्षा का तात्पर्य केवल श्रीगुरु के सामने बैठकर कोई मन्त्र लेना ही नहीं है, यह तो एक क्रमबद्ध शृंखला है, सिद्धि तक पहुँचने की पहली सीढ़ी है, जिससे आगे की सीढ़ियां, मार्ग निरन्तर मिलता ही रहता है, दीक्षा, शिव और शक्ति का मिलन कर शिष्य में प्रवाहित करना है।

मूल रूप से दीक्षा के तीन भेद हैं— **१-शाक्त दीक्षा, २-शांभवी दीक्षा, ३-मांत्री दीक्षा।** आगे चल कर मांत्री जिसे आणवी दीक्षा भी कहा गया है, और अधिक भेद हो जाते हैं—

१-शाक्त दीक्षा

शाक्त दीक्षा में शिष्य अपनी ओर से कुछ भी नहीं करता, गुरु, शिष्य के अन्तरदेह में प्रवेश कर कुण्डलिनी शक्ति को जागृत कर अपनी शक्ति से ही शिव और शक्ति का मिलन करा देते हैं, यह दीक्षा तो गुरुदेव अपने परम शिष्यों को ही प्रदान करते हैं, जो शिष्य साधना के पथ पर बहुत आगे बढ़ गया हो।

२-शांभवी दीक्षा

इसमें गुरु एवं शिष्य आमने-सामने बैठते हैं, गुरु अपनी प्रसन्न दृष्टि से शिष्य को स्पर्श करते हुए उसके भीतर शिव और शक्ति के चरण स्थित कर देते हैं, शिष्य समाधिस्थ रहते हुए समाधिस्थ हो जाता है और उसकी कुण्डलिनी जागृत हो जाती है, यह दीक्षा श्रीगुरु अपने शिष्य के स्तर को परख कर ही प्रदान करते हैं।

३-मांत्री (आणवी) दीक्षा

मांत्री दीक्षा ही सामान्य साधक के लिए आवश्यक दीक्षा है, जिसमें गुरुदेव शिष्य को मंत्र प्रदान करते हैं,

ज्ञानमुद्रा
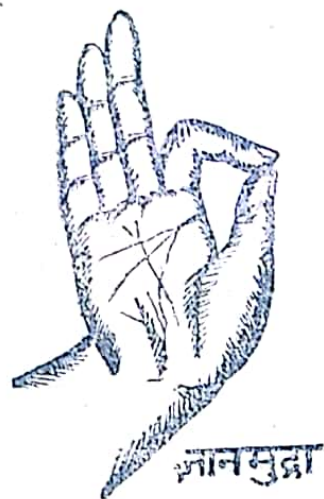
शिष्य को अनुष्ठान पूजन इत्यादि सम्पन्न करना होता है, इस दीक्षा से ही साधक को शक्तिपात की पात्रता प्रारम्भ होती है और उसके द्वारा किये गये मंत्र जप, अनुष्ठान उसे उचित सिद्धि दिलाते हैं, गुरुदेव अपने भावनात्मक शिष्यों को प्रथम रूप में यही दीक्षा दे कर उसकी साधना का श्रीगणेश करते हैं, और यह आवश्यक भी है।

आणवीय दीक्षा का विस्तार बहुत अधिक है, और इस दीक्षा के दस भेद हैं, जिन्हें समझना प्रत्येक शिष्य के लिए आवश्यक हैं, यह दस भेद हैं—

१-स्मार्ती, २-मानसी, ३-योगी, ४-चाक्षुषी, ५-स्पार्शिकी, ६-वाचिकी, ७-मांत्रिकी, ८-होत्री, ९-शास्त्री, १०-अभिषेचिका।

१-स्मार्ती दीक्षा

जब गुरु और शिष्य भिन्न-भिन्न स्थान पर स्थित हों, तो यह दीक्षा सम्पन्न की जाती है, निश्चित समय पर शिष्य स्नान कर अपने स्थान पर बैठता है और गुरुदेव अपने स्थान पर शिष्य का स्मरण करते हुए उसके दोषों का विश्लेषण करते हुए उन को भस्म कर, सिद्धि के मार्ग पर उसे स्थित कर देते हैं।

२- मानसी दीक्षा

इसमें गुरु और शिष्य एक ही स्थान पर स्थित रहते हैं और स्मार्ती दीक्षा के अनुरूप ही श्रीगुरु

शिष्य का स्मरण करते हुए उसे दीक्षा प्रदान करते हुए उसे शिव और शक्ति तत्व से मानसिक रूप से परिचित कराते हैं।

३-योगी दीक्षा

इस दीक्षा में गुरु योग पद्धति से शिष्य के शरीर में प्रवेश कर अपना योग तत्व प्रदान कर देते हैं, और उसे परम तत्व योग का मार्ग देते हैं, यह अत्यंत उच्चकोटि की दीक्षा केवल योगियों के लिए ही है।

४-चाक्षुषी दीक्षा

इसमें श्रीगुरुदेव अपने शिव भाव को जागृत कर करुणामयी दृष्टि से दीक्षा के समय शिष्य को देखते हुए उसके दोषों को भस्मीभूत करते हैं।

५-स्पार्शिकी दीक्षा

इसमें श्रीगुरुदेव अपने हस्त पर शिव मंडल बना कर, शिव स्थित कर, शिव स्वरूप जागृत कर, इस शिव हस्त का स्पर्श कर, शक्ति जागृत करते हैं।

अभय मुद्रा

६-वाचिकी दीक्षा

इस दीक्षा में गुरुदेव सर्व प्रथम अपने गुरु का ध्यान कर, अपने भीतर अपने गुरु को स्थित कर, शिष्य को विधि-विधान सहित मंत्रदान प्रदान करते हैं।

७-तांत्रिकी दीक्षा

इस दीक्षा में गुरुदेव स्वयं न्यास इत्यादि विशेष मंत्र क्रियाएं सम्पन्न कर मन्त्रात्मक होकर अपने शरीर से शिष्य के शरीर में मन्त्र का संक्रमण करते हैं, जिस मंत्र का पालन शिष्य के लिए आवश्यक होता है।

८ होत्री दीक्षा

इसमें यज्ञ स्थान पर बैठ कर अग्नि प्रज्ज्वलित कर यज्ञ आहुति देते हुए शिष्य को दीक्षा प्रदान की जाती है।

९-शास्त्री दीक्षा

इसमें किसी प्रकार की सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, श्रीगुरु अपने शिष्य की भक्ति भावना, सेवा, समर्पण, योग्यता को देखते हुए, शिष्य को शास्त्रीय दान प्रदान करते हुए दीक्षा देते हैं।

१०-अभिषेचिका दीक्षा

इसमें सर्वप्रथम गुरुदेव एक घट पात्र में जल भर कर शिव और शक्ति की पूजा करते हैं, और उस जल से शिष्य के सिर पर अभिषेक सम्पन्न करते हैं, यह भी एक उच्चकोटि की विशिष्ट दीक्षा है।

शास्त्रों में तो आगे दीक्षा के संबंध में और कई वर्णन, भेद आते हैं लेकिन मूल स्वरूप इन्हीं दीक्षाओं से निकला है, तन्त्र शास्त्रों में दीक्षा स्तर के संबंध में भी लिखा है, जो गुरुदेव अपने शिष्य को उसकी साधना स्तर के अनुरूप प्रदान करते हैं।

दीक्षा को केवल एक प्रथा मानना उचित नहीं है, इसे तो मर्यादा पालन का मार्ग मानते हुए अपने जीवन को एक ऐसा मोड़ देना है, जिसमें दोष और दुःखों का मार्जन है, पंच-शक्तियों का विकास है, कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया है, दिव्य भाव जागृत करना है।

वर्तमान जीवन में

सारी समस्याओं का समाधान

महाविद्या साधनाओं से ही है

महाविद्या का तात्पर्य है, संसार की सर्वोच्च शक्ति, महाविद्या का तात्पर्य है साधक के जीवन की समस्याओं का पूर्ण रूप से समाधान करना और महाविद्या साधना का तात्पर्य है कि साधक जो भी इच्छा मन में धारण करके साधना सम्पन्न करे, तो साधना सम्पन्न होते-होते उसकी समस्या का समाधान हो ही जाता है।

वर्तमान आपा-धापी के युग में प्रतिस्पर्धा और जटिलताओं से भरे जीवन में महाविद्या साधना का महत्व अद्वितीय है, विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न महाविद्या साधना का प्रयोग भारतीय महर्षियों ने स्पष्ट किया गया है।

और हम पहली बार प्रामाणिकता के साथ इन महाविद्या साधनाओं की साधना से संबंधित विवेचन स्पष्ट कर रहे हैं।

दस महाविद्याएं संसार की प्रत्येक समस्या की आधारभूत शक्ति हैं, जो कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश और अन्य देवताओं से भी ऊंची, अद्वितीय तथा तुरन्त सहायता करने में सहायक हैं, जो साधक पूर्ण मनोयोग से इन दस महाविद्या साधनाओं को या इनमें से कोई भी एक महाविद्या साधना सम्पन्न कर लेता है, तो निश्चय ही उसके संबंधित मनोवांछित कार्य सफल, सिद्ध होते हैं, इन दस महाविद्याओं के नाम हैं— १-काली, २-तारा, ३-छिन्नमस्ता

४-धूमावती, ५-बगलामुखी, ६-कमला, ७-त्रिपुर-भैरवी, ८-भुवनेश्वरी, ९-त्रिपुर सुन्दरी और १०-मातंगी ।

साधकों के लिए मैं इनमें से प्रत्येक साधना को स्पष्ट कर रहा हूं जिससे कि साधक संबंधित साधना को सिद्ध कर पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकें ।

१-काली महाविद्या साधना

यह सर्वप्रमुख उग्र और तुरन्त प्रभाव देने वाली महाविद्या है, जिसे गृहस्थ और योगी भली प्रकार से सम्पन्न कर सकते हैं, इस प्रकार की साधना से किसी प्रकार का अहित नहीं होता अपितु साधक की मनोकामना, साधना पूर्ण होते-होते सम्पन्न हो जाती है ।

प्रयोजन

महाकाली को प्रसन्न करने और उसके प्रत्यक्ष दर्शन करने, मुकदमे में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करने और न्यायाधीश के विचार अपने अनुकूल बनाने, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने और शत्रुओं को समाप्त करने, राज्य-बाधा तथा अन्य किसी भी प्रकार के भय और आने वाले संकट को दूर करने के लिए तथा गृहस्थ जीवन की बाधाएं, घर का कलह तथा परिवार के किसी सदस्य की बीमारी को जड़-मूल से समाप्त करने में काली साधना अत्यन्त गोपनीय तथा शीघ्र प्रभावदायक है ।

समय

इस साधना को किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, साधक चाहे तो रात्रि को अथवा दिन को यह साधना सम्पन्न कर सकता है, यों अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या अथवा पुष्य नक्षत्र में भी यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है ।

इस साधना में सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न किया जाता है, यह मंत्र जप तीन, पांच, नौ अथवा ग्यारह दिनों

में सम्पन्न होना चाहिए, पर इसके लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि पहले दिन जिस समय साधना प्रारम्भ करें नित्य उसी समय साधना सम्पन्न होनी चाहिए, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है ।

साधना सामग्री

इसमें **"महाकाली यंत्र" "महाकाली चित्र"** की विशेष आवश्यकता पड़ती है, साधक को **"काली हकीक माला"** से यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर यह साधना सम्पन्न होती है ।

साधक महाकाली यन्त्र को जल से स्नान करा कर फिर उस पर सिन्दूर अर्पित करें और फिर निम्न मन्त्र का जप प्रारम्भ करें, वाक् सिद्धि अर्थात् आप जो कहें वह हो जाय, ऐसी पूर्णता के लिए भी यह साधना सम्पन्न होती है ।

काली मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिण
कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ।।

यदि पूर्ण अनुष्ठान (सवा लाख मन्त्र जप) न करें और नित्य एक माला मंत्र जप करें तब भी साधक को विशेष अनुकूलता और ऊपर लिखी हुई सुविधाएं एवं लाभ प्राप्त होता रहता है।

२- तारा-साधना उपासना

जीवन की श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण साधनाओं में तारा महाविद्या अपने आपमें एक साधना उपासना है, जो साधक या व्यक्ति अपने जीवन में कुछ करके दिखाना चाहता है, उन्नति के पथ पर अग्रसर होना चाहता है उसे निश्चय ही अपने जीवन में एक बार तारा साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

मूल रूप से बुद्धि, ज्ञान, शक्ति, विजय और जीवन की पूर्णता के लिए तारा साधना को आवश्यक माना गया है, इस साधना से अकाल मृत्यु और दुर्घटना का निराकरण तो होता ही है, साथ ही साथ समस्त प्रकार के भय से मुक्ति मिल जाती है।

इससे भी बड़ी बात यह है, कि अद्वितीय और आकस्मिक आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि तथा जीवन की सफलता के लिए इस साधना को आवश्यक माना गया है।

समय

यह साधना किसी भी बुधवार या पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ की जा सकती है, इस साधना में गुलाबी धोती, या गुलाबी वस्त्र धारण करने चाहिए, यह साधना दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न हो सकती है।

यह साधना सवा लाख मन्त्र जप से सम्पन्न होती है, पर शीघ्र सफलता के लिए यदि तीन दिन में २१० माला जप कर लें, तब भी सफलता मिल जाती है।

साधना सामग्री

इसमें ताम्र पत्र पर अंकित "तारा यंत्र" और "तारा चित्र" की अनिवार्यता महर्षियों ने मानी है, इसके लिए प्रामाणिक और शुद्ध "स्फटिक माला" से ही मंत्र जप होना चाहिए, इस साधना की विशेषता यह है कि कई बार तो साधना सम्पन्न होते-होते अनुकूल फल प्राप्त होने लग जाता है, साधक चाहे तो घी का दीपक लगा सकता है और तारा यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर साधना प्रारम्भ कर सकता है।

तारा मंत्र

।। ऐं ओं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ।।

३-षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी)

पूरे भारतवर्ष में षोडशी साधना को महत्व दिया जाता है, क्योंकि यह विजय की साधना है, क्योंकि यह

पुरुषार्थ, पराक्रम, आनन्द और सिद्धिदायक साधना है, क्योंकि यह स्त्रियों के लिए सौभाग्यदायिनी तथा पुरुषों के लिए पूर्ण पुरुषार्थ प्राप्ति की साधना है, यदि व्यक्तित्व में किसी प्रकार की न्यूनता हो, तो यह साधना अपने आपमें अद्वितीय है, पति-सुख, पुत्र-प्राप्ति, पति की दीर्घायु, गृहस्थ-सुख, और प्रत्येक प्रकार की सिद्धि के लिए इस साधना को महत्व दिया गया है।

समय

इस साधना को दिन या रात्रि में किसी भी दिन से प्रारम्भ किया जा सकता है, फिर भी यदि किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ करें, तो ज्यादा उचित रहता है।

प्रयोजन

जीवन के प्रत्येक कार्य की पूर्णता, विवाह, पति-सुख गृहस्थ-सुख, पौरुष-प्राप्ति और बीमारियों से मुक्ति के लिए यह साधना अद्वितीय है।

इस साधना को किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ करना चाहिए, साधक उत्तर की ओर मुंह कर सफेद धोती या सफेद वस्त्र धारण कर साधना प्रारम्भ करें, पूर्ण सफलता के लिए सवा लाख मंत्र जप आवश्यक माना गया है, पर योगियों एवं विद्वानों के अनुसार यदि तीन दिन में २१० माला मंत्र जप कर लें, तब भी सफलता मिल जाती है।

साधना सामग्री

इस साधना में **"षोडशी त्रिपुर सुन्दरी महायंत्र"** की आवश्यकता होती है, साथ ही साथ **"सफेद हकीक माला'** से इस साधना को सम्पन्न किया जाता है, पर इस बात का ध्यान रहे, कि यह सफेद हकीक माला पहले किसी अन्य मंत्र जप में उपयोग नहीं की हुई हो।

त्रिपुर सुन्दरी मंत्र

।। ह्रीं कएईल ह्रीं हसकलह ह्रीं सकल ह्रीं ।।

४- भुवनेश्वरी

भारत के समस्त साधनात्मक ग्रन्थों में भुवनेश्वरी साधना को अत्यन्त महत्व दिया है. क्यों कि यह सौम्य साधना है और गृहस्थ के लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य साधना है।

प्रयोजन

जीवन में साधक जिस प्रकार की पूर्णता चाहता हो, किसी क्षेत्र में जिस ऊंचाई तक पहुंचना चाहता हो और जीवन में पूर्ण आनन्द, सौभाग्य, ऐश्वर्य तथा सम्पन्नता चाहता हो तो उसके लिए भुवनेश्वरी साधना अत्यधिक सहायक है।

यदि साधक अन्य कोई भी साधना न करें पर यदि वह भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न कर लेता है तो निश्चय ही उसके सारे मनोरथ सभी दृष्टियों से पूर्ण हो जाते हैं।

समय

यह विशिष्ट साधना किसी भी सोमवार अथवा शुक्रवार को प्रारम्भ की जा सकती है पीले वस्त्र धारण कर प्रातः साधना प्रारम्भ करें, सर्वप्रथम देवी का ध्यान कर सुगन्धित पुष्प अर्पित करें और २१ माला बीज मंत्र का जप करें, तीन, पांच अथवा सात शुक्रवार को साधना सम्पन्न करना ही फलदायक है।

सामग्री

इस साधना हेतु **'भुवनेश्वरी यंत्र'** तथा **'कामेश्वरी माला'** आवश्यक है, पति-पत्नी दोनों एक ही माला से जप सम्पन्न कर सकते हैं।

भुवनेश्वरी मन्त्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं ।।

५- छिन्नमस्ता साधना

यह साधना मूल रूप से तांत्रिक साधना है, इसे पूरे विश्वास एवं श्रद्धा के साथ सम्पन्न करना चाहिए, छिन्नमस्ता महाविद्या के नाभि में योनि चक्र स्थित है, तम और रज इसकी विशेष शक्तियां हैं।

प्रयोजन

शत्रुओं की बाधा पूर्ण रूप से समाप्त करने, व्यापार तथा नौकरी में राजकीय बाधा, शत्रु स्तम्भन में यही साधना पूर्ण रूप से प्रभावकारी है।

बार-बार कार्यों की पूर्णता में रुकावट एवं तीव्र वशीकरण हेतु यह साधना तत्काल फल देने वाली मानी गई है, इस साधना को कृष्ण पक्ष में मंगलवार के दिन अर्धरात्रि के पश्चात् सम्पन्न करना चाहिए, अपनी बाधा, समस्या को कुंकुम से लिख कर सामने बाजोट के नीचे रखें, किसी व्यक्ति विशेष पर प्रयोग हेतु उसका चित्र रखें।

साधना सामग्री

इसमें **"छिन्नमस्ता यंत्र"** तथा **"रक्ताभ माला"** आवश्यक है, अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर सिन्दूर से रंगे चावलों की ढेरी बनाकर उस पर यंत्र को स्थापित करें, तथा आगे एक तिल तथा दूसरी सरसों की ढेरी बनाकर एक-एक सुपारी स्थापित करें।

छिन्नमस्ता मन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये
ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ॥

> साधना का तात्पर्य वैराग्य नहीं, उस मूल शिव तत्व को प्राप्त करना है, जिससे जीवन का मूल स्वरूप पूर्ण हो सके, जीवन इच्छानुसार जी सकें।

६- त्रिपुर भैरवी साधना

पल-पल संकट से गुजर रहे, अपनी समस्याओं से जकड़े हुए, विश्व हो या व्यक्ति, अधिष्ठाता दक्षिण मूर्ति काल भैरव ही हैं, और उनकी शक्ति प्रचण्ड रूप वाली 'त्रिपुर भैरवी' ही है।

प्रयोजन

यह साधना भय का विनाश कर आत्म-विश्वास, आत्म-शक्ति जाग्रत करने की साधना है, मानसिक भय हो अथवा शारीरिक दुर्बलता, भूत-प्रेत बाधा हो अथवा बल, वीर्य, तेज में क्षीणता हो, इस साधना से इस प्रकार के सारे संकट दूर हो जाते हैं।

"रुद्रयामल तंत्र" में कहा गया है, किसी भी प्रकार का प्रबल तांत्रिक प्रयोग अथवा मूठ किसी व्यक्ति पर की गई हो तो त्रिपुर भैरवी साधना करने से वह विपरीत तांत्रिक प्रभाव पूर्ण रूप से समाप्त हो ही जाता है।

समय

इस साधना को किसी भी रविवार को सूर्योदय से पहले ही स्नान आदि से निवृत्त हो कर प्रारम्भ करना चाहिए।

साधना सामग्री

इस साधना के लिए **'भैरव मूर्ति' 'त्रिपुर भैरवी यंत्र'** तथा **"विजय माला"** की विशेष आवश्यकता रहती है इसके अतिरिक्त सिन्दूर, लाल पुष्प तथा फल आदि की भी व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए।

सर्वप्रथम भैरव मूर्ति (सालिग्राम), त्रिपुर भैरवी यंत्र को पहले दूध से फिर जल से स्नान करा कर पोंछ कर, सिन्दूर और लाल पुष्प अर्पित करें, पहले गुरु एवं भैरव का पूजन कर फल अर्पित करें, फिर विजय माला से ११ माला निम्न मंत्र का जप कर पुष्प अर्पित कर इच्छाओं की पूर्ति तथा दुर्बलताओं के नाश की प्रार्थना कर फल के दो टुकड़े कर देवी को भोग लगाकर प्रार्थना कर प्रसाद स्वरूप उसी स्थान पर बैठे हुए ग्रहण करें।

त्रिपुर भैरवी मन्त्र

॥ हसैं हसकरी हसैं ॥

७- धूमावती साधना

इस महाविद्या का स्वरूप अत्यन्त तीव्र एवं डरावना है, अत्यन्त क्रोध मुद्रा वाली, तीव्र रुक्ष नेत्र एवं खुले केश का रूप भयप्रद है, इसलिए इसका प्रभाव भी तीव्र एवं अभय स्वरूप है, देवी के इस बाह्य स्वरूप का कारण, तीव्र प्रचण्ड शक्ति के कारण ही है।

प्रयोजन

धन, सम्पत्ति के स्थायित्व हेतु, प्रचण्ड से प्रचण्ड शत्रु को पराजित करने हेतु तथा आपत्ति के निवारण हेतु यह साधना अभीष्ट फलदायक है, इसके अलावा पुत्र लाभ एवं सन्तान स्वास्थ्य रक्षा हेतु भी यही साधना शास्त्र सम्मत है।

'फेत्कारिणी तंत्र' के अनुसार जो साधक भारी विपत्ति में, महारोग में, युद्ध में, शत्रु उच्चाटन में धूमावती साधना करता है तो उसे तत्काल सफलता मिलती ही है मनुष्य स्वरूप शत्रु क्या, अदृश्य यक्ष, राक्षस, सर्प सभी प्रकार के शत्रु इसके स्मरण मात्र से दूर हो जाते हैं।

साधना सामग्री

इस साधना में प्राणश्चेतना मंत्रों से सिद्ध **'धूमावती यंत्र'** और **'काली हकीक माला'** आवश्यक है।

समय

यह साधना कृष्ण पक्ष के किसी भी गुरुवार को प्रारम्भ की जा सकती है, अर्धरात्रि में नग्न बैठ कर सामने ताम्र पात्र में जल रख कर, यंत्र स्थापित कर गुरु ध्यान एवं शिव पूजन कर ग्यारह माला मंत्र जप कर चारों दिशाओं में जल छिड़कने से सर्वबाधा मुक्ति मिलती है, शत्रु नाश एवं मुकदमे में विजय प्राप्त होती है।

धूमावती मंत्र

।। धूं धूं धूमावती ठः ठः ।।

८- कमला महाविद्या

कमला महाविद्या लक्ष्मी की अधिष्ठात्री देवी है, यह महाविष्णु की शक्ति एवं जगत् की आधारभूत देवी है, सुवर्ण कान्तिमयी स्वरूप की यह देवी अभय, आत्मविश्वास एवं आधार स्वरूपा देवी मानी गई है जिसकी कृपा बिना जीवन कष्टप्रद, अभावग्रस्त और नर्क समान हो जाता है।

प्रयोजन

कमला साधना दरिद्रता, अभाव को दूर कर पुरुषार्थ को प्रबल करने, अभीष्ट धन को प्राप्त करने, धन-सम्पत्ति, स्वर्ण को स्थायी रूप से, निरन्तर भाव से अपने पास स्थिर रखने की साधना है, जो साधक कमला साधना सिद्ध कर लेता है उसका आत्मविश्वास तो जाग्रत होता ही है,

धन प्राप्ति के, व्यापार वृद्धि के, लाभ के, अनायास धन प्राप्ति अर्थात् सट्टा, लाटरी, जुएं इत्यादि में सफलता के नये मार्ग भी खुल जाते हैं, इस साधना में तो जीवन का सांसारिक आनन्द है, फल प्राप्ति है।

दीर्घायु प्राप्त करने, अभीष्ट धन एवं मान-सम्मान प्राप्त करने, राजपद प्राप्त करने की साधना, कमला साधना ही है।

साधना सामग्री

इस साधना में ताम्र पत्र निर्मित **'कमला महालक्ष्मी यंत्र'** तथा **'कमलगट्टा माला'** आवश्यक है।

समय

किसी भी बुधवार को सूर्योदय के पश्चात् स्नान, ध्यान कर, प्रतिदिन पांच माला कमला बीज मंत्र का जप करने से कुछ ही समय में फल प्राप्ति प्रारम्भ हो जाती है, २१ दिन मंत्र जप करने के बाद यंत्र को तिजोरी में अथवा स्वर्णादि आभूषणों के साथ रखना चाहिए, इसके पश्चात् 'श्रीं' मंत्र का जप तो प्रतिदिन करना ही चाहिए।

कमला बीजमंत्र

॥ ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ॥

६- बगलामुखी साधना

श्री बगलामुखी को त्रिशक्ति भी कहा गया है क्योंकि यह काली, कमला और भुवनेश्वरी का संयुक्त स्वरूप है, यह विष्णु पत्नी होते हुए विष्णु की रक्षा करने वाली 'स्तम्भन शक्ति' कही गई है, श्री बगला को ब्रह्मास्त्र भी कहा गया है क्योंकि दुःख, कष्ट, अनिष्ट को दूर करने, शत्रुओं का स्तम्भन, दमन करने, विपरीत व्यक्तियों को अपने अनुरूप वशीकरण करने हेतु इसके समान कोई साधना ही नहीं है।

> दसं महाविद्या साधना तो शक्ति जाग्रत कर स्वयं शक्तिमान होकर शिवभाव को उदय कर शिवत्व बोध प्राप्त करना है, शक्ति प्राप्त किये बिना तो जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है, शक्तिमान को ही सर्वत्र योग्य, आदरणीय माना जाता है।

श्री बगलामुखी तामसी देवी नहीं अपितु पीताम्बरा, रक्षाकारक, अभय सिद्धि देने वाली, उपास्य भाव से साधना की जाने वाली देवी है।

प्रयोजन

प्रबल से प्रबल शत्रु हो, दिन प्रतिदिन अपमान का जीवन हो, उन्नति का कोई मार्ग न मिल रहा हो, कष्ट बढ़ते ही जा रहे हों तो बगलामुखी साधना ही एक मात्र उपाय है, इस साधना से बाहर ही नहीं अपितु घर में भी शान्ति का प्रादुर्भाव होता है, कैसी भी राजकीय समस्या हो, काम अटका हुआ हो पैसे रुके हुए हों, कोई बार-बार विरोध कर रहा हो, इस साधना से तत्काल फल मिलता है।

साधना सामग्री

इस साधना में **'बगलामुखी यंत्र'** तथा **'हरिद्रा माला'** आवश्यक है।

समय

किसी भी मंगलवार की अर्द्धरात्रि को प्रारम्भ की जाने वाली इस साधना को शिवालय में, एकान्त स्थान अथवा गुरु आज्ञा से गुरु सामीप्य में अथवा अपने घर में शिवलिंग स्थापित कर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए साधना करनी चाहिए।

पीले रंग का इसमें विशेष महत्व है, साधक पूर्व की ओर मुंह कर पीले वस्त्र धारण कर, सामने बाजोट पर हल्दी से रंगे चावलों की ढेरी बनाकर उस पर बगलामुखी यंत्र स्थापित कर, देवी का ध्यान कर पीले पुष्प अर्पित कर हरिद्रा माला से प्रतिदिन एक माला मन्त्र जप करें।

बगलामुखी मंत्र

।। ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।।

१०- मातंगी महाविद्या

मातंगी, वाणी और विलास की देवी है, मातंगी का स्वरूप शान्त, आनन्दमयी, सहज, मन्द मुस्कानयुक्त, अभय कारक है, मातंगी मन को उद्वेलित करने वाली देवी है।

प्रयोजन

जीवन में सरसता, आनन्द, भोग-विलास की प्राप्ति हेतु मातंगी साधना ही उचित है सुयोग्य पति की प्राप्ति हेतु कन्याओं के लिए यह साधना आवश्यक है, गृहस्थ जीवन में पूर्ण सुख, प्रेम, सहजता मातंगी साधना से प्राप्त हो सकती है।

आप जो बोलें वह दूसरों पर पूरा प्रभाव डाले और दूसरे आपकी बात को पूरा महत्व दें, आपकी वाणी में, दृढ़ता, प्रभाव हो, कहे अनुसार कार्य होना, ऐसी सिद्धि मातंगी साधना से ही संभव है।

साधना सामग्री

इस साधना में **'मातंगी यंत्र'** तथा **'सिद्धि माला'** की विशेष आवश्यकता रहती है।

समय

कृष्ण पक्ष में किसी भी गुरुवार को रात्रि में दस बजे के बाद इस साधना को प्रारम्भ करें, सर्वप्रथम यंत्र को सामने स्थापित कर यंत्र पर कुंकुम, केसर, गुलाल एवं श्वेत पुष्प अर्पित करें, धूप (लोबान) पूजा स्थान में जलाएं तथा पांच माला निम्न मंत्र का जप करें।

मातंगी मंत्र

।। ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ।।

ये दश महाविद्याएं शिव की शक्ति के स्वरूप हैं इनमें सौम्य स्वरूप भी है और रौद्र स्वरूप भी, रौद्र को अनुभव किये बिना माधुर्य एवं सौम्यता को अनुभव नहीं किया जा सकता है, काली, तारा, छिन्नमस्ता, बगलामुखी, धूमावती शक्ति के कठोर स्वरूप को प्रकट करती हैं वहीं भुवनेश्वरी, षोडशी, त्रिपुर भैरवी, मातंगी, कमला शक्ति के सौम्य स्वरूप हैं।

शक्ति का प्रवाह शिव से साधक की ओर ही है और जो साधक इन दस महाविद्याओं की साधना करता है उसे सिद्धि प्राप्त होने से कोई नहीं रोक सकता है।

नोट-हमने यद्यपि दस महाविद्या साधना में प्रत्येक महाविद्या के बारे में स्पष्ट किया है, लेकिन फिर भी यह बहुत कम है, एक-एक महाविद्या के बारे में ग्रन्थ लिखा जा सकता है।

सुधि-पाठक किसी भी प्रकार की जानकारी, विशेष विवरण जानना चाहें तो अवश्य लिखें और आपको सहयोग देकर हमें प्रसन्नता ही होगी-सं०

मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन

तन्त्र में पंच मकार रहस्य

इस गुप्त रहस्य में छिपा है - तंत्र का सिद्धि प्राप्ति स्वरूप

जिसने तंत्र को समझा है - वही तो साधक है

तंत्र और तांत्रिकों के संबंध में जितनी अधिक भ्रान्तियां आज साधारण जन-मानस में हैं, इस शास्त्र को लेकर जिस प्रकार की चर्चाएं होती हैं, और जिस प्रकार से इसको हीन दृष्टि से देखा जाता है— वह निश्चय ही विचारणीय है, यदि तन्त्र वास्तव में शास्त्र है, ठोस आधार से युक्त ज्ञान-विषय है, एक विशिष्ट प्रक्रिया है तो फिर ऐसा क्यों ?

इसका मूल कारण तन्त्र-शास्त्र अथवा तांत्रिक-ज्ञान और क्रियाएं नहीं है, अपितु अधकचरे, अज्ञानी तांत्रिकों द्वारा इस संबंध में किये गये कार्य और फैलाई गई भ्रान्तियां हैं तन्त्र के लिए और इसके ज्ञान के लिए मांस, मदिरा, मैथुन आदि की जो क्रियाएं सम्पन्न की जाती हैं, और इसको जिस प्रकार से मैली विद्या बना दिया गया, वह निश्चय ही इस महान ज्ञान-विज्ञान का अपमान ही है, सामान्य जन-मानस में तांत्रिक का तात्पर्य बड़ी-बड़ी लाल आंखों वाला, नशे में धुत्त, श्मशान अथवा एकान्त स्थान पर व्यभिचार स्वरूप क्रियाएं करने वाला, मांस आदि के लिए बलि देने वाला है, और किसी को हानि पहुंचाने के कार्य में लीन व्यक्ति के रूप में ही चित्र उपस्थित किया जा रहा है, यह बिल्कुल ही गलत, दुराग्रहपूर्ण एवं सत्य से परे है।

तन्त्र के भेद

तन्त्र, मूल रूप से शक्ति-उपासना का एक मार्ग है, जिसके माध्यम से साधक, विशेष साधना को सम्पन्न कर, अपने भीतर शक्तित्व समाहित कर लेता है, इस शास्त्र के विशेष रूप से तीन उपासना मार्ग प्रचलित हैं—१- दक्षिण मार्ग या समयाचार, २-कौल या वाम मार्ग, ३-मिश्र मार्ग,

दक्षिण मार्ग—मूल रूप से वैदिक मार्ग का स्वरूप है, और यह 'श्री विद्या' है, इसके प्रमुख ग्रंथ— **"वशिष्ठ संहिता" "सनक संहिता" "श्री विद्यार्णव"** इत्यादि हैं, वाम मार्ग जो कि मूल तन्त्र शास्त्र है, इसके चौंसठ विशेष ग्रंथ हैं, **"कौलनी कुलयोगिनी" "महामाया तन्त्र"** आदि इसके मुख्य ग्रन्थ हैं, इसमें पंचमकारों की आवश्यकता को विशेष रूप से स्पष्ट किया है, इसके द्वारा ही यह साधना सम्पन्न की जाती है, मिश्र तन्त्र के आठ मुख्य ग्रन्थ हैं, और इसमें सामान्य रूप से वाम मार्ग और दक्षिण मार्ग दोनों प्रकार की तन्त्र विद्याओं का समावेश है।

तांत्रिक पंच मकार रहस्य

वाम मार्ग के तन्त्र में इनका विशेष स्थान है, इनके बिना किसी भी प्रकार की साधना पूरी हो ही नहीं सकती, और ये पंचमकार—मद्य, मांस, मीन, मुद्रा और मैथुन हैं, ये पांचों प्रक्रियाएं और साधन विशेष रूप से विधि-विधान सहित सम्पन्न होने चाहिए, तभी साधक को तांत्रिक साधना में सफलता प्राप्त हो सकती है।

"कुलार्णव तन्त्र" में लिखा है कि—

मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च।
मकारपंचकं प्रादुर्योगिनां मुक्तिदायकम्॥

अर्थात् मद्य, मांस, मीन, मुद्रा और मैथुन—यह पांच मकार ही योगियों को पूर्ण सिद्धि एवं मुक्ति प्रदान करने वाले हैं।

यदि सामान्य रूप से इसकी व्याख्या की जाय तो यह तो एक असम्भव सी स्थिति स्पष्ट होगी, और इस प्रकार की क्रियाओं को उपयोग में लाने वाला व्यक्ति असामान्य व्यक्ति ही माना जायेगा, क्योंकि मद्य और मांस तामसिक प्रकृति के पदार्थ हैं, और इनके प्रयोग से तमोगुण की वृद्धि होती है, जब कि तन्त्र के ज्ञान से तो सिद्धि और मुक्ति प्राप्त होनी चाहिए, यही मूल बिन्दु है, जिसकी व्याख्या आवश्यक है, केवल शाब्दिक अर्थों पर जाकर तन्त्र शास्त्र को गलत दृष्टि से देखना, दुराचार का मार्ग मानना उचित नहीं है।

आगे तन्त्र शास्त्र के इन पांच मकारों की क्रम रूप से व्याख्या की जा रही है, जिससे पाठकों और साधकों को तन्त्र-शास्त्र का मूल स्वरूप स्पष्ट हो सके।

मद्य—मदिरा

"योगिनी तन्त्र" में स्पष्ट किया गया है, कि मदिरा का तात्पर्य है—शक्तिदायक रस, अर्थात् शिव और शक्ति के संयोग से जो महान अमृतत्व उत्पन्न होता है, वही मदिरा है, जो द्रव कुण्डलिनी में ब्रह्मरन्ध्र-सहस्रदल से स्रवित हो, **"कुलार्णव तन्त्र"** के अनुसार गुड़ और अदरक का मेल ब्राह्मण के लिए मदिरा है, कांसे के पात्र में नारियल का पानी क्षत्रिय के लिए और कांसे के पात्र में शहद वैश्य के लिए सुरा अर्थात् मदिरा कही गई है, जहां किसी तन्त्र साधना में सुरा का प्रयोग हो, वहां इस प्रकार की सुरा विशिष्ट वर्ण वाले व्यक्ति को प्रयोग में लानी चाहिए।

मदिरा के दिव्य स्वरूप के बारे में शास्त्रों में लिखा है—

ब्रह्मस्थान सरोजपात्रलसिता ब्रह्माण्डतृप्तिप्रदा
या शुभ्रांशुकला सुधा विगलिता सा पानयोग्या सुरा।
सा हाला पिवतामनर्थफलदा श्री दिव्य भावाश्रिता
यांपीत्वामुनयः परार्थकुशला निर्वाण मुक्तिं गताः॥

अर्थात् जो सहस्रार पद्म रूपी पात्र में भरी हो और चन्द्रमा की कला तत्व से स्रावित हो, वही पीने योग्य सुरा है जिसको पीने से अशुभ कर्मों का प्रवाह नष्ट हो जाता है तथा साधक परम तत्व, ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति प्राप्त करता है, ऐसे ही व्यक्ति मुनि-योगी बन पाते हैं।

इस प्रकार की सुरा का सेवन करने से आत्मतत्व शक्तिशाली होकर कुण्डलिनी जागरण संभव हो सकता है।

मांस

मांस, तांत्रिक साधनाओं में बलि स्वरूप प्रयोग में लाया जाता है. मूल रूप से साधना में पशु बलि का उल्लेख ही नहीं है. मांस का तात्पर्य है–शरीर का तत्व और यह तत्व मूल रूप से लवण, अदरक, लहसुन, तिल और गेहूं की बालें हैं, इसी का साधना में, यज्ञ में, होम में बलि स्वरूप अर्पित करना उचित है, "योगिनी तन्त्र" में लिखा है—

मा शब्दाद रसना ज्ञेया संदशान रसनाप्रियान् ।
एतद यो भक्षयेद् देवि स एव मांससाधकः ।।

अर्थात् "मां" शब्द सब प्रकार की रसप्रिय वस्तुओं का स्वरूप है और जो साधक इनकी बलि दे कर, त्याग कर इनका हवन करता है और इसमें संयम बरतता है–वही साधक अपने साधना रूपी खड्ग से यह बलि देकर पूर्णता प्राप्त कर सकता है, वही साधक मांसाहारी है।

अतः यह स्पष्ट है कि पशु बलि देना और तांत्रिक साधनाओं में मांस का भक्षण करना आवश्यक नहीं है, यह तो तांत्रिकों द्वारा शास्त्रों में प्राचीन ऋषियों द्वारा दिये गये मन्त्रों के अर्थ का अनर्थ कर पशु मांस को ही आवश्यक मान लिया गया है, इसी कारण तो आज भी श्रेष्ठ यज्ञों में, देवी पूजन में नारियल को होम किया जाता है और वही पूर्ण सिद्धिदायक है।

मीन–मत्स्य

मीन अर्थात् मछली तांत्रिक क्रियाओं के मन्त्रों में विशेष रूप से आई है और इसका शाब्दिक अर्थ कर इसे केवल मछली मान लिया गया है, मूल रूप से इसका तात्पर्य है, कि जब हम किसी प्रकार की तांत्रिक क्रिया सम्पन्न करते हैं तो छः प्रकार की मछलियों अर्थात्– अहंकार, दम्भ, मद, पशुता मत्सर, द्वेष, शरीर में विचरण करने वाले इन छः प्रकार के दोषों को नष्ट कर, अपने आपको शुद्ध कर, देवता की आराधना में समर्पित कर देते हैं, केवल मछली खाने से ही यदि तांत्रिक क्रियाएं सम्पन्न हो जांय तो शायद आज आधे से अधिक भारतवासी तांत्रिक होते !

तन्त्र शास्त्रों में तो लाक्षणिक शब्द दिये होते हैं, इनकी व्याख्या कर मूल भाव समझने की आवश्यकता है, साधक का शरीर भी जल-स्वरूप ही है और इसमें भी श्वास और प्रश्वास दो मत्स्य हैं, जो साधक प्राणायाम के द्वारा उनको रोक कर कुम्भक करते हैं-वे ही मत्स्य साधक हैं, यदि साधक अपनी इन्द्रियों को वश में कर सकता है, तभी वह वशीकरण क्रिया में सिद्ध हो सकता है।
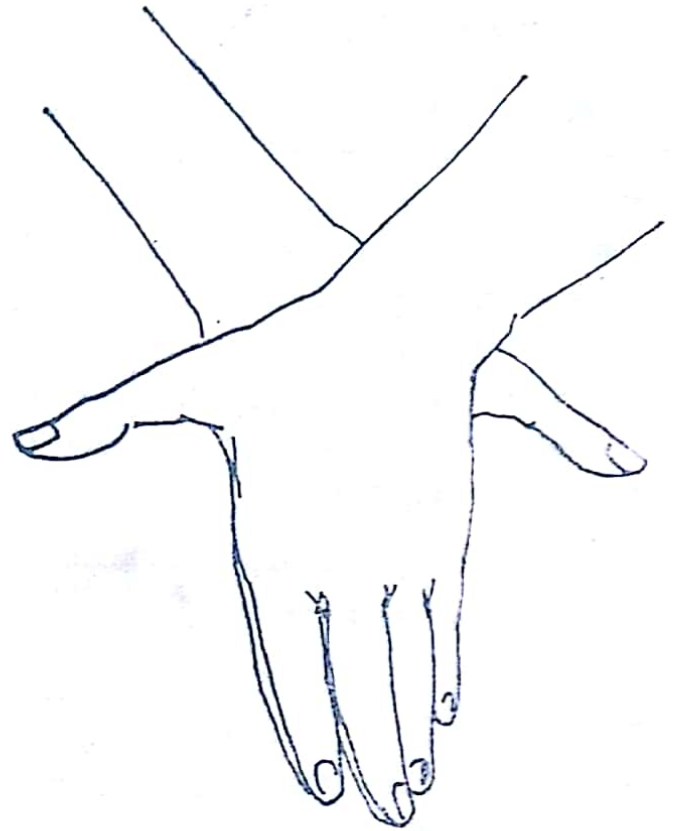
मत्स्यः

"कुलार्णव तन्त्र" के अनुसार जहां-जहां तांत्रिक क्रियाओं में मत्स्य का विधान है, वहां बैंगन, मूली अथवा पानी-फल (नारियल) को अर्पित करना चाहिए और हवन में भी इन पदार्थों को अर्पित करना चाहिए, न कि जीवित मछली को।

मुद्रा

मुद्रा का केवल उपासना और साधना में ही नहीं, अपितु अन्य रूप से भी विशेष महत्व है, मुद्रा का तात्पर्य आन्तरिक भावों को प्रकट करना है, साधना काल में साधक जो साधना कर रहा है, उस समय अपने मन के भावों को अपने इष्ट से वार्ता हेतु किस रूप से प्रकट करता है, क्योंकि हृदय और मन के भावों को बाह्य अंगों द्वारा प्रकट किया जा सकता है, और जब हाथों, उंगलियों और पैरों की सहायता से ये मुद्राएं बनाई जाती हैं, तो ये मुद्राएं आन्तरिक भावों का रूप ले लेती हैं, साधनाओं में प्रत्येक प्रकार के कार्य के लिए अलग-अलग मुद्राएं हैं।

विशेष रूप से मुद्राएं १०८ प्रकार की मानी गई हैं, साधना के प्रत्येक कार्य, प्रतिष्ठा, स्नान, आह्वान, नैवेद्य, अर्पण, विसर्जन इत्यादि के लिए अलग-अलग मुद्राओं का विधान है, मुद्राओं के द्वारा साधक आठ प्रकार की कष्ट-दायक मुद्राओं-आशा, तृष्णा, जुगुप्सा, भय, घृणा, घमण्ड, लज्जा, क्रोध, इनका त्याग कर इनके ऊपर उठ कर अपने शरीर तत्व को इतना अधिक ऊपर उठा लेता है, कि वह अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने में समर्थ हो जाता है, और उसे सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

सभी प्रकार की मुद्राओं का वर्णन पत्रिका के आगे के किसी अंक में अवश्य किया जायेगा।

मैथुन

मैथुन का तात्पर्य है—मिलाना और संभोग, इस संभोग प्रक्रिया का प्रत्येक तन्त्र साधना में विशेष स्थान है, लेकिन क्या संभोग का तात्पर्य स्त्री और पुरुष का मिलन ही है ? क्या तांत्रिक प्रक्रियाओं में स्त्री का उपयोग अनिवार्य है ? — नहीं, कदापि नहीं।

स्त्री का तात्पर्य कुण्डलिनी शक्ति है, जो भीतर स्थित है और इसका स्थान मूलाधार है, सहस्रार में शिव का स्थान है, इस शिव और शक्ति के मिलन को ही मैथुन कहा गया है, साधना की प्रक्रिया द्वारा अपने शरीर तत्व को उस स्थिति तक पहुंचा देना कि शक्ति-तत्व पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाय—वही वास्तविक मैथुन है।

मूल रूप से पुष्प, लताएं, स्त्री स्वरूपा हैं, और जब इनका समर्पण साधना में किया जाता है, तो वह स्त्री-तत्व का समर्पण ही है, शरीर का विलास प्रिय होना तांत्रोक्त मैथुन नहीं है, पराशक्ति-तत्व को प्राप्त कर, अपने भीतर के शिव तत्व से विलास, रस का संगम ही पूर्ण मैथुन है।

इसीलिए शुद्ध तंत्र साधनाओं में तथा पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने हेतु विभिन्न प्रकार के पुष्पों का प्रयोग विशेष रूप से करना चाहिए।

इस प्रकार इन पंच मकारों का साधना में विशेष स्थान एवं रहस्य, इनके मूल अर्थ को समझते हुए साधना सम्पन्न करनी चाहिए, यह हमारा दुर्भाग्य है, कि भोग वृत्ति में लीन, मंत्र-शास्त्र, तंत्र-शास्त्र के अज्ञानी तत्वों द्वारा इन पंच मकारों का अर्थ अपनी इच्छानुसार निकाल कर गलत प्रयोग किया गया, इसीलिए आज तंत्र साधना को गलत दृष्टि से देखा जाता है, जबकि मूल रूप से तो सिद्धि प्राप्त की यही एक विशिष्ट प्रक्रिया है, परम साधन है।

लक्ष्मी आपके यहां स्थायी हो सकती है

'लक्ष्मी' अर्थात् धन, सौभाग्य, सुख, श्रीवृद्धि

अद्वितीय एवं तुरन्त प्रभावकारी प्रयोग

कुबेर साधना

धन अर्थात् सम्पत्ति, वैभव-निधि,
जिसके बिना सब कुछ इस युग में तो अधूरा ही है।
युग-धर्म भी यही कहता है, कि जो सम्पत्ति कमा सकता है और उसे अपने पास स्थिर रख सकता है, वही योग्य व्यक्ति कहलाता है।

कुबेर धनाध्यक्ष हैं, और इनकी साधना दरिद्र को करोड़पति, नवनिधि का स्वामी बना सकती है, तो फिर क्यों न यह साधना सम्पन्न की जाय?

लक्ष्मी को चलायमान, अस्थिर कहा गया है, और जो व्यक्ति लक्ष्मी को स्थिर रख देता है, उसे अपने जीवन में किसी प्रकार की कमी रहती ही नहीं, वह अपने लिए तो धन सचय करता ही है, अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी कुछ कर सकने में समर्थ रहता है, धनी व्यक्ति ही समाज के लिए कुछ कर सकता है, धन से सब कुछ तो नहीं, लेकिन बहुत कुछ ऐसा किया जा सकता है, जिससे व्यक्तित्व के प्रकाश की आभा जगमगा सकती है, दुःखों का भार कम हो सकता है।

मनुष्य जन्म लेता है तो अपने साथ पूर्व जन्मों के कर्मों के कुप्रभाव, दुष्प्रभाव को लेकर उत्पन्न

होता है, और इसके साथ इस जन्म के प्रभाव के साथ उसके कार्य, उसकी साधनाएं इत्यादि जुड़ जाते हैं, और जीवन की एक धारा बन जाती है, इसीलिए तो व्यक्ति को ऐसे कर्म, कार्य, साधनाएं सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे जीवन सुधर सके, और यही उसका कर्त्तव्य भी है।

एक प्रकार के व्यक्ति तो पूरा जीवन अपना पेट भरने, बीबी-बच्चों को पालने में ही पूरा कर देते हैं, उनके पास इतना धन ही नहीं होता, कि वे जीवन के सभी रंगों को देख सकें, अनुभव कर सकें और दूसरों के लिए व समाज के लिए भी कुछ कर सकें, दूसरे प्रकार के व्यक्तियों पर धनदेव की कृपा होती है और वे जितना प्रयास करते हैं, उससे अधिक ही कमाते हैं, और पूरा जीवन आनन्द से बिताते हैं।

धन के अधिदेव—कुबेर

कुबेर देव की महत्ता तो निराली ही है, ब्रह्मा और शिव द्वारा विशेष रूप से आशीर्वादयुक्त होने के कारण इनका स्थान शिव के साथ ही है, सूर्य के समान तेज है, विशेष बात यह है, कि देवताओं को भी धन के लिए कुबेर की ही प्रार्थना करनी पड़ती है, कुबेर का जहां स्थान होता है वहां साक्षात् महालक्ष्मी "राज्यश्री" के रूप में निवास करती हैं।

कुबेर नवनिधियों, पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, और वर्चस के स्वामी हैं, यक्ष, गुयिक, किन्नर, देवनियों के अधिपति हैं, तथा अप्सराएं इनकी सेविकाएं हैं।

एक-एक निधि अनन्त वैभव प्राप्त करा सकती है, और कुबेर तो नवनिधियों के स्वामी हैं, कुबेर के साधक पर शिव-कृपा विशेष रूप से रहती है, और गृह रक्षा ब्रह्मा द्वारा अवश्य की जाती है, शुक्र अर्थात् सौन्दर्य, सौभाग्य, सांसारिक सुख, गृहस्थ-आनन्द, मदन, यात्रा, संगीत के देव, कुबेर के सहयोगी हैं, अतः कुबेर साधना से शुक्र का सौभाग्य भी पूर्ण रूप से प्राप्त होता है।

कुबेर साधना

कोई भी यज्ञ, पूजा, उत्सव, कुबेर की पूजा के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता, उत्तर दिशा के अधिपति—कुबेर का पूजन, मध्य में तो होता ही है, पूजन के अन्त में जब मंत्रों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की जाती है, तो वह मूल रूप से कुबेर का प्रार्थना मंत्र ही है।

जिसने कुबेर की साधना और उपासना नियमित रूप से सम्पन्न की है, उसे अपने जीवन में जो चाहा वह मिला है, जिस व्यापार में, कार्य में हाथ डाला, उसी में सफलता प्राप्त की, और धन-लाभ किया।

आकस्मिक धन प्राप्ति तथा गुप्त धन प्राप्ति हेतु भी कुबेर-साधना का ही विधान है, क्योंकि कुबेर-सिद्धि बिना धन आ ही नहीं सकता, और यदि आ भी जाता है तो वह स्थिर नहीं रह सकता।

कुबेर-साधना, शिव-साधना तथा शुक्र-साधना का भी फल देती है, कुबेर साधना बालकों के लिए आरोग्य-लाभ, चिरायु की साधना भी है, यदि घर-परिवार में बच्चे बार-बार अस्वस्थ होते हों, तो कुबेर की विधिवत् पूजा करके बालकों को पूजन का जल पिलाने से स्वास्थ्य लाभ होता है।

जहां कुबेर हैं—वहां लक्ष्मी हैं, नवनिधियां हैं, अप्सराओं का आनन्द है, सूर्य का तेज है, योग्य सेवक हैं, इसलिए तो कुबेर का स्थान—ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समकक्ष माना गया है।

साधना विधि

सत्य तो यह है कि साधनाएं जटिल और कष्टप्रद होती ही नहीं हैं, मूल रूप से तो साधक पर है, कि वह किस भाव से, किस रूप में, किस समर्पण से, किस विधि से साधना सम्पन्न करता है, मंत्र जप करते समय ध्यान कहीं और होता है,–तो फिर साधना में सफलता कैसे मिलेगी ?

कुबेर भी शिव समान सरल देव हैं और इस साधना को तो प्रतिदिन के पूजा क्रम का अंग ही बना लेना चाहिए।

प्रतिमाह शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी 'कुबेर त्रयोदशी' ही मानी जाती है, इस दिन साधक बिना मुहूर्त देखे कुबेर साधना सम्पन्न कर सकता है।

इस साधना में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त शुद्ध रूप से अंकित **"कुबेर यंत्र"** तथा **"कमलगट्टा माला"** आवश्यक है, इसके साथ ही नारियल, कुंकुंम, केसर, मौली, ताम्रपात्र में जल, दूध, पुष्प, प्रसाद इत्यादि की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए, इस त्रयोदशी के दिन स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठें, और अपने सामने कुबेर यंत्र चावलों पर स्थापित कर दें. पति-पत्नी दोनों साथ में यह साधना कर सकते हैं, सर्वप्रथम कुबेर वता का ध्यान करें —

ध्यान यंत्र

मनुज बाह्य विमान वरस्थितं
गरुड़ रत्न निभं निधिनायकम्।
शिव सखं मुकुटादि विभूषित
वर गदे दधत भज तुन्दिलम्॥

तत्पश्चात् पुष्प अर्पित करें, और अपनी इच्छाएं, प्रार्थनाएं पूर्ण करने हेतु, पूजन कार्य की मानसिक आज्ञा प्राप्त करते हुए हाथ में जल लेकर संकल्प करें, और जल भूमि पर छोड़ दें।

उसी स्थान पर बैठे हुए कम से कम पांच माला निम्न मंत्र का जप अवश्य सम्पन्न करें, एक ओर घी का दीपक अवश्य ही जलते रहना चाहिए।

कुबेर मंत्र

॥ ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं
वित्तेश्वराय नमः ॥

पूरे पूजन के पश्चात्, संभव हो तो पूरे परिवार के साथ लक्ष्मी आरती बोलें और ताम्र पात्र में रखे हुए जल से स्वयं आचमन करें और सभी को कराएं।

यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है, कि कुबेर की साधना-उपासना से दुःख दारिद्र्य दूर होता है और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है, शिव, कुबेर के अभिन्न मित्र होने से शिव-कृपा भी प्राप्त होती है, जिससे सभी प्रकार की बाधाओं से रक्षा होती है।

योग्य व्यक्ति में यदि तीस लक्षण हैं तो वह पूर्ण पुरुष है, ये तीस लक्षण— सत्य, दया, तपस्या, आत्म निरीक्षण, बाह्य इन्द्रियों का संयम, आंतरिक इन्द्रियों का संयम, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, त्याग, स्वाध्याय, सरलता, संतोष, समदृष्टि, सेवा, दुराचार निवृत्ति, दूसरों की विपत्ति चेष्टाओं का अवलोकन, मौन, आत्म विचार, दान, आत्म बुद्धि, इष्टदेव बुद्धि, प्रभु के प्रति ज्ञान, स्मरण, यज्ञ, नमस्कार, दास्य, सख्य, आत्म निवेदन, सहनशीलता, स्वच्छता-निर्मलता, आदि हैं।

सन्तान की श्रेष्ठता, आरोग्य, उज्ज्वल भविष्य हेतु

षष्ठी देवी साधना

संतान को भगवान का स्वरूप ही माना गया है, क्योंकि देव कृपा, साधना और कर्मवान व्यक्ति को ही योग्य संतान प्राप्त होती है, संतान योग्य हो कर अपने जीवन में पूर्ण विकास करे, सदा स्वस्थ और निरोगी रहे, इसी कारण षष्ठी देवी की साधना-उपासना की जाती है और आज भी संतान होने पर छठे दिन जिसे **"छठी महोत्सव"** कहा जाता है, मूल रूप से षष्ठी देवी की पूजा ही है।

यह देवी भगवती के मूल प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने के कारण षष्ठी कहलाती है, देवी की पूजा से पुत्रहीन व्यक्ति सुयोग्य पुत्र को, प्रियाहीन प्रिया को, दरिद्र व्यक्ति धन को तथा कर्मशील व्यक्ति अपने कर्मों के श्रेष्ठ फल प्राप्त करता है।

पूजा-विधान

देवी की पूजा शुक्ल और कृष्ण, दोनों पक्षों की षष्ठी तिथि को की जा सकती है, इसमें **'षष्ठीदेवी की मूर्ति' 'सालिग्राम की प्रतिमा** जल कलश आवश्यक है, यह पूजन अपने घर में ही करना चाहिए, प्रातः स्नान कर सर्वप्रथम कार्तिकेय स्वरूप सालिग्राम, जो विष्णु स्वरूप है, का ध्यान कर प्रतिमा पर चन्दन अर्पित करना चाहिए, तत्पश्चात् ताम्र पात्र में षष्ठी देवी की मूर्ति रख कर सुगन्धित जल देवी के ऊपर अर्पित करना चाहिए, और यह ध्यान करना चाहिए— "सुन्दर पुत्र, कल्याण और दया प्रदान करने वाली, जगत् माता चित्र स्वरूपिणी भगवती षष्ठी की मैं उपासना करता हूं", जल अर्पित करने के पश्चात् देवी को पुष्प तथा प्रसाद अर्पित करना चाहिए।

तत्पश्चात् बीज मंत्र द्वारा एक माला उसी स्थान पर बैठकर जप करना चाहिए।

षष्ठी बीज मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं षष्ठी देव्यै स्वाहा ॥

इसके पश्चात् अपने मन में जो भी इच्छाएं हैं, उनका ध्यान करते हुए निम्न स्तोत्र का पांच बार पाठ करें–

स्तोत्र

नमो देव्यै महा देव्यै सिद्धयै शान्त्यै नमो नमः।
शुभायै देवसेनायै षष्ठी देव्यै नमो नमः॥
वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।
सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
शक्ते: षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः।
मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
पारायै पारदायै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
सारायै सारदायै च पारायै सर्व कर्मणाम्॥
बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम॥
प्रत्यक्षायै च भक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
पूज्यायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्व कर्मसु॥
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
शुद्धसत्वस्वरूपायै वन्दितायै नृणां सदा॥
हिंसाक्रोधवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि॥
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
भूमिं देहि प्रजां देहि देहि विद्यां सुपूजिते॥
कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥

षष्ठी देवी की उपासना से श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति तो होती ही है, इसके अतिरिक्त नियमित पूजा से परिवार के बालकों में रोग, कमजोरी इत्यादि भी नहीं रहती, बालक योग्य, गुणवान तथा श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाले, माता-पिता के आज्ञाकारी होते हैं। ●

जिस विराट साधना में साधना तत्व प्रारम्भ से पूर्णता की ओर है

वही साधना है

पंचदेव साधना

शिव, शक्ति, सूर्य, विष्णु, महागणपति, ही तो आधार देव हैं

शरीर को ही पूर्ण ब्रह्म का स्वरूप माना गया है, और इस शरीर में पंचतत्व ही माने गये हैं, ये पांच तत्व आकाश तत्व, अग्नि तत्व; वायु तत्व, पृथ्वी तत्व और जल तत्व हैं, इनमें से प्रत्येक तत्व का विशेष स्थान है, प्रत्येक तत्व के परस्पर सहयोग से ही शरीर गतिमान रहता है, विशेष बात यह है, कि ये पांच तत्व ही ब्रह्म के स्वरूप हैं, इसी कारण इन पंच तत्वों से बने शरीर से पंचदेव ब्रह्म की साधना सम्पन्न की जाती है।

देव तो अनेकानेक हैं, और साधक को इस संबंध में किसी भी प्रकार का भूल-भुलावा नहीं रखना चाहिए, कि क्या साधना-उपासना, आराधना करे, और किस साधना-उपासना को छोड़ दे, चाहे हजार देवता हों अथवा लाख, पंचदेवों से ही सभी देवताओं का प्रादुर्भाव हुआ है, ऐसा क्यों है? और इसका मूल रहस्य क्या है? यह समझना भी आवश्यक है।

पंचदेव साधना

क्या शरीर के बिना जीवन की कल्पना की जा सकती है? यह असंभव लगता है, क्योंकि जब आप स्वयं, अर्थात् शरीर ही नहीं रहे, तो उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, इसीलिए शरीर-तत्व को प्रधानता दी गई है और शरीर पंचतत्वों का मिश्रण है और प्रत्येक तत्व के विशिष्ट अधिपति हैं—विष्णु आकाश तत्व के, सूर्य वायु तत्व के, शक्ति अग्नि तत्व की, शिव पृथ्वी तत्व के तथा गणेश जल तत्व के अधिष्ठाता देवता हैं, जिस प्रकार किसी एक तत्व की कमी हो जाने पर शरीर में व्याधि आ जाती है, उसी प्रकार इन देवों की उपासना का भी आवश्यक विधान, उस बाधा को दूर करने के लिए आवश्यक है।

विष्णु का तात्पर्य है 'सर्व व्याप्त', शिव का अर्थ है 'कल्याणकारी', गणेश का अर्थ है 'समस्त गणों के ईश', सूर्य का अर्थ है 'सर्वगत', शक्ति का तात्पर्य है 'सामर्थ्य',

और यही तो पूरे ब्रह्माण्ड की घटना घटना है, इसीलिए तो पंचदेव साधना ही पूर्ण साधना है।

यदि शास्त्र कहीं शिव की, कहीं सूर्य की, कहीं विष्णु की, कहीं देवी शक्ति की उपासना लिखते हैं, और इनमें से प्रत्येक के बारे में हजारों-हजारों ग्रन्थ हैं, तो इसमें सन्देह का कोई तत्व ही नहीं है, क्योंकि ये सभी उपासनाएं ही तो साकार-निराकार, परब्रह्म, परमबिन्दु, परमतत्व के प्रतिरूप की साधनाएं हैं, और जिस साधक की जो भावना रहती है, उसी के अनुसार तो उसे फल प्राप्ति होती है।

साधना का रहस्य कोई गहरा रहस्य नहीं है, क्योंकि साधक को साधना के समय बुद्धि के उपयोग की आवश्यकता नहीं है, उस समय तो अपने हृदय में, देवता के ध्यान में, पूजन में, वह भाव प्रकट करने की आवश्यकता है, जिससे कि शरीर का निर्बल तत्व उस देव की कृपा के कारण, अभीष्ट फल के कारण प्रबल हो जाय-यही तो रहस्य है, मनुष्य, मनुष्य के साथ छल कर सकता है, लेकिन क्या कोई साधक अपने देवता के साथ छल कर सकता है? जब कुछ पाना ही है, तो अपने मन को निर्मल बना कर, अपने जीवन के श्रद्धा-सुमन इस प्रकार अर्पित करना चाहिएं, कि देवता का आशीर्वाद, वरदहस्त पूर्ण रूप से प्राप्त हो।

आदि शंकराचार्य ने केवल पांच देवताओं के ही लिंग पूजन का विधान एवं व्यवस्था लिखी है, ये पंचलिंग—१-शिव का बाण लिंग, २-भगवान विष्णु का सालिग्राम लिंग, ३-सूर्य का स्फटिक बिम्ब, ४-शक्ति का धातु यंत्र तथा ५-गणपति का चतुष्कोणीय प्रस्तर माना है, साधक का कोई भी इष्ट हो सकता है, है, हमारे यहां वैष्णव सम्प्रदाय, शैव सम्प्रदाय, शाक्त सम्प्रदाय के अलावा भी कई अन्य सम्प्रदाय हैं, अब जो जिस देवता को इष्ट मानता हो, उसे केन्द्र में स्थापित कर अन्य देवताओं को आवरण देवता रूप में पूजा-साधना सम्पन्न करनी चाहिए, ऐसा ही विधान है।

नोट—पंचदेवों की साधना-उपासना के संबंध में पाठकों के नियमित पत्र प्राप्त होते रहे हैं, और जब यह साधना-उपासना विशेषांक प्रकाशित हो रहा है, तो यह आवश्यक ही हो गया है, कि इन पंचदेवों के रहस्य, साधना-उपासना का विवरण पूर्ण रूप से दे दिया जाय।

गणपति के सम्पूर्ण पूजन-विधान का वर्णन तो इसी अंक के प्रारम्भ में ही प्रकाशित कर दिया गया है, क्योंकि गणपति पूजन का विधान सभी पूजनों में सर्वप्रथम ही माना गया है।

गणपति की पत्नियां सिद्धि और ऋद्धि हैं, तथा सिद्धि से शुभ तथा ऋद्धि से लाभ पुत्र प्राप्त हुए, इसीलिए गणपति का पूजन-विधान सिद्धि-ऋद्धि, शुभ-लाभ का कारण माना जाता है।

पंचमहाभूत तत्व—जल, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी ही तो सबके शरीर में, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में स्थित हैं, इन तत्वों के देव ही तो पंचदेव—शिव, शक्ति, सूर्य, विष्णु और गणपति हैं, साधना में साधक अपने शरीर के निर्बल तत्व को प्रबल बनाकर ही पूर्णता की ओर अग्रसर होता है, मूल (जड़) के बिना विराट वृक्ष की कल्पना ही नहीं है, उसी प्रकार पंचदेव साधना तो—पूर्णता, ब्रह्मत्व, देवत्व, कुण्डलिनी जागरण का आधार है।

आगे सूर्य, शिव, विष्णु, शक्ति साधना के प्रत्येक रहस्य को स्पष्ट किया जा रहा है। ★

सूर्य साधना-उपासना

क्या सूर्य के बिना जीवन की कल्पना की जा सकती है ? सूर्य ही तो ऐसे प्रत्यक्ष देव हैं, जो जगत के नेत्र हैं, जो काल-चक्र के प्रणेता हैं, सूर्य से ही दिन-रात्रि, घटी, पल, मास आदि की गणना की जाती है, सूर्य से ही तो संसार प्रकाशमान है, और सूर्य के चारों ओर ही तो सभी ग्रह और यह पृथ्वी निरन्तर परिक्रमा करती है, सूर्य से प्रकाशित तेज के कारण ही तो इस संसार में ऊष्मा और तेज है, तात्पर्य यह है, कि सूर्य ही जीवन, तेज, ओज, बल, यश, नेत्र, श्रोत, आत्मा और मन के कारक हैं, और तीनों लोक सूर्य के ही तो अंग हैं।

अन्य देवताओं को तो साधना-उपासना द्वारा, उनके स्वरूप को भीतर ही भीतर, भावना द्वारा ही समझा जा सकता है, लेकिन सूर्य देव तो नित्य-प्रति प्रत्यक्ष होने वाले, साधक के सामने ही स्थित हैं, तो इनको क्यों न सिद्ध किया जाय ? सूर्य की साधना साधक के भीतर ज्ञान और क्रियाशक्ति का उद्दीपन करती है, यह तेज कभी शान्त नहीं हो सकता, सूर्य की शक्ति संज्ञा, कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ नहीं, अपितु प्रारम्भ से पूर्णता तक है।

सूर्य पूजा-साधना के नियम

१-साधक कोई भी साधना करे, उसे प्रातः उठ कर सर्व-प्रथम सूर्य नमस्कार करना तो आवश्यक है।

२-सूर्योदय होने से पूर्व ही साधक नित्य क्रिया से निवृत्त हो कर, स्नान कर, शुद्ध वस्त्र अवश्य धारण कर ले।

३-सूर्य की मूल पूजा उगते हुए सूर्य की पूजा ही है, और यही फलकारक है, अतः सूर्योदय के पश्चात् पूजन से कोई प्रयोजन सिद्ध ही नहीं होता।

४-सूर्य को लाल कनेर के पुष्प विशेष प्रिय हैं, अतः साधक यही पुष्प सूर्य को अर्पित करे।

५-सूर्य देव को सूर्योदय के समय पुष्पों के साथ ताम्रपात्र से तीन बार अर्घ्य देकर प्रणाम करना चाहिए।

६-नेत्र रोग तथा निर्बलता से पीड़ित सूर्य-उपासक को रविवार के दिन नमक, तेल रहित भोजन केवल एक समय ग्रहण करना चाहिए, तथा उसे चक्षुष्मति विद्या का पाठ करना चाहिए।

सूर्य साधना का क्रम

रविवार के दिन प्रारम्भ की जाने वाली इस साधना के समय ऊपर लिखे हुए नियमों का पालन करते हुए, साधक अपने सामने 'सूर्य यन्त्र' को स्थापित कर, उस पर चन्दन, केसर, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित कर, इसके साथ ही गुलाल तथा कुंकुंम के साथ-साथ सिन्दूर भी अर्पित करें, और अपने सामने सिन्दूर को शुद्ध जल में घोल कर, दोनों ओर सूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें कि—

"हे आदित्य ! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुख मण्डल, कमलनेत्र स्वरूप वाले, ब्रह्मा, विष्णु

तथा रुद्र सहित सम्पूर्ण सृष्टि के मूल कारक हैं, आपको इस साधक का नमस्कार ! आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प, सिन्दूर एवं चन्दनयुक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।"

इसके साथ ही ताम्रपात्र से जल की धारा को, अपने दोनों हाथों में पात्र लेकर, सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें, और इसके पश्चात् 'मणिमाला' से अपने पूजा-स्थान में स्थान ग्रहण कर, पूर्व दिशा में सूर्य की ओर मुंह कर निम्न सूर्य मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ॥

सूर्य साधना का यह प्रयोग यदि साधक प्रतिदिन करे तो अत्यन्त श्रेष्ठ रहता है, और उसकी साधनाएं सफल होती हैं।

सूर्य साधना और रोग

सूर्य तो आरोग्य के देव हैं, इनके सामने निर्बलता, रोग, जड़ता ठहर ही नहीं सकती, सूर्य का तात्पर्य ही आयु, बल, आरोग्य है।

नित्य प्रति सूर्य नमस्कार और प्राणायाम से शरीर का दूषित रक्त साफ होता है, और इस पूजा के निरन्तर अभ्यास से शरीर स्वस्थ, बलिष्ठ एवं दीर्घजीवी होता है।

चक्षुष्मति साधना तो सूर्य-उपासना का एक स्वरूप है, जो नेत्र रोगों को सम्पूर्ण रूप में दूर कर देती है, इसमें **'चक्षुष्मति यन्त्र'** स्थापित कर चाक्षुषी विद्या का पाठ नियमित रूप से सम्पन्न किया जाता है।

गायत्री मंत्र साधना-मूल रूप से सूर्य साधना ही है जिसमें सविता अर्थात् सूर्य से बल, बुद्धि, वीर्य, पराक्रम, तेज तथा सब प्रकार से उन्नति प्रगति की प्रार्थना की गई है।

चाक्षुषी विद्या पाठ

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि त्वरितं चक्षुरोगान् शमय शमय। मम् जात रूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्व जन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि-निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चक्षुष्मति विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीयते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति ॥

"बत्तीसा यंत्र" भी सूर्य यंत्र का स्वरूप माना जाता है, और इस यंत्र को स्थापित कर, प्रतिदिन 'ॐ ह्रीं हंस' बीज मंत्र का हल्दी की माला से जप कर **'चाक्षुषोपनिषद'** का पाठ कर, सूर्य को अर्घ्य देने से, नेत्र रोग के अलावा पेट संबंधित **'एसीडीटी' रोग, पीलिया, गठिया, शारीरिक दुर्बलता,** दूर होती है।

लाल रंग की बोतल में जल भर कर सूर्य के प्रकाश में दिन भर रख कर वह जल ग्रहण करने से पेट संबंधित बीमारियां दूर होती हैं।

यह सूर्य ही है, जिसके द्वारा प्रकृति की समस्त शक्तियां प्राप्त होती हैं, नवग्रहों में ये प्रथम देव हैं, इनकी साधना उपासना विजय की साधना है, एक दिन प्रातः जरा उठ कर उदय होते हुए सूर्य की पूजा कर, नमस्कार कर इस साधना का आनन्द तो लें, यह आनन्द शरीर को ही नहीं मन को भी, कुण्डलिनी जागरण के बिन्दुओं को भी कंपित कर देने वाला आनन्द है। ✱

श्री विष्णु साधना

भारतीय शास्त्रों में कहीं पर भी किसी भी साधना के संबंध में, समाप्ति या अन्त का उल्लेख नहीं आता है, आदि देव को अनन्त माना गया है, अर्थात् जो प्रारम्भ से सीमारहित, अनन्त तक विस्तृत हों, वही अनन्त देव हैं, इस रहस्यमय प्रकृति का समाधान है—श्री विष्णु।

जो आदि है वही अनन्त हो सकता है, और भगवान विष्णु आदि देव हैं तथा अनन्त देव भी, जिन्हें समय काल की सीमा में बांधा नहीं जा सकता, जिनके स्वरूप को किसी एक रूप में स्थिर नहीं किया जा सकता, जिनके तेज से उत्पन्न सहस्रों देवी-देवताओं को नित्य-प्रति पूजा जाता है, उस अनन्त देव विष्णु के तेज का एक अंश भी प्राप्त हो जाय, तो फिर जीवन में कोई न्यूनता रह जाय-यह असंभव है, श्री विष्णु आकाश तत्व के अधिष्ठाता हैं, आकाश का तात्पर्य है-विशालता, गहनता, महानता, ऊंचाई, और ये सब मन की स्थितियां ही तो हैं, कौन अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ना चाहता? कौन जीवन में अनन्त सिद्धियां प्राप्त नहीं करना चाहता? उसके लिए उस व्यक्ति में विष्णु तत्व तो प्रबल होना आवश्यक है, क्यों सभी नेतृत्व नहीं कर पाते? क्योंकि उनमें विष्णु तत्व नहीं है, उनमें तो केवल आंख मूंदकर एक निश्चित मार्ग पर चलने की भावना ही है, तो फिर जीवन घिसटता ही रहेगा।

विष्णु तो वह केन्द्रीय बिन्दु हैं, जहां से शक्तियों का देवों का उद्भव हुआ, विष्णु के ही तो अवतारों का पतन पालन हम नित्य देखते हैं, चाहे वह राम हों, कृष्ण हों, नृसिंह हों अथवा वाराह अवतार हों तो आदि देव विष्णु को कैसे भूला जा सकता है।

विष्णु साधना क्यों ?

विष्णु की साधना, अनन्त की साधना है, जो साधक के शरीर ही नहीं, मन के ऊपर आये दोषों का भी निराकरण कर उसमें तेज, कर्मशीलता का उद्भव कर, उसकी शक्ति को जागृत कर, शक्ति का विकास कर, साधक को अनन्त की ओर अर्थात् विशालता की ओर, उठने की ओर ले जाती है, सूक्ष्म से विराट की ओर, धरती से आकाश की ओर उठने की साधना विष्णु साधना ही तो है, जिस एक स्वरूप की साधना करने से अनन्त साधनाओं का, अनन्त देवों के प्रभाव का फल मिलता हो-वही विष्णु साधना है।

साधना क्रम

विष्णु का मूल नाम नारायण है, गायत्री इनका छन्द है, ॐ बीज है नमः शक्ति है, तथा इनका मूल अष्टाक्षर मन्त्र—'ॐ नमो नारायणाय' ही है।

ये साधना किसी भी चतुर्दशी को प्रारम्भ की जा सकती है, विष्णु मूल रूप से रजोगुण अर्थात् राज्य तत्व के देव हैं, इस कारण इनकी पूजा से व्यक्ति को राज्य-लाभ, राज्य-उन्नति, राज्य-बाधा से निवृत्ति, प्रतिष्ठा विशेष रूप से प्राप्त होती है।

स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने सामने एक बाजोट पर विष्णु का **'सालिग्राम लिंग'** ताम्रपत्र पर अंकित **'विष्णु यन्त्र'** स्थापित करें, सर्वप्रथम स्थान शुद्धि के पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर तुलसी पत्र ले कर, जल में डुबो कर, विष्णु के बारह स्वरूपों का ध्यान करते हुए सब दिशाओं में जल छिड़कें, विष्णु के ये बारह स्वरूप मन्त्र हैं—

ॐ ऐम् केशवाय धात्रे नमः ।
ॐ नम् आम् नारायणाय अर्यम्णे नमः ।
ॐ मोम् इम् माधवाय मित्राय नमः ।
ॐ मम् ईम् गोविन्दाय वरुणाय नमः ।
ॐ गम् उम् विष्णवे अंशवे नमः ।
ॐ वम् ऊम् मधुसूदनाय भगाय नमः ।
ॐ तेम् एम् त्रिविक्रमाय विवस्वते नमः ।
ॐ वाम् ऐम् वामनाय इन्द्राय नमः ।
ॐ सुम् ओम् श्री धराय पूष्णे नमः ।
ॐ देम् ओम् हृषीकेशाय पर्जन्याय नमः ।
ॐ वाम् अम् पद्मनाभाय त्वष्ट्रे नमः ।
ॐ यम् अः दामोदराय विष्णवे नमः ।

इसके पश्चात् विष्णु बीज मन्त्र की एक माला का जप **'आजानुलम्बिनी वैजयन्ती माला'** से करें, प्रत्येक बीज मन्त्र के साथ एक **'कमल बीज'** चंदन में डुबोकर सालिग्राम लिंग को अर्पित करें, पूजा स्थान में शुद्ध घी का दीपक तथा धूप अवश्य ही होनी चाहिए ।

श्री विष्णु बीजमन्त्र

।। ॐ नमो नारायणाय ।।

विविध मन्त्र

।। ॐ नमः भगवते वासुदेवाय ।।

।। ॐ श्री विष्णवे नमः ।।

।। ॐ श्री अनन्ताय नमः ।।

सम्पूर्ण पूजन के पश्चात् साधक दोनों हाथों में सुगंधित पुष्प को अंजली में लेकर भगवान को अर्पित करे, कि मैं आपको अभीष्ट सिद्धि हेतु अपनी सम्पूर्ण पूजा समर्पित करता हूं, ।

विष्णु साधना : लक्ष्मी रहस्य

लक्ष्मी कहां निवास करती है ? जहां विष्णु की पूजा होती है जहां शंख, तुलसी, सालिग्राम की अर्चना होती है, लक्ष्मी तो विष्णु पत्नी है, जो विष्णु की शक्ति और विश्व का ऐश्वर्य है, इसीलिए विष्णु पूजा के साधक विष्णु साधना में लक्ष्मी की पूजा भी पूरे विधि-विधान सहित सम्पन्न करते हैं ।

जब भी विष्णु की पूजा साधना और स्थापना की जाय उसके साथ ही लक्ष्मी की पूजा, **'लक्ष्मी यन्त्र चित्र'** स्थापित कर **'कमलगट्टे की माला'** से लक्ष्मी बीज मन्त्र का जप भी अवश्य करना चाहिए।
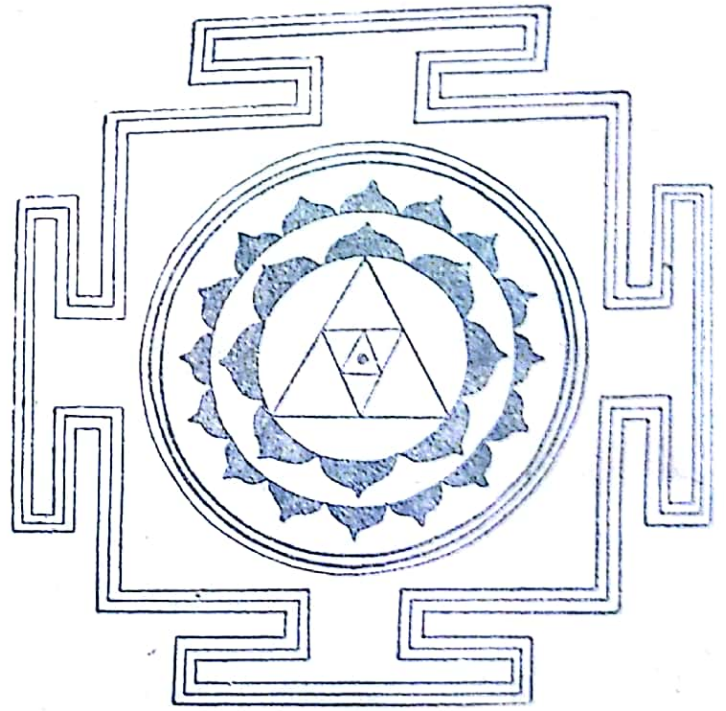
लक्ष्मी बीजमन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।।

जिस प्रकार विष्णु सर्व व्यापक हैं उसी प्रकार उनकी दिव्य शक्ति महालक्ष्मी भी सर्वव्यापिका हैं, लक्ष्मी की कृपा दृष्टि से निर्गुण मनुष्य में भी ज्ञान, गम्भीरता, तेज सौभाग्य, सुख सहित सभी गुण प्राप्त हो जाते हैं, और सबके लिए वह आदर और श्रद्धा का पात्र बन जाता है। ✱

शिव पूजा साधना–उपासना

यदि कोई परम तत्व है, परम स्थिति है, परम प्रकाश है, और परमेश्वर है–तो वह शिव ही हैं, जो जाग्रत, स्वप्न और सुप्त तीनों अवस्थाओं से परे है–वह शिव ही हैं, जो ॐकार स्वरूप हैं, दिव्य ज्ञान हैं, समस्त शक्तियों के मूल आश्रय हैं वह शिव ही हैं, जो सबके रक्षक, सब सिद्धियों के स्वरूप, ज्ञान, बल, इच्छा, क्रिया-शक्ति के सम्पूर्ण तत्व, देवों के देव महादेव हैं–वह शिव ही हैं।

जो स्वयं साकार-निराकार दोनों स्वरूपों में हैं, पृथ्वी तत्व के स्वामी हैं, अर्थात् किसी भी प्रकार का भार उठाने में समर्थ हैं, जो मन्त्र तथा तन्त्र के चरम स्वरूप हैं सृष्टि के नियन्ता हैं, तथा अपने पास कुछ भी नहीं रखते हुए अपने साधकों, भक्तों पर परम प्रसन्न हो कर सभी ऐश्वर्य, सौभाग्य प्रदान कर देते हैं, वह शिव ही तो हैं, जो गणों, भूतों-पिशाचों में भी पूज्य हैं, और योगियों व देवताओं में भी आराध्य हैं, जो महामृत्युंजय है, शक्ति के स्वरूप हैं, क्योंकि जहां शिव हैं वहीं शक्ति है, वे शिव ही तो हैं, ऐसी कोई सिद्धि नहीं, ऐसा कोई ज्ञान नहीं, ऐसा कोई निर्वाण नहीं, जो शिव साधना से प्राप्त न होता हो।

कुबेर ने शिव की साधना से धनपति पद प्राप्त किया, इन्द्र ने अमोघ वज्र, ब्रह्मा ने पूर्ण चैतन्त सिद्धि, रावण ने स्वर्ण लंका, तो फिर साधारण जन में शिव के विभिन्न स्वरूपों के पूजा-साधना का इतना अधिक विधान है, तो आश्चर्य ही क्या ?

शिवत्व है पुरुषार्थ, प्रेम, शक्तिमान, सौभाग्य, बल, साहस, सिद्धि, सभी तांत्रिक साधनाएं शिव साधना का स्वरूप ही हैं, शिव की कृपा से कोई अधूरा नहीं रह सकता, चाहे वह किसी भी अवस्था में हो, किसी भी स्वरूप में हो, किसी भी रूप से उसने साधना भक्ति की हो, शिव अर्द्धनारीश्वर हैं, त्रिनेत्र हैं, ध्यानमग्न हैं, लेकिन उनसे कुछ भी अछूता नहीं है, वे पार्थिव भी हैं, और साकार भी, पार्थिव स्वरूप में शिवलिंग रूप में पूजित होते हैं, और साकार रूप में मूर्ति, चित्र, यन्त्र स्वरूप में पूजित होते हैं, शिव के साधक को न तो अपमृत्यु का भय रहता है, और न ही रोग का, और न ही शोक का, क्योंकि जहां शिव हैं वहां यमराज भी नहीं आ सकते, शिवत्व तो एक रक्षा चक्र है, शक्ति चक्र है ब्रह्म चक्र है, जो साधक को हर प्रकार से सुरक्षित कर देता है।

शिव साधना के नियम

शिव की साधना के नियम अत्यन्त सरल हैं, साधक भय-रहित होकर, अपना इष्ट मानते हुए शिव की पूजा, अर्चना, ध्यान करें।

१-शिव पूजन में साधक ललाट पर लाल चन्दन का त्रिपुण्ड और बाहों पर भस्म अवश्य लगाएं।

२-शिव साधना में रुद्राक्ष माला से ही मंत्र जप करना आवश्यक है।

३-शिव पूजा में श्वेत पुष्प, धतूरे का पुष्प तथा औंधा अर्थात् उल्टा (तीन पत्तियों से युक्त) बिल्व पत्र और दुग्ध मिश्रित जल धारा अर्पित करनी चाहिए।

४-शिव मंदिर में प्रदक्षिणा आधी ही होती है, अर्थात् पीछे जहां जल धारा बहती है जिसे सोमसूत्र कहा जाता है, वहां से प्रारम्भ कर आगे नन्दीश्वर तक ही करनी चाहिए, पूर्ण परिक्रमा सर्वथा वर्जित है।

५-शिव की स्तुतियां अभिषेक तो हजारों हैं, लेकिन पंचाक्षरी मन्त्र 'नमः शिवाय' का पाठ अवश्य ही करना चाहिए।

शिव पूजा साधना

साधक शिव साधना घर पर भी कर सकता है, और मंदिर में त्रयोदशी को भी जो प्रदोष कहलाती है, यह शिव प्रदोष व्रत है तथा प्रत्येक मास की कृष्ण चतुर्दशी मास शिवरात्रि कही जाती है, इन दिनों में शिव साधना प्रारम्भ की जा सकती है, सोमवार ही शिव का दिन है।

प्रातः स्नान कर अपने सामने दो ताम्र पात्र स्थापित करें, एक में 'शिव यन्त्र' तथा दूसरे में 'शिवलिंग' स्थापित करें, गृहस्थ साधक को अंगुष्ठ प्रमाण अर्थात् अंगूठे के बराबर शिवलिंग स्थापित करना चाहिए, शिव-लिंगों में भी नर्मदा का बाणलिंग सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, जो कि पूर्ण सिद्धि, भक्ति, मुक्ति प्रदायक है, लिंग के साथ वेदी अवश्य होनी चाहिए, वेदी-तांबा, स्फटिक, सोना, पत्थर अथवा चांदी की बनाई जा सकती है।

वेदी, महादेवी अर्थात् शक्ति का स्वरूप है, और लिंग मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा उपर शिव स्वरूप है, इसी कारण एक शिवलिंग की पूजा से सभी पूजाओं का फल प्राप्त होता है।

प्रातः शुद्ध वस्त्र धारण कर, सर्वप्रथम स्थान शुद्धि, आसन शुद्धि कर, शिव का ध्यान करें, तथा रक्त चंदन से यंत्र पूजा कर, एक सुपारी रखें, चावल चढ़ाएं और एक बिल्व पत्र अर्पित करें, उसके पश्चात् एक माला 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप बोलते हुए करें, इसके पश्चात् शिवलिंग पूजन करें, सर्वप्रथम शिव का ध्यान कर लिंग के मस्तक पर एक पुष्प चढ़ाएं, और निम्न मन्त्र से शिव का आह्वान करें—

आह्वान मन्त्र

"ॐ पिनाक-धृक् इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्नि-रुद्धस्व, यावत् पूजां करोम्यहं। स्थानीयं पशुपतये नमः। एतत् पाद्यं नमः शिवाय।।"

इसके पश्चात् 'ॐ शूलपाणे इह शू प्रतिष्ठितो भवः' इस मन्त्र से लिंग प्रतिष्ठा करें, और 'ॐ पशुपतेय नमः' मंत्र से लिंग के मस्तक पर तीन बार जल चढ़ाएं, फिर चावल अर्पित करें, उसके पश्चात् बिल्व पत्र चढ़ा और शिव की अष्ट मूर्ति पूजा, गन्ध पुष्प द्वारा क्रमशः करें—

एते गन्धपुष्पे ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ भवाय जलमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

इसके पश्चात् मंत्र जप करें, मंत्र जप अपने कार्य के अनुसार करना चाहिए।

१- **ॐ नमः शिवाय**, यह सुख और सौभाग्य प्रदान करने वाला मूल शिव मंत्र है, इसकी पांच माला प्रतिदिन जप करना चाहिए।

२- 'ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं' यह अष्टाक्षर शिव मंत्र शत्रु बाधा निवारण व भय-नाशक मंत्र है।

३- 'रं क्षं मं यं ओं अं' यह सर्व सिद्धि प्रदायक गृहस्थ सुख-शान्ति, संतान प्राप्ति का शिव मन्त्र है।

४- महामृत्युंजय मन्त्र—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

यह मंत्र नहीं अपितु ऐसा चमत्कारी विधान है जिसके जप करने से अकाल मृत्यु, रोग, बाधा, निर्बलता निश्चित रूप से दूर हो जाते हैं।

शिव पूजा में शुद्ध शिव यन्त्र तथा शुद्ध शिवलिंग–जो प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो, का ही प्रयोग करना चाहिए, अन्यथा सिद्धि के स्थान पर क्षति, अर्थात् निश्चित हानि भी हो सकती है। ★

इस महाशिवरात्रि के महान् पुनीत अवसर पर काठमाण्डू (नेपाल) में ११-१२-१३ फरवरी ९१ को "शिव लक्ष्मी साधना शिविर" का आयोजन है, इस संबंध में पूर्ण जानकारी एवं स्वीकृति हेतु, पत्रिका कार्यालय जोधपुर से तत्काल सम्पर्क करें, जिससे आपका स्थान सुरक्षित किया जा सके।

आदि शक्ति महादुर्गा पूजा-साधना-उपासना

शक्ति का तात्पर्य है प्रकृति, माया अर्थात् जिसने प्रकृति के माया के विशाल भण्डार में से एक अंश को भी अपने अधीन कर लिया, वही शक्ति युक्त है, जहां शक्ति है, वहां दुःख, दुर्वेष्णा, दारिद्र्य, दुर्भाग्य, अधर्म, अन्याय, आलस्य नहीं हो सकता, जहां शक्ति है वहां सौभाग्य, सम्पन्नता, शुद्धि, सिद्धि, बुद्धि, विद्या, ज्ञान, ऐश्वर्य, अग्नि, अजेयता है, शक्ति अग्नि तत्व की स्वामिनी है, जो शान्त नहीं रह सकती, इसीलिए उपनिषद में कथन है, कि महादेव ही शक्ति के रूप में ईश्वर हैं, शक्ति के बिना शव रूप हैं, शक्ति बिना किसी भी प्रकार का कार्य सम्पन्न हो ही नहीं सकता, तो फिर इस आधारभूत शक्ति की साधना-उपासना साधक पूर्ण रूप से सम्पन्न क्यों नहीं करता ?

शक्ति सगुण और निर्गुण, दोनों स्वरूपों में है, शक्ति के स्वरूप—तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, तुष्टि, पुष्टि कान्ति, लज्जा तो हैं ही इस महाशक्ति का स्वरूप ही लक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री है, जब शक्ति सर्व सम्पन्न रूप में होती है, तो यह अपनी प्रकृति के अनुसार लक्ष्मी कहलाती है, तो चण्डी, काली, तारा, गौरी, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, भैरवी इत्यादि अपने गुणों के अनुसार नाम धारण करती है ।

शक्ति और साधक

जिस प्रकार अग्नि केवल हवा में नहीं रह सकती, उसी प्रकार शक्ति भी शक्तिमान के बिना अर्थात् साधक के बिना नहीं रह सकती, यह तो उससे जुड़ी हुई एक विशेष शक्ति है, जो केवल जन्म से ही उसके साथ हो, आवश्यक नहीं, अपितु उसकी साधना, इच्छा के अनुरूप प्रवाहित होती है ।

शक्ति, साधक को गतिशील बनाती है, जिस प्रकार अग्नि तीव्र होने पर, ऊपर उठती है, उसी प्रकार साधक के भीतर शक्ति तत्व का विकास होने पर वह अपने जीवन में ऊपर ही उठता जाता है, अपने दुर्भाग्य पर, अपनी दीनता पर, अपने आपको हीन समझने वाले साधक को तो शक्ति कभी प्राप्त हो ही नहीं सकती, जब वह स्वयं उठ खड़ा होता है, साधना करता है तो उसके भीतर छिपी शक्ति का विस्फोट होता है, और यह निश्चित है, कि एक शक्ति दूसरी शक्ति से जुड़ी है, तभी तो शक्ति साधक की पूर्णता करती है, माया और प्रकृति को उसके वश में करती है, यह महाशक्ति ही मायाधीश्वरी है, आद्या नारायणी शक्ति है, नारायण की महालक्ष्मी है, शिव की पार्वती है, गणेश की ऋद्धि-सिद्धि है, सूर्य की ऊषा है, इसके बिना तो सब कुछ अधूरा है ।

आदिशक्ति - महादुर्गा

दुर्गा को ही आदिशक्ति माना गया है, जिससे सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है और यही परब्रह्म-स्वरूपा, परम तेज स्वरूपा, सर्वेश्वरी, विश्व जननी, मूल प्रकृति, ईश्वरी है, आदि देवी दुर्गा से ही मरुद्गण, गन्धर्व अप्सरा, इन्द्र अग्नि, अश्विनी कुमार की उत्पत्ति हुई, और देवो के तेज स्वरूप में महाकाली के अतिरिक्त, धूमावती इत्यादि का प्रादुर्भाव हुआ, जो सब संसार की शत्रु बाधा को नष्ट करने मे समर्थ हैं ।

दुर्गा की साधना सभी प्रकार के साधकों को अवश्य ही करनी चाहिए, जिससे अष्ट सिद्धियां, विजय, लक्ष्मी, दीर्घायु प्राप्त होती है, जिससे किसी भी प्रकार की रोग-बाधा, कष्ट-बाधा दूर हो जाती है, दुर्गा साधना हेतु वर्ष की चारों नवरात्रि के अतिरिक्त किसी भी पक्ष की अष्टमी अथवा मंगलवार को प्रारम्भ की जा सकती है।

दुर्गा पूजा का मूल आधार **'शक्ति का धातु यन्त्र'** ही है अतः इस दुर्गा यन्त्र को जो चार द्वार, तीन वृत्त, आठ कमल, षट्कोण वाले विदुमय श्रीचक्र से पूर्ण हो, तथा प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, उसे अपने सामने लाल वस्त्र बिछा कर, मध्य में ताम्र पात्र रख कर, चावल का आसन देकर, यन्त्र को घी तथा दूध से शुद्ध कर, फिर जल धारा से स्वच्छ कर, सुगन्धित पुष्प के ऊपर स्थापित करना चाहिए।

तत्पश्चात् साधक सर्वप्रथम पुष्पांजलि अर्पित कर, देवी का ध्यान करे कि शंख, चक्र, कृपाण, त्रिशूल धारण किये हुए त्रिनेत्री, सिंह पर आरूढ़, अपने तेज से तीनों लोकों को परिपूर्ण करने वाली, जिसके चारों ओर देवता स्थित हैं, और सिद्धि की इच्छा रखने वाले सेवारत हैं, उन जया-दुर्गा का मैं ध्यान करता हूं।

अपने पूजा स्थान में एक ओर घी का दीपक अवश्य जलाएं फिर नवदुर्गा चक्र स्थापित कर, नौ पुष्प चढ़ाएं और नवपीठ शक्तियों का पूजा निम्न मन्त्रों से सम्पन्न करें—

ॐ प्रभायै नमः।
ॐ मायायै नमः।
ॐ जयायै नमः।
ॐ सूक्ष्मायै नमः।
ॐ विशुद्धायै नमः।
ॐ नन्दिन्यै नमः।
ॐ सुप्रभायै नमः।
ॐ विजयायै नमः।
ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः।

इसके पश्चात् सामने जल अर्पित करें, अष्ट सिद्धियों की स्वामिनी दुर्गा के अष्टाक्षर मन्त्र का जप 'स्फटिक माला' से सम्पन्न करें, प्रथम पूजन के दिन पांच माला मंत्र जप आवश्यक है।

दुर्गा मन्त्र

।। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।।

दुर्गा साधना का यह प्रयोग पूर्ण हो जाने पर दुर्गा आरती सम्पन्न करें, तथा पुनः एक सुगन्धित पुष्पों की माला अवश्य चढ़ाएं।

दुर्गा पूजा साधना-आराधना का क्षेत्र एवं महिमा अत्यन्त विशाल है, क्योंकि इसकी साधनाओं के विविध स्वरूपों में शान्तिकारक, पुष्टिकारक तथा लक्ष्मी प्रदायक प्रयोग तो है ही, देवी के विभिन्न मंत्रों का विभिन्न प्रकार की तांत्रिक सामग्रियों सहित स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण एवं उच्चाटन में भी प्रयोग किया जाता है।

महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती

व्यक्ति वही पूर्ण है, जिसमें बल पराक्रम हो, धन-धान्य अर्थात् पैसा हो, ज्ञान एवं वाणी में सिद्ध हो, और इन तीनों गुणों का साक्षात् स्वरूप महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती हैं, जो कि देवी के तीन प्रधान स्वरूप हैं।

नवार्ण मंत्र

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।।

इन साधनाओं को सम्पन्न करने से पहले साधक को देवी की मूल दुर्गा साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

पूर्ण सफलता प्राप्त होती है

कार्तिकेय साधना से

(कलियुग में एक अद्वितीय साधना)

पूरे भारत वर्ष में देवता पूजन का विधान विशेष रूप से है, इसमें कुछ पूजाएं ही ऐसी हैं जिन्हें उत्तर भारत में भी उतनी ही मान्यता है जितनी दक्षिण भारत में, गणपति की पूजा के बारे में सामान्य साधक भी जानता है, शिव की पूजा भी करता है लेकिन ये दोनों ही पूजाएं अधूरी ही हैं, ये पूजाएं कार्तिकेय पूजन के साथ ही संपन्न की जानी चाहिए।

कार्तिकेय रहस्य

कार्तिकेय, भगवान शंकर के ज्येष्ठ पुत्र हैं और देवताओं के रक्षक, रक्षा, विजय, संहार, पराक्रम के देव एवं शीघ्र प्रसन्न होने वाले, निश्चित सिद्धि प्रदाता माने जाते हैं, कश्मीर में, दक्षिण भारत में विशेष मन्दिर तथा तीर्थ स्थान हैं, दक्षिण में इन्हें प्रधान देव माना गया है, भगवान सुब्रह्मण्य के नाम से इनकी विशेष पूजा-साधना की जाती है, जिस प्रकार उत्तर भारत में 'गणेशाय नमः' अथवा किसी भी कार्य से पहले गणेश पूजा का विधान है उसी प्रकार पूरे दक्षिण भारत क्षेत्र में 'श्री मुरुगन नमः' जन-जन में व्याप्त है, इनके अन्य नाम हैं—स्कन्द, षडान, षड्मुख, शक्तिधर, आग्नेय, कुमार इत्यादि प्रमुख हैं, शिव और पार्वती के एकमात्र पुत्र, श्री गणेश तो योगपुत्र हैं।

'शारदा तिलक' तथा 'श्री तत्व निधि' ग्रन्थों में इनकी उपासना का विस्तृत वर्णन दिया गया है, कार्तिकेय के मुरुगुन नाम में 'मुरुगु' शब्द का तात्पर्य है, **सौन्दर्य, ताजगी, सौरभ, माधुर्य, दिव्यता तथा आनन्द** और सुब्रह्मण्य का तात्पर्य है ज्ञान, लक्ष्मी, शत्रुनाश, मृत्युंजय, निरोगता और इन सब तत्वों की प्राप्ति कार्तिकेय साधना से होती है, कार्तिकेय के छः मुख—**ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य** के प्रतीक हैं, और यह सिद्ध बात है कि जहां सुब्रह्मण्य अर्थात् कार्तिकेय की पूजा होती है, वहां ज्ञान है, वर प्राप्ति है, ग्रह रक्षा है, धर्म और वेद हैं, बल है, दुष्टों का नाश है, शक्ति है।

कार्तिकेय पूजन विधान

गृहस्थ लोगों के लिए ही कार्तिकेय पूजा का विशेष विधान है, क्योंकि कार्तिकेय रक्षाकारक देव हैं, गृहस्थ को ही धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, का वर आवश्यक है, गृहस्थ को ही शत्रुबाधा से रक्षा निरोगता, और श्री अर्थात् लक्ष्मी और प्रसिद्धि आवश्यक है, और सबसे बड़ी बात यह है कि कार्तिकेय साधना अत्यन्त सरल है।

कार्तिकेय साधना हेतु षष्ठी तिथि उत्तम मानी गई है, इसके अतिरिक्त उत्तरा तथा कृतिका नक्षत्र, 'स्कन्द'

नक्षत्र माने गये हैं, पूरे परिवार के साथ यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

कार्तिकेय पूजा में सर्वप्रथम तो गणेश की पूजा की जाती है, पूरे पूजन के पश्चात् भी गणेश का पूजन पुनः किया जाता है, क्योंकि श्री गणेश, कार्तिकेय के लघु भ्राता हैं।

इस साधना हेतु ताम्रपात्र में शुद्ध जल, तेल, चंदन, पंचामृत-दूध, दही, घी, शहद और शक्कर, तुलसी पत्र तथा विभूति आवश्यक है, कार्तिकेय नैवेद्य में शहद तथा पीसा हुआ बाजरा विशेष रूप से अर्पित किया जाता है।

साधना क्रम में एक विशेष पीठ बना कर उस पर **'कार्तिकेय यन्त्र'** स्थापित करें, इसके साथ एक ओर अग्नि दीप अर्थात् तेल का दीपक दूसरी ओर भाले के आकार का शूल तथा लाल रंग के कपड़े से बनाई हुई पताका (झण्डा) अवश्य स्थापित करना चाहिए, यह शूलशक्ति का प्रतीक है, कार्तिकेय का मूल अस्त्र है, तथा पताका विजय का प्रतीक है।

सर्वप्रथम पूजा स्थान में एक ओर गणपति स्थापित कर गणपति पूजन करें, फिर कार्तिकेय यन्त्र के चारों ओर चावल की आठ ढेरी बना कर आठ सुपारी रखें, और क्रमशः **इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर और ईशान** की स्थापना कर, प्रत्येक को हाथ जोड़ कर नमस्कार कर कुंकुम तथा पुष्प अर्पित करें, तत्पश्चात् कार्तिकेय आयुधों, शूल, पताका तथा दीप का पूजन करें, इसके पश्चात् भगवान सुब्रह्मण्य का ध्यान करते हुए उनके रक्त वर्णीय अर्थात् लाल वस्त्र, लाल शोभा एवं रक्त मुख का ध्यान करते हुए आह्वान करें, सर्वप्रथम शुद्ध जल यन्त्र के सामने पात्र में अर्पित करें, फिर तेल अर्पित करें, यन्त्र पर भस्म लगाएं तथा एक दूसरे पात्र में यन्त्र रख कर कार्तिकेय बीज मन्त्र का जप करते हुए पंचामृत चढ़ाएं।

कार्तिकेय बीजमन्त्र

॥ ॐ मुरुगुवै नमः ॥

'स्फटिक माला' से एक माला बीज मन्त्र का जप करते हुए निरन्तर पंचामृत को यन्त्र पर अर्पित करते रहें, इस पंचामृत को परिवार के सभी सदस्यों को ग्रहण करना चाहिए, पूजन का यह पंचामृत सर्व रोगनाशक है।

शरीर से निर्बल, निरन्तर बीमार रहने वाले व्यक्ति द्वारा यदि सात दिन निरन्तर पूजन कर यह पंचामृत ग्रहण किया जाय तो उसका रोग चाहे वह शारीरिक हो अथवा मानसिक, शान्त हो ही जाता है।

के पश्चात् लाल रंग की पुष्प माला तथा पुष्प कार्तिकेय देव को अर्पित करें, और पात्र में रखा जल पूरे घर में थोड़ा-थोड़ा अवश्य छिड़कें, विजय पताका अपने घर के ऊपर लगानी चाहिए, इससे कभी भी घर पर शत्रु प्रभाव अथवा तांत्रिक क्रिया दोष नहीं पड़ता।

भगवान कार्तिकेय इच्छा शक्ति क्रिया शक्ति तथा ज्ञान शक्ति के शुद्ध स्वरूप हैं, कार्तिकेय शिव और शक्ति के मिलन के विशुद्ध रूप हैं, जहां कार्तिकेय हैं वहीं शिव भी हैं और शक्ति भी हैं।

पूजन के पश्चात् आठ छोटे बालकों को कार्तिकेय कुमार की आत्मा मानते हुए भोजन कराना चाहिए, कार्तिकेय पूजा साधना से संतान, विजय, आयु, शक्ति, निर्भयता, लक्ष्मी, यश इत्यादि की प्राप्ति निश्चित रूप से होती है, इसीलिए इनका स्वरूप सम्पूर्ण प्रसन्न अत्यन्त पुण्यमय एवं समस्त मंगल प्रदान करने वाला है।

कौन कहता है कि साधना-सिद्धि कठिन है

शिव रचित सरल साधनाएं

अचूक साबर साधनाएं

जो हर कोई कर सकता है—अवश्य करे

साबर साधनाओं का इतिहास भी उतना ही पुराना है, जितना वेदोक्त साधनाओं का, हर व्यक्ति संस्कृत साहित्य का विद्वान नहीं बन सकता, सम्पूर्ण पूजन विधि का ज्ञान नहीं होता, अपने जीवन में दिन प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान के लिए क्या करें ? इसका एक ही उत्तर है साबर साधनाएं-जिन्हें भगवान शिव ने स्वयं अपने श्रीमुख से युग-धर्म को देखते हुए सामान्य साधकों के लिए उच्चारित किया।

आज यह सिद्ध है कि साबर साधनाओं का प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है, आवश्यकता केवल इस बात की है, कि पूर्ण श्रद्धा, विश्वास के साथ साधना सम्पन्न की जाय, साधक को गुरु कृपा का आशीर्वाद निरन्तर प्राप्त होता रहे तब तो हिमालय भी उसके सामने छोटा ही है।

साधना क्या है ? साधना तो आत्मा से निकली हुई भाषा है, आह्वान है, जिसे साधक अपनी समस्याओं, बाधाओं को दूर करने के लिए, अपने जीवन में निरन्तर श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए शक्ति को जाग्रत करता है, इसके लिए साधक की भावना प्रबल होना सबसे अधिक आवश्यक हैं और यही तो साबर साधना का रहस्य है, जहां श्रद्धा है, गुरु कृपा है, सरलता है, वहीं साबर सिद्धि है।

साबर साधना : महत्वपूर्ण तथ्य

साबर साधना कोई भी व्यक्ति, पुरुष अथवा स्त्री, किसी भी आयु में सम्पन्न कर सकता है, साधना के समय घी अथवा तेल के दीपक के अलावा अगरबत्ती तथा धूप अवश्य जलाना चाहिए, साबर साधना में कुछ विशेष कार्यों हेतु ही साधना उपकरणों की आवश्यकता रहती है और ये सामग्रियां शुद्ध तथा प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए,

किसी भी मुहूर्त में साधना की जा सकती है, इस हेतु रात्रि का समय विशेष प्रभावकारी माना गया है।

साबर साधना में सर्वाधिक महत्व गुरु का होता है, अतः गुरु पूजा मंत्र और विम्ब द्वारा सम्पन्न कर ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे साधना काल के दौरान भयंकर दृश्य अथवा बाधाएं विपरीत प्रभाव नहीं दे पाती हैं, साधना काल में एक समय का ही भोजन करना उचित रहता है।

साबर साधनाएं अत्यन्त सरल और सामान्य जन के लिए हैं, इस कारण इसमें किसी प्रकार की त्रुटि रह भी जाती है तो कोई हानि नहीं पहुंचाती, ये साधनाएं अपने दैनिक क्रिया कलाप के साथ सम्पन्न की जा सकती है, पूर्ण श्रद्धा और विश्वास हो तभी ये साधनाएं करनी चाहिए।

साबर शाह, ओंकारा स्वामी, अमरकण्टक के बाबा औघड़नाथ, भैरवघाटी के निर्भयानन्द कुछ ऐसे साबर साधनाओं के विद्वान हैं जिनके साथ पूज्य गुरुदेव का विचार विमर्श चलता ही रहता है,

साबर साधना—विशेष सावधानी

जब भी कोई व्यक्ति किसी गन्दी विचारधारा से किसी प्रकार से तन्त्र का प्रयोग करता है तो सफलता के स्थान पर उसे हानि ही उठानी पड़ती है, और साबर साधनाओं में तो यह बात विशेष रूप से लागू होती है, किसी गलत कार्य को करने हेतु अथवा गलत उद्देश्य से यह साधना वर्जित है, शत्रु का नाश होना चाहिए, यह सही बात है, लेकिन आप जान बूझ कर अपने आनन्द के लिए किसी सही व्यक्ति पर तन्त्र प्रयोग करते हैं तो यह गलत है।

नीचे कुछ विशेष साबर मन्त्र और उसकी विधि स्पष्ट की जा रही है, जो विधि अनुसार ही सम्पन्न करनी चाहिए।

वशीकरण साबर सिद्धि प्रयोग

वास्तव में ही वशीकरण साबर सिद्धि प्रयोग एक अत्यधिक गोपनीय तथा महत्वपूर्ण प्रयोग रहा है, जिसका प्रभाव गोली की तरह असर करता है, यह प्रयोग बहुत ही कम लोगों को ज्ञात है। क्रतवेणु ने जिस प्रकार से प्रयोग किया वह निम्न प्रकार से है।

रविवार को प्रातः सूर्योदय के समय स्नान करके सफेद धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय, नीचे काले कम्बल या काले ऊनी वस्त्र का आसन हो, जमीन पर कुंकुंम (रोली) से सात खड़ी लाइनें और सात आड़ी लाइनें खींच लें, इस प्रकार ३६ कोष्ठक बन जाएंगे, फिर प्रत्येक कोष्ठक में कोई न कोई पदार्थ खाने योग्य रख दें, जैसे किसी में बादाम का एक टुकड़ा, किसी में काजू, अखरोट, दूध का प्रसाद या कुछ भी, फिर उसके मध्य में मन्त्र सिद्ध दुर्लभ **'हत्था जोड़ी'** रख दें और उसके ऊपर सात लौंग तथा सात काली मिर्च के दाने रख दें, तत्पश्चात् वहीं बैठ कर चारों ओर चार दिशाओं में तेल के दीपक लगा लें तथा **'हकीक माला'** से निम्न मन्त्र की ११ माला फेरें।

मन्त्र

सवा मन का भावना लोहे की जंजीर हाथी आवे झूमता कमाल खां असवार खडे बोलो अर्ज करे गुर्ज पटके हौज हुई जाय अब की कवना मेरो करो, भंग का प्याला जाय पियो हिन्दू की राम कहे मुसलमान की कलमा मुहम्मद नाम पढ़े सत्तर काम तेरे, एक काम मेरा करके न बताये तो कसम है।

यह मन्त्र देखने में भले ही सीधा सादा हो पर इसका जितनी बार भी प्रयोग किया गया उतनी ही बार आश्चर्यजनक परिणाम दिखाये, ११ माला मन्त्र जप करने के बाद वह हत्थाजोड़ी किसी चांदी या तांबे की डिब्बी में बन्द करके अपनी जेब में रख लें और उसके ऊपर जो सात काली मिर्च और लौंग रखे हुए थे, चबा कर पानी के साथ निगल जांय।

छत्तीस कोष्ठकों में जो खाद्य सामग्री रखी हुई थी, वह एक कटोरी में इकट्ठी कर लें और उसमें से थोड़ा सा प्रसाद किसी भी युक्ति से जिसे वश में करना हो, उसे खिला दें, तो वह तुरन्त वश में हो जाता है, तथा

जीवन भर विश्वास पात्र बना रहता है, बाकी बचा खाद्य पदार्थ किसी डिब्बी में बन्द करके रख देना चाहिए और जब-जब भी उसके व्यवहार में कुछ कमी अनुभव हो तब-तब वह पदार्थ किसी युक्ति से उसे खिला दें तो वह पुनः नियन्त्रण में बना रहता है।

यह प्रयोग पुरुष द्वारा किसी भी अन्य पुरुष या अधिकारी पर, शत्रु पर या किसी भी मित्र पर किया जा सकता है, जिससे कि वह जीवन भर अनुकूल बना रह सके। मन्त्र जप के पश्चात् कुंकुम (रोली) से जो लकीरें खींची थी, मिटा दें और जमीन साफ कर लें।

भूत-प्रेत बाधा उतारने का साबर प्रयोग

शुक्रवार से शुरू कर अगले शुक्रवार तक नित्य ग्यारह माला रात को फेरें, निम्न मन्त्र को सिद्ध करते समय सामने तेल का दीपक लगे और **'हनुमान की चौकी'** जो कि ताबीज के आकार की होती है रखें, उस चौकी पर नजर डालता हुआ **'हकीक माला'** से मन्त्र जपें।

अगले शुक्रवार को जब मन्त्र पूरा हो जाय तो चौकी को काले धागे में पिरो कर दाहिनी भुजा पर बांध दें, जिससे कि जीवन भर उसकी रक्षा रहेगी और कोई तकलीफ नहीं होगी।

फिर जब किसी को भूत प्रेत लगा हो तब नीचे लिखे मन्त्र का तीन बार उच्चारण चिमटे से जमीन पर पीटते हुए करें, तो उसका भूत-प्रेत चीखता-चिल्लाता हुआ भाग जाता है, और फिर कभी भी उसे कष्ट नहीं होता।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का पिण्ड प्राण छोड़े देव दानव भूत-प्रेत डाकिनी तुरन्त छोड़े दूसरी ठौर करे, इसकी रक्षा हनुमत बीर करे, जो न करे तो मां अंजनी की दुहाई, सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

आर्थिक उन्नति का साबर प्रयोग

स्वयं बुधवार को सुबह सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जांय, सामने **'सुलेमानी हकीक'** रख दें और उस पर नजर डालता हुआ पांच माला मन्त्र जप करें, **'स्फटिक माला'** से मन्त्र जप हो, मन्त्र जप के बाद उस सुलेमानी हकीक को अंगूठी में जड़वा कर धारण कर लें तो जिस कार्य या व्यापार में हाथ डालें वह पूरी तरह से सफल हो, बेतहासा धन प्राप्त हो।

मन्त्र

ॐ नमो भगवती पद्मा श्रीं ॐ ह्रीं पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम धन द्रव्य आवे सर्वजन्य वश्य कुरु कुरु नमः।

इसे एक ही दिन में पांच माला मन्त्र जप से ही सिद्ध किया जाता है।

शत्रु स्तम्भन साबर प्रयोग

अमावस्या की रात्रि को काली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय, सामने **'सात गोमती चक्र'** रख दें और उन पर कुंकुम की बिन्दियां लगावें, फिर **'हकीक माला'** से ११ माला मंत्र जप करें।

मन्त्र

ॐ वीर वैताल धरती कांपै गगन गरजे मेरे शत्रु "अमुक" का नाश करे मेरे मन को शूल दूर करे "अमुक" कार्य में सफलता दे जो न दे तो रुद्र को त्रिशूल खावे।

११ माला मन्त्र जप होने के बाद वे सातों गोमती चक्र घर के बाहर जमीन में गाड़ दें तो निश्चय ही उसे इच्छित कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

इस मन्त्र में पहले 'अमुक' के स्थान पर शत्रु का नाम लें और दूसरे अमुक के स्थान पर उस कार्य का उल्लेख करें जो कार्य जल्दी से जल्दी सम्पन्न करना चाहते हैं।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, गोमती चक्र पूर्ण शत्रु स्तम्भन मन्त्र से सिद्ध हो, मन्त्र जप में हकीक माला का ही प्रयोग होना चाहिए।

पूर्ण गृहस्थ सुख साबर प्रयोग

पूर्ण गृहस्थ सुख बहुत कम व्यक्तियों के भाग्य में मिलता है, पति पत्नी के विचारों में मतभेद, घर में नित्य कलह, निरन्तर व्यय चलते ही रहते हैं तो फिर जीवन का आनन्द कहां ?

इस साधना हेतु दो मन्त्र प्रयोग विशेष रूप से प्रस्तुत हैं, पहले प्रयोग से घर की बाधाओं, विपत्तियों का नाश होता है और किसी की नजर का प्रभाव भी नहीं पड़ता, इस हेतु किसी भी शनिवार को अपने सामने **'गृह बाधा हरण यन्त्र'** रात्रि को स्थापित करें, सामने गुग्गल का धूप जलाएं तथा मिठाई, फल, पुष्प तथा तेल रखें और दूसरी ओर घी का दीपक जलाएं, यन्त्र के चारों ओर काजल से एक गोल घेरा लगा दें और २१ दिन तक एक माला मन्त्र जप अवश्य करें, इसमें मन्त्र सिद्ध **'पलान्जा काष्ट'** का प्रयोग विशेष है, इसे घेरे के बाहर रखें, और साधना पूर्ण होने पर अपने घर के बाहर गाड़ दें।

मन्त्र

॥ ॐ शं शां शिं शीं शुं शूं शें शैं शों शौं शं शः स्वः सं स्वाहा ॥

दूसरा प्रयोग

साधक मन्त्र का जप कर दो पुड़िया बनाएं एक पुड़िया में एक मुट्ठी सरसों और **'गोमतीचक्र'** बांधें और उस पर अपना नाम लिखें, दूसरी पुड़िया में भी एक मुट्ठी सरसों तथा गोमतीचक्र रखें, और पत्नी अथवा प्रेमिका का नाम लिखें, दोनों पुड़ियाओं पर मन्त्र जप के समय सिन्दूर लगाएं, एक माला मन्त्र जप एक पुड़िया को सामने रख कर करें और दूसरी माला मन्त्र जप दूसरी पुड़िया सामने रख सिन्दूर चढ़ा कर करें, मन्त्र जप के पश्चात् दोनों पुड़ियाओं को साथ-साथ बांध कर भूमि में गाड़ दें तो अत्यन्त प्रेम रहता है।

मन्त्र

बिसमिल्ला मेहमंद पीर आवे घोड़े की असवारी पवन को वेग मन को संभाले अनुकूल बनावे हां भरे कहियो करे मेहमंद पीर की दुहाई सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

सर्व रोग–पीड़ा हरण साबर प्रयोग

कभी पेट का दर्द, कभी कमर का दर्द, तो कभी बुखार, कभी सिर दर्द तो कभी आलस्य, बेचैनी इस प्रकार हर समय कोई न कोई शारीरिक पीड़ा चलती रहे तो सोमवार के दिन प्रातः साधना प्रयोग प्रारम्भ करें, अपने सामने एक ताम्र पात्र में जल रखें, इसके सामने तीन ढेरी नमक की तथा तीन ढेरी राई की बनाएं, पात्र के भीतर **'आदिशक्ति महायन्त्र'** रखें और **'स्फटिक माला'** से एक माला मन्त्र जप प्रति सोमवार करें।

ॐ नमो भगवते गरुडायामृतमयशरीराय सर्वरोगविध्वंसनाय कृत्यानेकविदारणाय भूतप्रेत पिशाचोच्चाटनाय एहि एहि गरुडादु रोगान् दूरी करो चेत्कुदाडु सटी पिशाचोच्चाटनाय एहि एहि मे गरुडादु रोगान् दूरी करो चेत्कुदाडु सटी पिशाचकुमार सारी आदि रुद्र के आणु निर्मूल करो चेत्कुदाडु आदिशक्ति के आणुमारू खिदाडी ॐ गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वर तेरो वाचा।

प्रति सोमवार मंत्र जप के पश्चात् यह जल रोगी व्यक्ति को पिला दें, तथा राई और नमक तवे पर अथवा किसी अन्य पात्र पर जला दें, और राख दूर फेंक दें, वैसे तो यह प्रयोग ग्यारह सोमवार का है, लेकिन इतना अधिक सिद्ध और अचूक साधना है, कि तीसरे सोमवार से ही प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होने लगता है।

इस युग में ये सामान्य सी दिखने वाली साधनाएं भी कैसा चमत्कारिक फल दे सकती हैं, यह तो साधक स्वयं साधनाएं कर के अनुभव कर सकेंगे। ●

आपका राशिफल—१९९१

गगन मण्डल में ग्रह संचरण, सूर्य संचरण, के प्रभाव से प्रत्येक राशि पर एक विशेष प्रभाव पड़ता है, और यही तो ज्योतिष, भविष्य गणना चक्र है, आइये देखें आपका जन्म किस विशेष राशि में हुआ है, आपको कौन से ग्रह प्रभावित कर रहे हैं ? आपका व्यक्तित्व गुण दोष क्या है और वर्तमान वर्ष १९९१ आपके लिए क्या लेकर आया है, पाश्चात्य पद्धति से प्रत्येक राशि का एक संक्षिप्त विवेचन—

मेष (२१ मार्च से २० अप्रैल तक)

सूर्य जब पूर्ण प्रभावशाली होता है, तब आपका जन्म हुआ है तथा सूर्य चहकते है और यही बात आप पर भी लागू होती है, स्वतन्त्र चिन्तन आपकी विशेषता है, दूसरों की बात अथवा आपके विपरीत कही बात आपको सहन नहीं हो पाती, स्वतन्त्र कार्य द्वारा ही आपका भाग्योदय संभव हो पायेगा, क्रोध को आप दबाये रखते है लेकिन जब अति हो जाती है तो लावे की तरह धधक उठते हैं, इससे आपको हानि भी हो जाती है, इस पर नियन्त्रण आवश्यक है, एक बार में एक ही कार्य प्रारम्भ करें, आप दस कार्यों में एक साथ हाथ डालते है इससे आपकी शक्ति बट जाती है, परिश्रम आपको कुछ विशेष ही करना पड़ता है और अपने व्यक्तित्व के बलबूते पर ही आपको विजय होगी, अपने अति आत्मविश्वास के कारण हर जोखिम में हाथ न डालें।

वर्ष १९९१

वक्री ग्रहों के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ थोड़ी अस्थिरता देगा, काम होते हुए भी मानसिक चिन्ता रहेगी २२ मार्च से मई के बीच जमीन जायदाद के मामले सुलझेंगे, आर्थिक स्थिति तथा व्यापार में बढ़ोत्तरी हो सकेगी, मई के अन्त से पूरे जून में स्वास्थ्य की दृष्टि से हलका समय है, विशेष सावधानी रखें, जुलाई के प्रारम्भ से कार्य का विस्तार करेंगे, तो नये शत्रु भी बन सकते है, लाभ में आकर गलत कार्य न करें, परिवार की सलाह अवश्य लें, अगस्त माह हलका रहेगा, तो सितम्बर तथा अक्टूबर विशेष सफलता के महीने हैं, अपनी योजनाओं को कार्य रूप में परिणित कर दें, अक्टूबर से सितम्बर के मध्य में धन लाभ होगा, तो थोड़ा खर्च पर अंकुश रखें, वर्ष के अन्त में परिवार में विशेष आयोजन तथा शुभ कार्य होंगे।

श्रेष्ठ माह—फरवरी, मार्च, सितम्बर
भाग्यशाली अंक- ३, ६ तथा ८
शुभ दिशा—उत्तर, पश्चिम
भाग्यशाली रंग—लाल, गुलाबी तथा सलेटी रंग।

वृषभ (२१ अप्रैल से २० मई तक)

स्वतन्त्र चिन्तनशील मस्तिष्क आपकी विशेषता है, ऐसे कार्यों में विशेष रुचि रहती है जो पेचीदा हो, उलझन पूर्ण हो, मशीनरी से संबंधित हो, आपकी आजीविका भी इसी से जुड़ कर आपका भाग्योदय करायेगी, मित्रों की संख्या आपके कुछ विशेष ही है, आप दूसरों को जितना सहयोग देते है, मित्रों का भी आपके जीवन में विशेष सहयोग है, उन्नति के अवसर कम मिलने के कारण निराशा जल्दी आ जाती है लेकिन आप एक से अधिक कार्य हाथ में लें, स्वास्थ्य में छोटी-मोटी बाधाएं चलती रहती है, गृहस्थ जीवन सामान्य ही रहता है, लोकप्रियता आपको जल्दी ही प्राप्त होती है, संतान के मामले में आप सौभाग्यशाली रहेंगे, धन संग्रह की इच्छा होते हुए भी आपसे धन संचय नहीं हो पाता है।

वर्ष १९९१

वक्री मंगल पीड़ाप्रद है, इस कारण सावधानी रखें, मार्च तक धैर्य से सूझबूझ से काम करें, उसके बाद कार्य

में वृद्धि होगी, अप्रैल का अन्त तथा मई का प्रारम्भ पारिवारिक स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित नहीं है, १७ अगस्त से विशेष अनुकूल ग्रह स्थिति बन रही है, किसी विशेष सामर्थ्यवान व्यक्ति के सहयोग से नये कार्य प्रारम्भ होंगे, कुछ रुके कार्य, राजकीय बाधाएं दूर होंगी, लाभ कम मिले तो कोई बात नहीं, काम को जमाये रखें, १७ अक्टूबर से १५ नवम्बर का समय विशेष श्रेष्ठ है, तीव्रता से, पूरी क्षमता से कार्य करें ।

श्रेष्ठ माह—अगस्त, अक्टूबर और नवम्बर
भाग्यशाली अंक—१, ३ और ६
शुभ दिशा—दक्षिण पूर्व
भाग्यशाली रंग—काला, हरा, बैंगनी ।

मिथुन (२१ मई से २० जून तक)

संघर्ष आपको अपने जीवन में कुछ विशेष ही करना पड़ा है, और जीवन संघर्षपूर्ण तथा परिवर्तनमय रहा है, हर कार्य में बाधायें आती हैं, और उन बाधाओं को पार करके ही आपने प्रगति की है, विपरीत परिस्थितियों से भी लड़ने की आपमें विशेष आत्म-शक्ति है, दूसरों की सलाह अवश्य लेते हैं, लेकिन करते अपने मन की ही हैं, दूसरों से सहयोग किस प्रकार लिया जाय यह आपको अच्छी तरह से मालूम है, उसी तरह दूसरों को भी सहयोग दें, अपने स्वार्थ को प्रकट न होने दें, इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी, स्वास्थ्य के मामले में विशेष ध्यान नहीं देते हैं, विनोदप्रियता आपका विशेष गुण है, लेकिन दूसरे इसे समझ नहीं पाते हैं, परिवारिक जीवन सामान्य ही कहा जा सकता है ।

वर्ष १९९१

वर्ष के प्रारम्भ में कुछ बाधाएं विशेष रहेंगी लेकिन मार्च के बाद समय सुधरेगा, शनि पूरे वर्ष थोड़ा बाधक रहेगा तथा वक्री मंगल भी आपके लिए अनुकूल नहीं है, १५ मई के पश्चात् निश्चय के साथ नया कार्य प्रारम्भ कर दें, तो उसका लाभ जून के अंत से मिलना प्रारम्भ होगा, मई में अप्रत्याशित धन व्यय, पारिवारिक रोग पीड़ा हो सकती है, इससे सावधान रहें, अगस्त तक अपनी स्थिति को मजबूत कर लें, सितम्बर से समय अनुकूल आ रहा है, तथा नवम्बर दिसम्बर अत्यन्त श्रेष्ठ है, प्रतिष्ठा के साथ-साथ आर्थिक लाभ भी विशेष रूप से होगा ।

श्रेष्ठ माह—अप्रैल, सितम्बर, दिसम्बर
भाग्यशाली अंक—३, ४, ५
शुभ दिशा—दक्षिण-पश्चिम
भाग्यशाली रंग—हल्का भूरा, आकाशीय नीला, सुनहरा ।

कर्क (२१ जून से २० जुलाई तक)

आप विशेष भावुक हैं, और थोड़ा भी संकट आ जाता है, तो आप विचलित हो जाते हैं, स्वयं पर नियंत्रण रखना सीखें, पति पत्नी में मतभेद अवश्य रहता है, दूसरों की भावना को भी समझें, आपका बजट हर समय असतुलित ही रहता है, महत्त्वाकांक्षा विशेष रूप से है, उन्नति की ओर ही विचार केन्द्रित रखते हैं, लेकिन जैसे ही थोड़ी असफलता होती है, तो अत्यन्त निराश हो जाते हैं, कार्य को प्रारम्भ करने से पहले ही निश्चय-अनिश्चय की भावना में रहते हैं, इसी कारण सफलता नहीं मिलती, परोपकारी और सरल स्वभाव आपकी विशेषता है, लेकिन मित्रों से तो आपको धोखा ही प्राप्त हुआ है, दिखावे से दूर रहें ।

वर्ष १९९१

मंगल की प्रतिकूलता मार्च तक आपको आशा-निराशा में रखेगी, इस समय अपने काम को ध्यान दे कर विशेष संभालें, २२ मार्च के पश्चात् किसी उच्च व्यक्ति से सफलता का कार्य प्रारम्भ होगा व्यापार हेतु नई स्थिति बनेगी, विरोधियों से अभी न टकराएं, मुकदमे से दूर रहें, जून तथा अगस्त स्वास्थ्य की दृष्टि से हलके महीने हैं, इस वर्ष आर्थिक दृष्टि से प्रगति की ओर रहेंगे तथा सितम्बर के पश्चात् कार्य तेजी से चलेगा, कुछ नये महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क आगे के जीवन पर प्रभाव डालेगा, जल्दबाजी न करें, पारिवारिक दृष्टि से वर्ष के पहले तीन महीनों के अलावा आगे अनुकूलता है ।

श्रेष्ठ माह—मई, अक्टूबर
भाग्यशाली अंक—१, ५, ७
शुभ दिशा—उत्तर, दक्षिण
भाग्यशाली रंग—आसमानी, भूरा, सलेटी रंग ।

सिंह (२१ जुलाई से २० अगस्त तक)

नेतृत्व आपका विशेष गुण है और आपका हाव भाव व्यवहार क्रिया-कलाप भी यही प्रगट करता है, किसी के अधीन रह कर आप कार्य नहीं कर सकते, दूसरों का विश्वास तुरन्त जीत लेते हैं, उन्हें अपना बना लेते हैं, इसी कारण समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा सम्मान है, ऐसे ही कार्य जिसमें साहस, शक्ति और सूझ-बूझ की आवश्यकता हो, हाथ में लेने चाहिए, जिससे आपके व्यक्तित्व में और अधिक तेजस्विता आ जाय, लोगों को भ्रम में बनाये रखते हैं, और एक प्रकार से रहस्यमय रूप से रहते हैं, जीवन में दूसरों द्वारा धोखा आपको मिलता है, लेकिन आप स्वभाव भी नहीं बदल पाते ।

वर्ष १९९१

शनि आपके लिए विशेष अनुकूल और बृहस्पति प्रतिकूल है, इस कारण शत्रु शान्त रहेंगे, लेकिन मित्रों का सहयोग नहीं मिलेगा, १४ फरवरी से पहले कोई पुराना मामला सुलझेगा और नये कार्य की शुरुआत होगी थोड़े व्यावहारिक बनें, दूसरों की भी बात सुनें, जिससे मतभेद न बढ़े, पत्नी से आपको इस वर्ष विशेष सहयोग मिलेगा, मई अन्त से मध्य जुलाई तक व्यापार में लाभ तथा नई संभावनाएं बढ़ेंगी और जुलाई के पश्चात् तो आपको लाभ बढ़ता ही चला जायेगा, पिछले वर्ष से यह वर्ष बहुत अधिक श्रेष्ठ है, शनि से संबधित कार्य करें तो अत्यन्त लाभ होगा।

श्रेष्ठ माह — जुलाई, अगस्त और अक्टूबर
भाग्यशाली अंक— ५, ७ और ९
शुभ दिशा —दक्षिण, पश्चिम, उत्तर
भाग्यशाली रंग-- रजत (चांदी सा रंग) तथा गुलाबी।

कन्या (२१ अगस्त से २० सितम्बर तक)

संघर्ष पूर्ण बचपन होते हुए भी आपने अपने जीवन में उन्नति की है, जिससे प्रौढ़ावस्था विशेष सुखकर रहेगा विपरीत परिस्थितियों में भी आप विचलित नहीं होते और विशेषता है, तीव्र बुद्धि और कार्य के लिए अटूट स्थान लेकिन आपका भाग्योदय जन्म स्थान पर सभव नहीं है, अनजान धरती और अनजान लोगों में अपना कार्य ज्यादा अच्छा कर सकते हैं, और यही आपके लिए उचित है, परिवार तथा समाज का भी उतना ही ध्यान रखें, लोग आपसे नाराज जल्दी हो जाते हैं, इस कारण मानसिक अशांति अवश्य रहती है, अपनी वाणी पर थोड़ा नियंत्रण अवश्य रखें, दूसरों की सलाह भी लेते रहें।

वर्ष १९९१

इस वर्ष गुरु गृह वर्ष के प्रारम्भ से ही अनुकूल है, इस कारण प्रयत्नों से कार्य सफल होंगे, और स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी, १५ जून से १६ अगस्त के बीच भवन, प्लाट, अथवा दुकान आदि खरीद की स्थिति बनेगी परिवार की ओर कम ध्यान दे पायेंगे, इसलिए पारिवारिक अशांति बन सकती है, दूरस्थ व्यक्तियों से मार्च में कुछ विशेष सम्पर्क बनेगें, मई माह में कोई बदनामी जैसी घटना हो सकती है, इसलिए जोड़-तोड़ तथा रिश्वत आदि से बचें, नवम्बर दिसम्बर माह जीवन में विशेष परिवर्तन लायेंगे, और नई दिशा बनेगी ब्लड प्रेसर से संबंधित बीमारी का विशेष ध्यान रख।

श्रेष्ठ माह — जुलाई, अक्टूबर, दिसम्बर
भाग्यशाली अंक—४, ६, ७
शुभ दिशा - पूर्व, पश्चिम, तथा उत्तर
भाग्यशाली रंग -- सफेद, लाल, पीला।

तुला (२१ सितम्बर से २० अक्टूबर तक)

आपमें सब प्रकार की योग्यता है लेकिन आप उसका उपयोग पूरी तरह से नहीं कर पाते हैं, प्रत्येक कार्य को मौलिक रूप से सम्पन्न करना आपकी आदत का अंग है, बारीक से बारीक बात भी आपकी नजर से चूकती नहीं लेकिन शारीरिक श्रम आप विशेष रूप से नहीं कर पाते हैं, और मानसिक रूप से ही आप लाभ उठाकर अपना भाग्योदय कर सकते हैं, तर्क की भावना विशेष रूप से है, इस कारण लोगों से झगड़ा भी होता है, हर बात को तर्क की कसौटी पर कसते हैं, यह बात तो उचित नहीं, अपने जीवन में भावुकता को भी स्थान दें, लम्बे समय तक मित्रता आपसे संभव नहीं है, परिवार की ओर भी पूरा ध्यान दें।

वर्ष १९९१

शारीरिक स्वास्थ्य थोड़े-बहुत रूप से पूरे वर्ष गड़बड़ रहेगा उसमें भी सितम्बर तथा अक्टूबर का माह विशेष सावधानी रखने का है, पारिवारिक जीवन में धैर्य रखें, वर्ष का प्रारम्भ भले ही अनुकूल न हो लेकिन १५ मार्च से समय अनुकूल बनेगा, कुछ मित्रों का सहयोग मिलेगा, जून मे सम्पत्ति की खरीद-बिक्री में कुछ धोखा हो सकता है, जुलाई का अन्त आपके लिए नया सौभाग्य लायेगा, उस समय मिले अवसर को हाथ से न जाने दें, आलस्य को त्यागना पड़ेगा, तभी शनि का पूरा लाभ मिल सकेगा, पारिवारिक झगड़े बने रहेंगे, उनसे समझ बूझ से निपटें, तथा परिवार से बटवारे से बचें, ससुराल पक्ष से कुछ सहयोग मिल सकता है।

श्रेष्ठ माह - अप्रैल, अगस्त
भाग्यशाली अंक—४, ६, ९
शुभ दिशा— उत्तर, पश्चिम
भाग्यशाली रंग— पीला, हरा, नारंगी रंग।

वृश्चिक (२१ अक्टूबर से २० नवम्बर तक)

आपके व्यक्तित्व में साहस और कर्मठता है, विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की क्षमता है लेकिन निराशा आपको जल्दी आ जाती है और उस समय आप गलत-सलत किसी भी तरीके से कार्य करना चाहते हैं, आपको अपनी गलतियों का आत्म विश्लेपण करते रहना चाहिए, उतावलापन आवश्यकता से अधिक कहा जा

सकता है, आप जितना प्रयत्न करते है उतनी सफलता नहीं मिलती, लेकिन श्रम तो बार-बार करना पड़ेगा, अपनी बातों को गोपनीय रखना सीखें, इधर की बात उधर कर देने की मनोवृत्ति उचित नहीं है, तीक्ष्ण बुद्धि का सदुपयोग करें ।

वर्ष १९९१

वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा लेकिन वक्री मंगल किसी प्रकार की दुर्घटना अथवा अकस्मात हानि करा सकता है, अतः विशेष सावधानी रखें, २२ मार्च के पश्चात् शनि व गुरु की अनुकूलता से रुके हुए कार्य पूरे होंगे और यही समय है कि आप अपने कार्य का विस्तार करें, पारिवारिक दृष्टि से भी १६ जून का समय श्रेष्ठ है, इसके पश्चात् बच्चों के स्वास्थ्य की दृष्टि से थोड़ी परेशानी रहेगी, कार्य में भी १७ अगस्त तक नये जोखिम नहीं उठाएं, सम्पत्ति में वृद्धि तो होगी लेकिन एकदम धन की आवश्यकता की कमी महसूस करेंगे, इस हेतु अगस्त के अन्त में कुछ मित्रों का सहयोग प्राप्त कर कार्य में बढ़ोत्तरी होगी, लाभ कम हो सकता है, लेकिन भाग्य वृक्ष इस वर्ष थोड़ा और अवश्य ही फुलेगा फलेगा ।

श्रेष्ठ माह—फरवरी, अप्रैल और सितम्बर
भाग्यशाली अंक— २, ४, ७
शुभ दिशा – दक्षिण, पश्चिम
भाग्यशाली रंग - नारंगी तथा चाकलेट कलर

धनु (२१ नवम्बर से २० दिसम्बर तक)

भाग्य, उन्नति और आगे बढ़ने के अवसर जीवन में निरन्तर आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त होते रहते है और जितना कार्य करते है उससे ज्यादा ही सफलता मिलती है, आपको असमर्थता का कारण समय पर सही कदम नहीं उठाना है, जिसके कारण बाद में पछतावा भी बहुत रहता है, हर व्यक्ति पर सहज विश्वास कर लेते है, तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहयोगियों को बहुत अधिक ढील देते है, यह गलत है और इससे आपको नुकसान भी हुआ है, गंभीर आप रह नहीं सकते है लेकिन क्या यह उचित है ? थोड़ा गंभीरता आने से आपका व्यक्तित्व खिल उठेगा, अपने शौक इत्यादि पर भी थोड़ा नियन्त्रण रखें।

वर्ष १९९१

सूर्य इस वर्ष आपका भाग्येश भी है तथा यह प्रबल भी है, इस कारण सूर्य का ध्यान उपासना अवश्य करें, फरवरी के अन्त से नया कार्य प्रारम्भ होगा, मार्च के अन्त से स्वास्थ्य के संबंध में थोड़ी गड़बड़ी होगी, जून तक यह समय विपरीत है, कारोबार की दृष्टि से अप्रैल से जून तक सावधानी से कार्य करें, शनि की साढ़ेसाती का तीसरा चरण आप पर है, इस कारण व्यर्थ की यात्राएं तनाव इत्यादि भी हो सकता है, जुलाई से समय अत्यन्त श्रेष्ठ रहेगा, जिस कार्य में भी हाथ डालेंगे उसमें सफलता प्राप्त होगी, प्रमोशन, कार्य विस्तार, इत्यादि के लिए इस समय को हाथ से न जाने दें, प्रेम संबंधों में विशेष अनुकूलता अवश्य मिलेगी, परिवार में सुख शान्ति आनन्द में वृद्धि होगी ।

श्रेष्ठ माह—मार्च, अगस्त, नवम्बर
भाग्यशाली अंक – ५, ७, ८
शुभ दिशा – उत्तर, पश्चिम तथा दक्षिण
भाग्यशाली रंग — हरा, सफेद तथा भूरा ।

मकर (२१ दिसम्बर से २० जनवरी तक)

अपरिचित व्यक्ति को भी अपना मित्र बना कर उससे काम निकलवाने में आप माहिर हैं, विनोदी स्वभाव तथा दूसरों से सीखने की प्रवृत्ति आप में है लेकिन अपने निर्णय स्वयं लेना सीखे और कार्य को अपने ढंग से पूरा करें, तभी आपके जीवन में मौलिकता आ सकेगी, जीवन निरन्तर संघर्षशील रहता है, धीरे-धीरे कर ही उन्नति प्राप्त होती है लेकिन लक्ष्य आपको ध्यान रहता है इसलिए उन्नति कर पा रहे हैं, सतर्कता जीवन में आवश्यक है, अपने विनोदी स्वभाव को बदलें ।

वर्ष १९९१

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से तथा आर्थिक दृष्टि से भी उत्तम नहीं है, एक कार्य में लाभ तो दूसरे कार्य में हानि हो सकती है, वक्री मंगल पारिवारिक स्वास्थ्य की दृष्टि से बाधाएं देगा, लेकिन अप्रैल से कुछ विशेष सहयोग मिलेगा जिससे रुके हुए कार्य पूरे होंगे, शत्रु आपको बाधाएं दे सकते है, इसलिए हर समय सावधान रहना आवश्यक है, सम्पत्ति, जमीन जायदाद का सौदा बहुत अधिक सोच समझ कर करें, जून से समय और अधिक श्रेष्ठ है लेकिन कार्य योजनाबद्ध रूप से ही करें सट्टे आदि से बिल्कुल दूर रहें, व्यर्थ के विवाद पूरे वर्ष चलते रहेंगे, परिवार की ओर आपको विशेष ध्यान देना पड़ेगा, मतभेद बढ़ सकते है, आठवां गुरु श्रेष्ठ नहीं है ।

श्रेष्ठ माह—अगस्त, सितम्बर और नवम्बर
भाग्यशाली अंक - १, ४, ८
शुभ दिशा - दक्षिण तथा उत्तर
भाग्यशाली रंग — नीला, हलका हरा तथा सुनहरा रंग।

कुम्भ (२१ जनवरी से २० फरवरी तक)

स्वभाव से आप सरल दूसरों को सहयोग देने वाले तथा हर किसी से मधुरता बनाये रखते हैं, लेकिन आपके स्वभाव में संकोच बहुत अधिक है, इस कारण लोग आपका महत्व नहीं समझ पाते हैं, कार्य तो आप करते हैं लेकिन वाह वाही तथा प्रशंसा अन्य लोगों को मिल जाती है, यह तो उचित नहीं है, योजनाएं आप बहुत अधिक सुन्दर बनाते हैं, लेकिन जब कार्य प्रारम्भ होने की बात आती है, तो आपके मन में संकोच, अनिश्चय आ जाता है, कि क्या यह कार्य मैं पूरा कर सकूंगा अथवा नहीं और इसी में आप कार्य नहीं कर पाते, पूरे जोश खरोश के साथ कार्य क्षेत्र में कूद पड़ें तो सफलता आपसे दूर नहीं है, गुस्सा आपको बहुत शीघ्र आता है, इस पर नियंत्रण कर लोगों से न उलझें।

वर्ष १९९१

शनि की साढ़े साती प्रारम्भ हो चुकी है, और शनि आपकी राशि का स्वामी है, इस कारण आपको हानि तो नहीं होगी लेकिन कार्यों को पूरा करने के लिये परिश्रम विशेष करना पड़ेगा, वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ होगा, व्यय पर नियंत्रण रखें जिससे कि फरवरी तथा मार्च में तकलीफ न रहे स्वास्थ्य पूरे वर्ष सामान्य रहेगा २१ अप्रैल से समय विशेष अनुकूल है, उलझे हुए मामले सुलझेंगे, स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी, कुछ कार्य अपने आप पूरे होंगे, लोहे अर्थात मशीनरी से संबंधित कार्य विशेष श्रेष्ठ रहेंगे, आत्म विश्वास बढ़ेगा, प्रेम प्रसंगों से दूर रहें, अक्टूबर के पश्चात् नया कार्य प्रारम्भ न करें।

श्रेष्ठ माह — मई, जुलाई, सितम्बर
भाग्यशाली अंक— ३, ६, ९
शुभ दिशा— दक्षिण तथा पश्चिम
भाग्यशाली रंग— लाल सफेद तथा सलेटी रंग।

मीन (२१ फरवरी से २० मार्च तक)

कूटनीति आपको आती नहीं है, और मूलतः सहृदय सरल तथा स्वच्छ मनोवृत्ति के हैं, मन में किसी प्रकार की गांठ नहीं रखते इसी कारण दूसरे आपको धोखा दे देते हैं, कल्पनाशीलता आपका स्वभाव है, और इच्छाएं बहुत अधिक बढ़ी चढ़ी रहती हैं, और जब इच्छाएं पूरी नहीं होतीं तो निराशा में खो जाते हैं, शारीरिक श्रम बहुत अधिक नहीं कर सकते हैं, लेकिन जो गुण आपमें है उनका उपयोग करते हुए, अपना विकास करें, निराशा जब भी आये तो किसी एक सहारे का ध्यान करें, समाज में आपको आदर शीघ्र प्राप्त होता है, अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें, प्रेम संबंधों में आपको विशेष सफलता मिलती है।

वर्ष १९९१

यह वर्ष आपके लिए उत्तम है, वर्ष का प्रारम्भ कार्य में वृद्धि करेगा, मई से जून के मध्य में आशा से अधिक लाभ प्राप्त होगा, पारिवारिक समस्याएं सितम्बर में बढ़ सकती हैं, अपने स्वास्थ्य का जून तथा जुलाई में विशेष ध्यान रखें, कमाये गये पैसे को दूसरों को उधार देंगे तो वह पैसा वापिस बहुत मुश्किल होगा, सट्टा, जुआ आपके लिए अनुकूल नहीं है, यह वर्ष आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा, सरकारी कर्मचारियों का अपने अधिकारियों से व्यर्थ का विवाद होगा, अक्टूबर से मामले सुलझेंगे, विशेष यात्राएं भी हो सकती हैं।

श्रेष्ठ माह—मई, अक्टूबर और नवम्बर
भाग्यशाली अंक—६, ७, ९
शुभ दिशा—उत्तर, पश्चिम
भाग्यशाली रंग—गुलाबी, चांदी का रंग।

आपके लिए सर्वोत्तम भाग्योदयकारक १९९१ के लिए रत्न

मेष—विद्रम रत्न	सिंह—हिलवान	धनु—सूर्यक
वृषभ—तारक रत्न	कन्या—चेतन	मकर—श्वेतक
मिथुन—नीलोफर	तुला—व्रीडक	कुम्भ—नीलक
कर्क—अर्हत मणि	वृश्चिक—हर्यत	मीन—दीवक

प्रत्येक रत्न का मूल्य - २४०) रु०

कामदेव-कामेश्वरी साधना

आकर्षण ही तो व्यक्तित्व की शोभा है, यह आवश्यक नहीं, कि जो सुन्दर हो, वह आकर्षक हो ही, आकर्षण तो दूसरों को प्रभावित कर अपने वश में करने की कला है और ऐसे ही व्यक्ति सफलता प्राप्त करते हैं, आप अपनी ओर से हजार प्रयास करें लेकिन यदि सामने वाला व्यक्ति चाहे वह आपका मित्र हो, उच्च अधिकारी हो अथवा कोई स्त्री, जब तक आप उसे प्रभावित नहीं कर देते, अपने आकर्षण के घेरे में बांध नहीं लेते, तब तक सफलता नहीं मिल सकती।

कामदेव–कामेश्वरी

जीवन में कुछ करने के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है, जोड़-तोड़ करनी पड़ती है, क्योंकि सफलता ऐसी वस्तु नहीं है, जो कहीं रखी है और उसको उठा कर जेब में रख दी।

कामदेव-कामेश्वरी साधना का संबंध केवल स्त्री पुरुष आकर्षण संबंधों से ही नहीं है, यह तो व्यक्तित्व में ताजगी, छटा तथा बहार लाने की साधना है, अपने भीतर आनन्द का प्याला भरने की साधना है।

आकर्षण साधना कैसे करें ?

शुक्रवार को प्रातः अपने पूजा स्थान में एक कलश पानी भर कर रखें, किसी भी प्रकार के २४ बड़े पत्ते पहले से लाकर रखें, सामने कामदेव-कामेश्वरी का मन्त्र सिद्ध **'अनंग यन्त्र'** स्थापित करें तथा एक पात्र में इस यन्त्र को रख कर अष्टगंध से पूजा करें तथा मन ही मन कामेश्वरी देवी का ध्यान करें कि—

'त्रिनेत्री, सिंहासन पर स्थित, पीताम्बर धारण किये हुए, सहस्र सूर्यों के समान तेज वाली, जो विष्णु और महेश की भी प्रिया है, उस कामेश्वरी देवी का मैं हृदय से ध्यान करता हूं।

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

मन्त्र

॥ ॐ नमो कामदेवाय महाप्रभाय
ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा ॥

उसके पश्चात् चित्र में दिया गया यन्त्र २४ पत्तों पर किसी कलम से कुंकुम द्वारा लिखें, २४ पत्तों पर यन्त्र लिखने के पश्चात् प्रत्येक यन्त्र की पुष्प की पंखुड़ियों तथा चावल द्वारा पूजा करें, इसके पश्चात् कामदेव-कामेश्वरी मन्त्र की **'कामेश्वरी माला'** से २१ माला मन्त्र जप करें, पहले शुक्रवार को पत्तों पर लिखे यन्त्रों को थोड़ा मिश्री, घी तथा गेहूं के आटे में बांध कर नदी में बहा दें, उस दिन साधक एक समय भोजन करें, रोटी तथा हरी सब्जी लें, पृथ्वी पर शयन करें तथा ब्रह्मचर्य का पालन करें, इसी प्रकार दूसरे तथा तीसरे शुक्रवार को भी प्रयोग की सभी क्रियाएं दोहराएं, तीन शुक्रवार की साधना के पश्चात् यन्त्र को एक सुरक्षित आले में रख दें और उस पर सफेद वस्त्र का पर्दा डाल दें तथा प्रतिदिन धूप अवश्य देते रहें।

तीन शुक्रवार की इस साधना से स्त्री हो अथवा पुरुष उसकी न केवल काम तथा सौभाग्य सम्बन्धी कामनाएं पूरी होती हैं बल्कि जीवन में प्रसन्नता आनन्द की लहर बनने लगती है, साधक शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से श्रेष्ठता अनुभव करता है तथा दूसरों से जो कार्य कराना चाहता है, अपने आकर्षण के प्रभाव से सम्पन्न करा सकता है। ●

जब शत्रु बाधा प्रबल हो जाय, चिन्ताएं बढ़ जांय, बाधाएं बहुत अधिक सताने लगें, तो आखिर क्या करें ?

तंत्र साफल्य साधना प्रयोग

तांत्रिक प्रयोग तभी सम्पन्न करना चाहिए जब सामान्य रूप से समस्या का समाधान ही नहीं बन रहा हो, शत्रुओं के कारण कार्य पूर्ति में बार-बार बाधाएं आ रही हों, शत्रु आप पर हावी होने लगें, बिना बात आपको उलझना पड़े, मुकदमे और कोर्ट कचहरी के चक्कर बढ़ने लगें, हर समय मन में शंका आशंका बनी रहे तो विशेष तंत्र का सहारा ले कर इस प्रकार की शत्रु बाधा, का पूर्ण समाधान कर लेना ही आवश्यक है।

तंत्र साफल्य प्रयोग

तंत्र साधनाएं पूर्ण दृढ़ता के साथ वीर भाव से, दृढ़ निश्चय के साथ सम्पन्न करनी चाहिए, इस विशिष्ट प्रयोग में **'पांच तांत्रोक्त तंत्र साफल्य नारियल'** के अतिरिक्त **'१०८ मायाबीज'** तथा **'काली हकीक माला'** आवश्यक है, अर्द्धरात्रि के पश्चात् यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, ध्यान रहे कि साधना काल के दौरान किसी प्रकार का विघ्न न हो, और बीच में उठना न पड़े, इस हेतु आवश्यक पूजन सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर लें।

साधना प्रयोग प्रारम्भ करने से पहले साधक स्नान कर, लाल वस्त्र धारण कर सीधा अपने पूजा स्थान पर जाकर बैठें, अपने सामने एक लाल कपड़ा बिछा कर उस पर काजल से पांच घेरे बनाएं, इन काले घेरों में राई तथा सरसों की ढेरी बना कर उन पर पांच नारियल रखें, इनके सामने चित्र में दिया गया शत्रु स्तम्भन यन्त्र काजल से ही लिखें, पांचों नारियल के सामने पांच तेल के दीपक जलाएं, दीपक की ज्योति नारियल की ओर होनी चाहिए।

ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	क्लीं	क्लीं

अब साधक स्वयं लाल पुष्पों की माला धारण करें तथा अपने दायीं ओर धूप तथा घी का दीपक जला दें, साधना स्थान या पूजा कक्ष का दरवाजा बन्द रखें, वीर भाव से बैठ कर तंत्र साफल्य मन्त्र का उच्चारण प्रारम्भ करें, वीर भाव का तात्पर्य है, कि जिस प्रकार मुसलमान लोग नमाज पढ़ते समय घुटने मोड़ कर बैठते हैं उस रूप में बैठें, बायां हाथ मुट्ठी बांध कर तना हुआ हो, और यह मुट्ठी घुटने पर रखें, आंखें सामने दीपकों पर फैली हों जैसे आप अपने शत्रुओं पर क्रोध कर तमतमा रहे हों।

तंत्र साफल्य मन्त्र का जप प्रारम्भ करें, प्रत्येक मन्त्र का उच्चारण जोर से बोलते हुए, अपने हाथ में मायाबीज लेकर करें, तथा इस मायाबीज को अपने पीछे फेंकते जांय।

तंत्र साफल्य मंत्र

।। ऐं ह्रीं ऐं क्लीं क्लीं हुं हुं क्रीं क्रीं फट् ।।

इस प्रकार १०८ बीज पीछे फेंकने के पश्चात् जोर से फूंक मारते हुए पांचों दीपक एक ही फूंक में बुझा दें, ध्यान रहे कि अपने दाईं ओर रखा घी का दीपक न बुझे।

अब शान्त मुद्रा में बैठ कर काली हकीक माला से तंत्र साफल्य मन्त्र का पांच माला जप करें और जब मन्त्र जप पूर्ण हो जाय तो अपने गुरु तथा इष्ट का ध्यान कर आरती करें तथा सारी सामग्री अर्थात् तांत्रोक्त नारियल, मायाबीज, राई, सरसों उसी लाल कपड़े में बांध कर घर के बाहर अथवा किसी स्थान पर खड्डा खोद कर गाड़ दें और पीछे मुड़ कर न देखें।

यह तंत्र साधना का एक ऐसा अचूक प्रयोग है कि यदि सही रूप से सम्पन्न किया जाय तो एक महीने के भीतर-भीतर प्रभाव स्पष्टतः दिखाई देने लगता है, आपका शत्रु आपके सामने एक प्रकार से हाथ जोड़ने लगता है, मुकदमे में तो इस प्रयोग से विशेष अनुकूलता प्राप्त होती है, चिन्ताएं शान्त हो जाती हैं। ●

स्वर्णाकर्षण गुटिका प्रयोग

व्यापार वृद्धि, कर्ज मुक्ति, आर्थिक लाभ की

अद्भुत साधना

यह प्रयोग जो कि लक्ष्मी से संबंधित है, कोई भी साधक आर्थिक लाभ, स्थाई सम्पत्ति, नौकरी लगने, प्रमोशन, या व्यापार करने, ऋण मुक्ति, व्यापार में बिक्री की बढ़ोत्तरी तथा गृहस्थ सुख, वैभव-विलास प्राप्त करने हेतु सम्पन्न कर सकता है, आवश्यकता केवल शुद्ध रूप से साधना करने की है।

यह साधना साधक किसी भी बुधवार को शुभ नक्षत्र में प्रारम्भ कर सकता है, साधना के लिए किसी पंडित को बुलाने की आवश्यकता नहीं है, स्वयं प्रयोग करने तथा मन्त्र जप करने से सफलता शीघ्र प्राप्त होती है, साधना प्रारम्भ करते समय गुरु का ध्यान कर आशीर्वाद प्राप्त कर जिस विशेष उद्देश्य हेतु प्रयोग सम्पन्न कर रहे हैं, उस उद्देश्य की पूर्ति करने का संकल्प अपने दाएं हाथ में जल लेकर अवश्य ही करना चाहिए।

लक्ष्मी केवल धन की देवी ही नहीं है, अपितु यह तो सुख-सौभाग्य, कामना पूर्ति, यश वृद्धि की देवी है।

साधना प्रयोग

स्नान कर साधक पीला वस्त्र पहिन कर सामने लक्ष्मी चित्र स्थापित करें, कुंकुम, पुष्प, नैवेद्य चढ़ाएं तथा सामने किसी भी प्रकार के तेल का दीपक लगा लेना चाहिए, दीपक के पास (दीपक के किसी भी तरफ) **'स्वर्णाकर्षण गुटिका'** स्थापित कर देनी चाहिए, यह काले रंग की छोटी सी गोली के समान होती है और धूप में इस गोली को देखें तो काले रंग की गोली होते हुए भी पीली, हरी या लाल झांई सी दिखाई देती है, यह गुटिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है और इस पर कई प्रयोग सिद्ध किये जाते हैं।

इस स्वर्णाकर्षण गुटिका को सामने रख कर निम्न मंत्र की 'कमलगट्टे की माला' **से ११ मालाएं फेरने से ही लक्ष्मी साधना सम्पन्न हो जाती है, और शीघ्र ही वह इसके आश्चर्यजनक परिणामों से प्रभावित होता है।**

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं ऐं अष्टलक्ष्म्यै धन धान्य समृद्धि देहि देहि ऋणमोचन व्यापारोन्नति प्राप्त्यर्थं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै नमः ॥

साधना के बाद प्रातःकाल उस गुटिका को अपनी तिजोरी या पूजा स्थान में रख देनी चाहिए, इसके बाद नित्य इसकी पूजा आवश्यक नहीं होती, ऐसा करने पर यह गुटिका विशेष प्रभावयुक्त होकर साधक को मनोवांछित फल देने में सहायक होती रहती है।

भविष्य में यदि साधक चाहे तो इस गुटिका पर अन्य प्रयोग भी सम्पन्न कर सकता है, ऐसा करने पर पहले किये गये अनुष्ठान में कोई न्यूनता नहीं आती, इस प्रकार यह गुटिका १०८ प्रकार की साधनाओं के लिए उपयुक्त मानी गई है। ●

नेपाल यात्रा : बस व्यवस्था

दिसम्बर ९० के अंक में नेपाल यात्रा के बारे में पूरा विवरण दिया था, पर प्रसन्नता है कि "दिल्ली सिद्धाश्रम साधक परिवार" ने बस व्यवस्था में साधकों के लिए काफी छूट देकर अनुकूल व्यवस्था की है।

जनसाधारण साधकों के लिए दं अतिरिक्त (विशेष छूट के साथ) नेपाल यात्रा के लिए बसों की व्यवस्था की है, जो ८ फरवरी को बिड़ला मन्दिर दिल्ली से रवाना होंगी और लखनऊ, गोरखपुर होते हुए काठमाण्डू पहुंचेंगी, इसी प्रकार ये बसें १४ फरवरी को वापिस काठमाण्डू से रवाना हो कर १६ फरवरी को दिल्ली पहुंचेंगी।

इसका किराया (आने और जाने का) विशेष छूट के साथ मात्र ६००)रु० है, जो साधक इस छूट युक्त बस में जाना चाहें वे अपने बारे में सूचना निम्न पते पर दे कर अपनी आरक्षण व्यवस्था करा लें। पता है—

अशोक गोयल, ९६-९७ जी प्वाइन्ट, नई दिल्ली, फोन : ३५३३८६ (दिल्ली)।

परमिट बनाने के लिए आपका नाम, आपके पिता का नाम, आपकी उम्र तथा आपका स्थायी पता पहले से ही सूचित होना जरूरी है।

६ अक्टूबर १९९०

ज्योतिष और प्राचीन विद्याओं की शोध एवं उनके पुनरुद्धार के लिए की गई सेवाओं को ध्यान में रखते हुए भारत के उपराष्ट्रपति महोदय **माननीय श्री शंकर दयाल जी शर्मा** ने उपराष्ट्रपति भवन में **पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली** को आमंत्रित कर उन्हें "समाज शिरोमणि" उपाधि से अलंकृत किया।

यह हम सब के लिए अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।

दूरदर्शन प्रस्तुति

२० दिसम्बर १९९० को रात्रि के ७.५५ पर दूरदर्शन दिल्ली ने पूज्य गुरुदेव **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली** से ज्योतिष एवं प्राच्य विद्याओं से सम्बन्धित १५ मिनट की भेंटवार्ता प्रस्तुत की, जिसे सम्पूर्ण भारतवर्ष में देखा, और इस संबंध में हमारे कार्यालय में हजारों पत्र प्राप्त हुए।

सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि पहली बार ज्योतिष को उचित स्थान दिलाने में पूज्य गुरुदेव ने अद्वितीय कार्य किया है।

रथ यात्रा

दिसम्बर ९० में **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** का रथ "निखिल ज्योति" ले कर पूरे हरियाणा प्रदेश में घूमा, और जहां-जहां भी गया वहां साधकों ने अत्यन्त उत्साह के साथ रथ का स्वागत किया, गुरुदेव के दर्शन किये और आध्यात्मिक वातावरण फैलाने में सहयोग दिया।

जनवरी में यह रथ उत्तर प्रदेश के कुछ स्थानों में विचरण करता हुआ, नेपाल का भ्रमण करेगा और पूरे नेपाल प्रदेश में आध्यात्मिक चेतना फैलाने में सहयोग दे रहा है।

जल्दी ही रथ यात्रा कार्यक्रम उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में सम्पन्न होने जा रहा है।

काठमाण्डू शिविर

हिन्दू धर्म प्रधान नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में इस वर्ष शिवरात्रि के अवसर पर भव्य शिविर का आयोजन हो रहा है, जिसका पूरा विवरण दिसम्बर के अंक में प्रकाशित किया जा चुका है।

नेपाल के महाराजा और सौभाग्यवती महारानी ने भी इस अद्वितीय समारोह में आने की मौखिक स्वीकृति प्रदान की है, आयोजकों के अनुसार इस शिविर में नेपाल के प्रधानमन्त्री और अन्य मन्त्री भी भाग लेंगे, ऐसी पूरी-पूरी संभावना है।

भारतवर्ष से अधिक से अधिक साधक इस शिविर में भाग लें, इसके लिए उन्हें अभी से तैयारियां कर लेनी चाहिए, शिवरात्रि का पर्व, भगवान पशुपतिनाथ के अद्वितीय शिवलिंग के दर्शन, वागमती नदी में पुण्यदायक स्नान, बूढ़े नीलकंठ नामक स्थान पर प्राण महोत्सव और दक्षिण काली जैसे अद्वितीय स्थान पर तंत्र साधना तथा साथ ही साथ उच्चकोटि के तांत्रिकों, सन्यासियों, योगियों और साधुओं के दर्शन जैसी विशेषताएं एक साथ इस शिविर में प्राप्त होंगी, एक प्रकार से देखा जाय तो यह प्राचीनता और आधुनिकता का अद्वितीय संगम है, नेपाल का "नया बाजार" जहां विश्व की आधुनिकतम वस्तुओं से सजा हुआ बाजार है तो नेपाल के मूल निवासी, वहां की संस्कृति, सभ्यता और प्राचीन वातावरण का सुखद संयोग भी।

वास्तव में ही यह शिविर अपने आप में अद्वितीय होगा, और प्रत्येक साधक की इस बहाने इस बार जहां विदेश यात्रा होगी वहीं शिविर का आनन्द भी।

मारीसस यज्ञ समारोह

८ मई १९९१ को मारीसस में पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में भव्य १००८ कुण्डीय यज्ञ की व्यवस्था हो रही है और 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' कुछ ऐसी व्यवस्था कर रहा है जिससे भारतवर्ष के अधिक से अधिक साधक इसमें भाग ले सकें और मारीसस की भव्य संस्कृति के दर्शन कर सकें। ★

(पृष्ठ संख्या ६० का शेष भाग)

सर्व रोग पीड़ा हरण प्रयोग	४८	आदिशक्ति महायन्त्र	१५०)रु०
		स्फटिक माला	८०) –
कामदेव-कामेश्वरी साधना	५४	अनंग यन्त्र	३००) –
		कामेश्वरी माला	३००) –
तन्त्र साफल्य प्रयोग	५५	५ तांत्रोक्त तन्त्र साफल्य नारियल	१०५) –
		१०८ मायाबीज	१०१) –
		काली हकीक माला	११०) –
स्वर्णाकर्षण प्रयोग	५६	स्वर्णाकर्षण गुटिका	३००) –
		कमलगट्टा माला	६०) –

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधनाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि पूर्ण विधि-विधान सहित साधना सम्पन्न की जाय, इसके लिए यह जरूरी है कि साधना से सम्बन्धित प्रत्येक सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए, जो कि पूर्ण रूप से प्रामाणिक, शुद्ध, चैतन्य, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

पत्रिका कार्यालय ने, अपने पाठकों की विशेष सुविधा के लिए ऐसी सामग्री की व्यवस्था कर, उचित मूल्य पर भिजवाने की व्यवस्था की है।

प्रस्तुत अंक में जो साधनाएं प्रकाशित की गई हैं, उनसे सम्बन्धित सामग्री निम्नवत् है, आप केवल विवरण लिख कर पत्र द्वारा हमें सूचित कर दें, यह सामग्री डाक व्यय सहित वी०पी० द्वारा आपको भिजवा देंगे, जो कि सुरक्षित रूप से, उचित समय पर प्राप्त कर, आप साधना सम्पन्न कर सकें।

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
महागणपति साधना	५	गणपति प्रतिमा	१५०)रु०
		गणपति यन्त्र	१२०)रु०
		माला	६०)रु०
महाविद्या साधना—	१७	—	—
काली साधना	१८	महाकाली यन्त्र	२४०)रु०
		,, चित्र	१०)रु०
		काली हकीक माला	११०)रु०
तारा साधना	१९	तारा यन्त्र	२५०)रु०
		,, चित्र	१०)रु०
		स्फटिक माला	८०)रु०
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना	२०	त्रिपुर सुन्दरी महायन्त्र	२१०)रु०
		सफेद हकीक माला	८०)रु०
भुवनेश्वरी साधना	२०	भुवनेश्वरी यन्त्र	१५०)रु०
		कामेश्वरी माला	१५०)रु०
छिन्नमस्ता साधना	२१	छिन्नमस्ता यन्त्र	८०)रु०
		रक्ताभ माला	१२०)रु०
त्रिपुर भैरवी साधना	२१	भैरव मूर्ति	६०)रु०
		त्रिपुर भैरवी यन्त्र	१२०)रु०
		विजय माला	११०)रु०
धूमावती साधना	२२	धूमावती यन्त्र	२४०)रु०
		काली हकीक माला	११०)रु०
कमला साधना	२३	कमला महालक्ष्मी यन्त्र	१५०)रु०
		कमलगट्टा माला	६०) –
बगलामुखी साधना	२३	बगलामुखी यन्त्र	२४०) –
		हरिद्रा माला	१२०) –
मातंगी साधना	२४	मातंगी यन्त्र	१५०) –
		सिद्धि माला	१२०) –

कुबेर साधना	२९	कुबेर यन्त्र कमलगट्टा माला	२४०)रु० ६०) –
षष्ठी देवी साधना	३२	षष्ठी देवी की मूर्ति सालिग्राम प्रतिमा	१२०) – ६०) –
पंचदेव साधना—	३३	—	—
सूर्य साधना	३५	सूर्य यन्त्र मणिमाला चक्षुष्मति यन्त्र बत्तीसा यन्त्र	१५०) – १२०) – १२१) – ४५) –
श्री विष्णु साधना	३७	सालिग्राम लिंग विष्णु यन्त्र आजानुलम्बिनी वैजयन्ती माला १०८ कमलबीज लक्ष्मी यन्त्र-चित्र कमलगट्टा माला	६०) – २४०) – १५०) – १०१) – १५०) – ६०) –
शिव साधना	३९	शिव यन्त्र शिवलिंग रुद्राक्ष माला (छोटे दाने की) (बड़े दाने की)	२४०) – १५०) – ३००) – १२०) –
दुर्गा साधना	४१	शक्ति का धातु यन्त्र (दुर्गा यन्त्र) स्फटिक माला	१५०) – ८०) –
कार्तिकेय साधना	४३	कार्तिकेय यन्त्र स्फटिक माला	१४०) – ८०) –
अचूक साबर साधनाएं—	४५	—	—
वशीकरण प्रयोग	४६	हत्थाजोड़ी हकीक माला	३००) – ८०) –
भूत-प्रेत उतारने का प्रयोग	४७	हनुमान की चौकी हकीक माला	७५) – ८०) –
आर्थिक उन्नति का प्रयोग	४७	सुलेमानी हकीक स्फटिक माला	६०) – ८०) –
शत्रु स्तम्भन प्रयोग	४७	७ गोमती चक्र हकीक माला	६०) – ८०) –
गृहस्थ सुख प्रयोग—१	४८	गृह बाधा हरण यन्त्र पलान्जा काष्ट	१५०) – ४५) –
प्रयोग—२	४८	२ गोमती चक्र स्फटिक माला	२०) – ८०) –

(शेष पृष्ठ संख्या ५८ पर देखें)

होली के अवसर पर - दुर्लभ, तीव्र प्रभावकारी साधना

कुछ मुहूर्त, सिद्ध मुहूर्त होते हैं, उसके लिए नक्षत्र इत्यादि देखने की आवश्यकता ही नहीं रहती, नवरात्रि के चारों कल्प, दीपावली तथा होली का दिन साधनाओं के लिए सिद्ध मुहूर्त हैं, इस रात्रि को मन्त्रात्मक एवं तन्त्रात्मक साधनाएं सम्पन्न की जा सकती हैं।

साधना का फल साधक को प्रत्यक्ष तत्काल दिखाई देता है।

सर्व कार्य सिद्धि साधना प्रयोग

यह साधना एक विशेष प्रकार की तांत्रिक साधना है, जिसका विधान होली की रात्रि को ही सम्पन्न करने का है, यह साधना रात्रि को सूर्यास्त के पश्चात् तथा सूर्योदय से पहले सम्पन्न की जानी आवश्यक है, यह साधना सर्व सिद्धिदायक साधना तो है ही, इसके साथ ही भैरव की भी साधना है, किसी प्रकार की शत्रु बाधा हो, शारीरिक पीड़ा हो, भूत-प्रेत भय हो, तो यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना प्रयोग

साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करें, अपने दोनों ओर तेल के दीपक जलाएं सामने गोल वृत्ताकार रूप में चावल की आठ ढेरियां बनाएं और उस पर **'आठ सिद्धिफल'** स्थापित कर कुंकुम, केसर द्वारा नृसिंह को आठ शक्तियां — **भास्वती, भास्करी, चिन्ता, द्युति, उन्मीलिनी, रमा, कान्ति एवं रुचि,** का ध्यान करें, प्रत्येक पर पुष्प अर्पित करें, इसके साथ एक अलग कोने में तिल की ढेरी बना कर उस पर एक बड़ी सुपारी रख कर भैरव का ध्यान कर पूजन करें।

जहां नृसिंह की पूजा होती है, वहां लक्ष्मी की पूजा अवश्य होती है, अब अपने सामने मध्य में **'नृसिंह यंत्र'** स्थापित करें तथा लक्ष्मी साधना हेतु **'लघु लक्ष्मी यंत्र तथा चित्र'** स्थापित करें, और नृसिंह यन्त्र पर रक्त सिन्दूर चढ़ा कर चारों ओर एक घेरा बांधें तथा पहले से बना कर रखी हुई खीर का प्रसाद कटोरा भर कर रख दें।

तत्पश्चात् सर्वप्रथम लक्ष्मी का ध्यान कर प्रार्थना करें और जो कार्य सबसे पहले सम्पन्न करना चाहते हैं अथवा जो बाधा सबसे अधिक तीव्र है और निवारण चाहते है वह बाधा कागज पर कलम से लिख कर, एक धागे से बांध कर नृसिंह यन्त्र के नीचे रख दें, और फिर दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि—

'मैं शक्ति और अभय प्राप्त करने हेतु अपनी अमुक बाधा निवारण हेतु यह साधना सम्पन्न करने हेतु मन्त्र जप करता हूं।"

अपने दायीं ओर एक लोहे का चिमटा भी रखें, उस पर भी सिन्दूर चढ़ाएं, तथा नीचे लिखे मंत्र का २१ बार मंत्र जप कर दाएं हाथ से वह चिमटा जमीन पर २१ बार बजाएं, पूरे आत्मविश्वास के साथ एकाग्र होकर मन्त्र जप करें, यदि किसी प्रकार की आवाज हो तो ध्यान न दें।

मन्त्र— ।। ॐ क्षों नमः भगवते तेजस्तेजसे स्वयंभुवे नृसिंहाय पुरुषाय ॐ क्षों ।।

इस प्रकार पांच बार यह प्रयोग करना है. पूरे प्रयोग के पश्चात् समस्या या बाधा निवारण लिखे हुए कागज को उसी स्थान पर दीपक की लौ से जला कर उसकी राख अर्थात् भस्म से स्वयं के तिलक कर लें, इसके पश्चात् हाथ जोड़ कर लक्ष्मी की आरती सम्पन्न कर खीर का प्रसाद उसी स्थान पर बैठ कर ग्रहण करें।

यह एक सिद्ध प्रयोग है और यदि साधक की भावना प्रबल है तो शीघ्र प्रभाव देखने को मिलता है।

साधना के पश्चात् आठों सिद्धिफल अन्य सामग्री के साथ जहां होलिका दहन हो उस अग्नि में डाल दें, यदि यह संभव न हो तो घर के बाहर खड्डा खोद कर गाड़ दें तथा पीछे मुड़ कर न देखें, केवल नृसिंह यन्त्र तथा लघु लक्ष्मी यन्त्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें, जब भी रात्रि को उचित मन, भाव, चिन्ता हो तो नृसिंह मन्त्र का २१ बार जप अवश्य कर लें ●